

॥ नमः श्रीपाश्र्पनाथाय ॥

डॉ. लि. मा. जी

स्वर्गीय कविवर भूधरदास विरचित

आर्श्वं पुराण

(जैन सिद्धान्त गभित सुन्दर काव्य ग्रंथ)

भारतीय मूर्ति-दर्शन केन्द्र
जयपुर

प्रकाशक—

वीर पुस्तक भंडार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर-३

Rs 5-00



हरिश्चन्द्र डॉ. लि. मा.

प्रकाशक *

वीर पुस्तक भंडाल
मनिहारो का रास्ता,
जयपुर-३



मूल्य
₹ ५०
५



मुद्रक &
श्री वीर प्रेस,

कविवर भूधरदासजी

इस पाश्र्वपुराण के रचयिता कविवर भूधरदासजी है। अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में कविवर ने आगरा में इसकी रचना की। कवि आगरा के रहने वाले खडेलवाल दि० जैन थे। इनका समय विक्रम सं० १७५० से १८०६ माना जाता है। पाश्र्वपुराण की रचना से पूर्व आध्यात्मिक एवं उपदेशी एकसौ से अधिक छन्द उनमें लिखे, जिन्हें जयपुर नरेश-मवाई जयसिंहजी के सूवेदार (सूबा के हाकिम) श्री गुलाबचंदजी के कहने से एकत्र कर पीप कृष्णा त्रयोदशी रविवार वि० सं० १७८१ में पूर्ण किया। शतक में १०६ छन्द हैं। अन्तिम छन्द में अगना परिचय देते हुए उनमें लिखा है—

आगरे में बाल-चुटि भूधर खडेलवाल बालक के ख्याल सौं कवित कर जानै है
ऐसे ही करत मयी जैमिह सवाई सूबा-हाकिम गुलाबचंद आये तिहि थानै है।
हरीमिह साह के मुवण धर्मरागा तर, तिनके कहे सौ जोरि कीनी एक ठानै है।
फिरि फिरि प्रेरे मेरे आलस की अतमयी, उनकी सहाय यह मेरी मन मानै है।

दोहा-सतरह सैं इक्यासिया, पोह पाख तमलीन।

तिथि तेरस रविवार की, सतक ममापत कीन।

शतक के पश्चात् पाश्र्वपुराण की रचना हुई जो आपाठ गुक्ला पंचमी वि० सं० १७८६ में पूर्ण हुई। इन दो ग्रंथों के अतिरिक्त कवि के बनाये लगभग ७० पद भी उपलब्ध हैं जो विभिन्न राग रागिनियों में गाये जा सकते हैं। खोज करने पर संभवतः और भी पद मिलें। पर जितने उपलब्ध हैं वे बड़े ही महत्वपूर्ण और हृदय को छूनेवाले हैं। कवि के पद, छन्द आदि एक से एक बढ़कर हैं और सांसारिक प्राणी को झूठ और देने वाले हैं। ममार की अमारता, भोगों की नि सारता और मानव जीवन की उपादेयता पर कवि ने खूब हो लिखा है। इतने प्रभावक है शतक के छन्द एवं भजन कि जो काय लम्बे चौड़े अनेक उपदेशों और शास्त्रों के अध्ययन से नहीं हो सकता—वह पद्य की दो लाइना में हो जाता है। बड़ा आनन्द आना है इनके पढ़ने मात्र से ही।

पार्श्वपुराण मे भी कवि ने कमाल कर दिया है । सचमुच पार्श्व पुराण जैन काव्य-साहित्य मे एक उच्च कोटिका काव्य-ग्रथ है । इसमे भगवान पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र है-पर साथ ही जैन सिद्धान्त का सार भी इसमे कवि ने भर दिया है । पच कल्याणक वर्णन के साथ तत्त्वचर्चा और आध्यात्मिक उपदेशो से सरावोर है-यह ग्रथ । शब्द विन्यास, भावगाभीर्य और प्रसादादिगुण स्थान स्थान पर देखने को मिलते है इस छोटे से पुराण मे । विभिन्न छन्दो मे निबद्ध यह ग्रथ कवि की छन्द-शास्त्र की जानकारी प्रकट करता है । यद्यपि कवि ने अपनी लघुता प्रकट करते हुए लिखा है कि—

अमर कोष नहि पढ्यो, मैं न कहि पिगल पेख्यो ।

काव्य कठ नहि करो, सारसुत सो नहि सीख्यो ।

अच्छर-साध-समास-ज्ञान वजित बुधि हीनी ।

धर्म-भावना हेत-किमपि भाषा यह कीनी ।

किन्तु वे एक विद्वान् थे—साहित्य, दशन और सिद्धान्त के अच्छे जानकार । यह पार्श्वपुराण किसी का अनुवाद नही यह कवि की एक स्वतंत्र मौलिक रचना है । जैन काव्यो में ऐसा अन्य कोई चरित्र ग्रथ नही है । कवि का प्रभाव इसीसे स्पष्ट है कि उनका पार्श्वपुराण, जैन शतक एव पद संग्रह का समाज मे काफी प्रचार है और बडे चाव से लोग इन्हे पढते है । इसीलिए इनकी रचनाओ के बार २ प्रकाशन की आवश्यकता पड जाती है । प्रस्तुत सस्करण भी ग्रथ उपलब्ध नही होने से छपाया गया है । उनके भजन तो सकडो प्रकाशनो मे मिलेगे । कोई भजन संग्रह इनके पद बिना अधूरा ही समझा जावेगा ।

अब तक के प्रकाशित पार्श्वपुराणो के सस्करणो मे यह सस्करण विशेष महत्व रखता है । इसमे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये गये हैं- धारण को समझने के लिए और भी शब्दार्थ अपेक्षित ने दिये हैं-वे भी बडे उपयोगी हैं । इम शब्दाथ

श्री गुलाबचंदजी जैन दशनाचाय, एम ए

भँवरलाल न्यायतीथ

शुद्धि-पत्रक

प्रस्तुत पाश्र्वपुराण मे प्रारभ के १६ पृष्ठो के शब्दार्थ नही छप सके हैं । अत निम्न प्रकार पाठ शुद्धि करके शब्दार्थ यथास्थान पढने का कष्ट करें ।

शुद्धाशुद्धि

पृष्ठ सख्या	पक्ति सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	१५	॥१॥	॥३॥
२	२	॥१॥	॥४॥
१२	२२	भूताचलपथ	भूताचलपवत
२७	२१	शास्त्र भडार	शास्त्र भडार
२८	२०	द्रोणाचार्य जैमे	चारसौ (या सख्या विशेष) ग्रामो मेंप्रधान

पृष्ठो के अनुसार शब्दार्थ निम्न प्रकार हैं—

पृष्ठ १ भुवनतिलक=तीनलोक मे महान, दिवायर=सूर्य, गुणसायर=गुणों के समुद्र, नाग=हाथी, मयमत=मतवाला, उच्छेपन=उखाडनेवाले, रमाकत=अनत चतुष्टय रूप लक्ष्मी के पति, बोध=ज्ञान मार=कामदेव, मातग=हाथी, मृगेवर=मिह, मुखमयक=मुखरूपी चन्द्रमा, रक=गरीब, रजनीपति=चन्द्रमा, पन्नग=सांप ।

पृष्ठ २ शक=हृद्र, चक्र=चक्रवर्ती, भवत्रलधि=ससार-समुद्र, तरड=नाव, त्रिपधर=सांप, डकै=काटे, व्याल=सांप, नेरे=नजदोक, वादि=अथ, उर बोप=हृदय रूपी खजाना, रक-घन=गरीब के घन के समान, हेठ=हीन धिगतविरोध=गोत्र को दूर करनेवाला ।

पृष्ठ ३ मनुज-रमन, मृगि-पाचाय, मय-रुगो, मम-परगण, निरवै-उठाये, विमस्त-विना (वानिन्ता) मोय-रम ।

पृष्ठ ४ पुष्पे र मोम-निरको न दुपाये, देहमे-रुगो-रुगो-पर, छिद्र-रुग, पुत्रग-माय, प्रायति-साधि, रमाया-रुग, विगार्-वागारन, दीपन-रोगो ।

पृष्ठ ५ मयदा-पारग करक, यतवर-वत पुत्र (रमयान) यमन-रम ।

पृष्ठ ६ नरगाय-राजा, युति-मुनि, पुषि-पृथो, मनराज-मगपर बाग्धि-ममुद्र, धगम-धगा, मतिमाजन-मुद्रि-वा ।

पृष्ठ ७ उनहार-ममान, दन-परो, मर-रग (करो की केमर) मनो-मुद्र मथान-पाकार कगा-प्रत्यचा (दोगी), गात-नेने टग, द्यग्जन-यागपागो, जनपुम-मागपुन, पुग्पाति-नगरो रो पति मैन-मैन (पवत), तु ग-ऊ गो, चौगय-गोगा, मोपुर-दग्वाग (रथो-माना) ।

पृष्ठ ८ गुरे-गुरे (रुद्र), पटतर-उपमा, जेठो-वडा, मतिरुठा-मदबुद्धि, जमधि-समुद्र, नारजा (नार्या)-रुगो, मनिराम-मुद्र, देव-पादत, वध-देही, मज-मयै, लोहारवच-चोटेरा वनर, पाटा-ननवार, रई-महित करे, देह-नरोर ।

पृष्ठ ९ इष्ट-मला, नह-प्रेम, सेत (श्वेत)-सफेद, ससै-मदेह, राय-गजा बाहि-गस मे, महनिम-रातदिन, सोमप्रकृति-मरल स्वभाव, भूपण-भूपित-माभूषण पहने हुए, निहार-देव, विह्वल-ग्याकुल ।

पृष्ठ १० प्रवेव-पधिवेका, मदनमत्त-गाम म मतवाले, जरो जगो-जलो जलो (नष्ट हो), यार-मिथ, रवि-मूय, नीर-गानी, परसै-साश करे, प्रबुज-कमल, धाल-भौरा, मविचार-मूय, कल-चैन, विसेल-विशेष व्याधि-राग, सि-द्या-वनन-शिक्षारूप वचन तुल-तुल्य (बराबर), जेठ-गति का वडा भाई (ज्यष्ठ)

पृष्ठ ११ प्रपमस-प्रप्रशसनीय (बुराई योग्य), सतभाव-शोघ्र निवर्ष-वर्षे, परपच-मायाचार, माधज-भाई की स्त्री, वन-वरनी-वन की हथिनी, रज-रज यमान द्या, नजो-ताट डाला, पि-पु-शु ।

पृष्ठ १२ विप्र=ग्राहण, दुज=द्विज (ग्राहण), निग्रहनाग=पजा का पात्र, करुणा=दया, गच्छ=जा, सयान=चतुर, रोद=दुःख, रिम=गुस्ता, खर=गधा, पीर=पीडा, बीघी=गली, हवारी=तिरस्कार, पुरवासी=नागरिक, बिलसत=गोवत, घवन=मुष ।

पृष्ठ १३ अघोमुत्त=घोधेमुत्त, पान=पीना, ऊरधमुखी=ऊचे मुखवाले, अघोर=अघोर=, सर्वमक्षी), दुविधि दया=स्वदया, परदया । परचं=परिचय, नख=नाखून, प्रनम्यो=नमस्कार किया, कनी=साप, सहोदर=माई, सल=दुष्ट, वरज्यो=मना किया दर्पण=काच, छार=राग ।

पृष्ठ १४ टेक=प्रादत, सुवास=सुगन्धित, एकाकी=प्रवेसा, बिनयो=नम्रीभूत हुआ, सरन वायक=सरल वचन, सुखमास=मुख से बोले, चीनयो=बिनती की मलेखमा=श्लेष्म (खासी या कफ), पिमुन=मूर्ख, पियूप=प्रमृत. दुर्जनहिततह=दुष्ट की प्रीति रूपी वृक्ष ।

पृष्ठ १५ मूसन=घोरी करना या ठगना, कर प्रायो=पकडा गया, इन्द्रायन=गडदूबा (कडवे फल की बेल), बिनट्टी=नष्ट हुई, कमलपत्र परसग=कमल के पत्ते की सगति करके, दिट्टी=दिखाई पढी, मुक्ताफल=भोती ।

पृष्ठ १६ पत्र पुज=पत्तों का ढेर, सिकताथल=वालुका प्रदेश, तुग=ऊचे, तमाल=ताड के वृक्ष, कपि=वन्दर, सतग=ऊचे, कुरग=हूरिण, मद-जीवन-भरना=मद जल का भरना, तम वरन=कामा, जगम=चलता फिरता, मुसलोपम=मूसल के समान, धवल=सफेद, गढ=गाल, वह-कावो=भील या कीचड, अग लेय=शरीर के लपेटले ।



— कविवर भूधरदासजी विरचित —

प्राश्वी-पुराणा

श्रीपाश्वनाथजी की स्तुति ।

दोहा ।

भोह-महा-तम-दलन दिन, तपलक्ष्मी भरतार ।
ते पारस परमेस मुझ, होहु सुमतिदातार ॥ १ ॥
वामानंदन-कलपतरु, जयो जगत-हितकार ।
मुनिजन जाकी आस करि, जाचें सिवफल सार ॥२॥

छप्पय ।

भुवनतिलक भगवंत, सतजन-कमल-दिवायर ।
जगतजतु-बन्धव अनंत, अनुपम गुणसायर ॥
राग-नाग-मयमंत, -दंत-उच्छेपन बलि अति ।
रमाकत अरहंत, अतुल जसवन्त जगतपति ॥
महिमा महत मुनिजन जपत, आदि अत सबको सरन ।
सो परमदेव मुझ मन बसो, पासनाह मंगलकरन ॥३॥
विमल-बोध-दातार, विश्व-विद्या-परमेसर ।
लछ्मीकमलकुमार, मार-मातंग-मृगेसर ॥
मुखमयक अवलोकि, रंक रजनीपति लाजें ।
नाम-मंत्र-परताप, पाप पक्षग डरि भाजें ॥

जय अस्वसेन-कुल-चन्द्र जिन, सक्र-चक्र-पूजित-चरन ।
 तारो अपार भव-जलधितै, तुम तरंड तारन तरन ॥४॥
 बाघ सिंह बम हीहि, विषम विषधर नहि डंकै ।
 भूत प्रेत बेताल, ब्याल बैरी मन सकै ॥
 साकिनि डाकिनि अगनि, चोर नहि भय उपजावै ।
 रोग सोग सब जाहि, विपत नेरे नहि आवै ॥
 धीपासंदेवके पदकमल, हिये धरत निज एकमन ।
 छूटे अनादि बधन बधे, कौन कथा विनसै विघन ॥५॥
 चहुंगति भ्रमत अनादि, वादि बहुकाल गमायो ।
 रही सदा सुख-आस, प्यास, जल कहूं न पायो ॥
 सुख-करता जिनराज, आज लौ हिये न आये ।
 अब मुझ माथे भाग, चरन-चिंतामनि पाये ॥
 राखौं सभाल उर कोषमै, नहि बिसरौं पल रक-धन ।
 परमावचोर टालन निमित्त, करौं पासंजिनगुनकथन ॥

चौपई [१५ मात्रा]

बन्दौ तीर्थकर चौबीस । बन्दौ सिद्ध बसं जगसीस ।
 बन्दौ आचारज उवभाय । बन्दौ परम साधु के पाय । ७।
 ये ही पद पाचौं परमेठ । ये ही साच और सब हेठ ।
 ये ही मगल पूज्य अतीव । ये ही उत्तम सरन सदीव । ८।
 बंदौ जिनवानी मन सोध । आदि अत जो विगत-विरोध ।
 सकलवस्तु वरसावनहार । भ्रमविषहरन ओषधी सार । ९।

दोहा ।

बरतो जग जयवत नित, जिनप्रवचन अमलान ।
लोक-महलमे जगमगै, मानिक-दीप समान ॥१०॥
हरो भरम दारिद्र दुख, भरो हमारी आस ।
करो सारदा लक्ष्मी, मुझ उर अबुज बास ॥११॥

चीपई ।

बन्दी वृषभसेन गनराज । गुरु गौतम भवजलधिजहाज ।
कुंदकुंद-मुनि-प्रमुख सुपंथ । जे सब आचारज निरप्रंथ ॥१२॥
जैनतत्त्व के जाननहार । भये जयार्थ कथक उदार ।
तिनके चरनकमल कर जोरि । करौ प्रनाम मान-मद-छोरि ॥

दोहा ।

सकल पूज्य-पद पूजकै, अलपबुद्धि अनुसार ।
भाषा पार्सपुरान की, करौ स्वपरहितकार ॥१४॥

चीपई

जिनगुनकथन अगमविस्तार । बुधिवल कौन लहै कवि पार ।
जिनसेनादिक सूरि महत । बरनन करि पायो नहि अंत ॥१५॥
तो अब अलपमति जन और । कौन गिनतिमें तिनकी दौर ।
जो बहुभार गयंव न बहै । सो क्यो दोन ससक निरबहै ॥१६॥

दोहा

कह जाने ते यो कहैं, हम कछु बरन्यो नाहि ।
जे कह जाने ही नहीं, ते अब कहा कहाहि ॥१७॥
नभ विलस्त नापै नहीं, चुलू न सागर तोय ।
भीजिनगुनसंख्या सुजस, त्यो कवि करै न कोय ॥१८॥

चौपई

पै यह उत्तम नर अवतार । जिनचरचा बिन अफल अ...
 सुनि पुरान जो घुमै न सीस । सो थोथे नारेल सरीस । १६।
 जिनचरित्र जे सुनै न कान । देहगेह के छिद्र समान ।
 जामुख जैनकथा नहिं होय । जीभ भुजगनिको बिल सोय । २०।
 या प्रकार यह उद्यम जोग । कहत पुरानन पडित लोग ।
 जिनगुनगान सुधारसन्याय । सेवत अलप जनम-जुर-जाय । २१।

घनाक्षरी ।

जौ लीं कवि काव्यहेत आगम के अच्छर कौ,
 अरथ विचारे तौलौ सिद्धि सुभ ध्यान की ।
 और वह पाठ जब भूपर प्रगट होय,
 पढ़े सुनै जोव तिनहै प्रापति ह्वै ग्यानकी ॥
 ऐसै निज-परकौ विचार हित हेतु हम,
 उद्यम कियो है नहिं बान अभिमानकी ।
 ग्यानअस चाखा भई ऐसी अभिलाखा अब,
 करु जोरि भाखा जिन पारसपुरानकी ॥ २२ ॥
 आगे जैन ग्रन्थनि के करता कवोन्द्र भये,
 करी देवभासा महाबुद्धिफल लीनो है ।
 अच्छर-मिताई तथा अर्थ की गभीरताई,
 पदललितताई जहा आई रीति तीनो है ॥
 काल के प्रभाव तिन ग्रन्थनिके पाठी अब,
 दीमत अलप ऐसो, आयी दिन हीनो है ।

ताते इह समे जोग पढे बालबुद्धि लोग ।

पारसपुरानपाठ भाषाबद्ध कीनो है ॥२३॥

बोहा ।

सक्तिभक्तिबल कविनपे, जिनगुन बरने जाहि ॥

में भव बरनों भक्तिवस, सक्ति मूल मुक्त नाहि ॥२४॥

वरनों पूरवकथितक्रम, ग्रंथअर्थ अवधारि ।

सुगमरूप सद्धेपसौ, सुनी सबहि तरनारि ॥२५॥

चीपई ।

मगधदेस देसनि-परधान । राजगृही नगरी सुभयान् ॥

राज करे श्रेनिक भूपाल । नीतवंत नृप पुन्यविसाल ॥२६॥

छायक-सम्यकदरसनसार । रूप सील सबगुनआधार ॥

तिनके घर अतेवर घना । पटरानी रानी खेलना ॥२७॥

जाके गुन बरनत बहु भाय । बिरिया लगे कथा बढि जाय ॥

एक दिना निज सभा नरेस । निवसे जैसे सुरग-सुरेस ॥२८॥

रोमाञ्चित बनपालक ताम । आय राय प्रति कियो प्रनाम ॥

छह रितुके फल फूल अन्नप । आगे धरे अन्नपम रूप ॥२९॥

हाथ जोरि बिनवे बनपाल । विपुलाचल पर्वत के भाल ॥

बद्ध मान तीर्थकर आय । आये राजन-पुन्यप्रताप ॥३०॥

महिमा कछु बरनी नहि जाय । इन्द्रादिक सेवे सब पाय ॥

सभोसरनसपतिकी कथा । मोपे कही जाय किमि तथा ॥३१॥

माली बचन सुने सुखदाय । हरष्यो राजा अंग न माय ॥

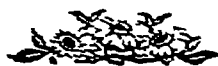
दीने भूषन वसन उत्तार । बनमाली लीने सिरधार ॥३२॥

सात पैड़ गिरिसम्मुख जाय । कियो परोच्छ्र विनय नरराय ॥
 आनंदमेरि नगरमें बई । सबहीकों दरसनरुचि भई ॥ ३३ ॥
 चर्यो संग पुरजन समुदाय । वदे वर्द्धमान जिनराय ॥
 लोकोत्तर लछमी अवलोक । गये सकल नूपतिके सोक ॥ ३४ ॥
 धुति आरभ करी बहुभाय । बार बार भुवि सीस नवाय ॥
 गौतम गुरु पूजे कर जोरि । नरकोठें बैठ्यौ मद छोरि ॥ ३५ ॥
 कियो प्रश्न श्रेणिक बड भूप । प्रभु पारस निजकथा अनूप ॥
 जाके सुनत पाप छय होय । कहिये देव कृपाकरि सोय ॥ ३६ ॥
 तब गनघर बोले हितकाज । जोग प्रस्तन कीनो नरराज ॥
 सुन पुनीत पारसजिनकथा । सफल होय मानुषभव जथा ॥ ३७ ॥

दोहा ।

इहि विधि जो मगधेस प्रति, कह्यौ चरित गनराज ॥
 ताही कम आये कहत, आचारज परकाज ॥ ३८ ॥
 तिनहीके अनुसार अब, कहूं किमपि विस्तार ॥
 जैनकथा कल्पित नहीं, यह जानो निरधार ॥ ३९ ॥
 जैनधचनधारिधि अगम, पानी अर्थ अनूप ॥
 भक्तिभाजन भर भर लिये, यह जिनआगमरूप ॥ ४० ॥

इति पीठिका ।



पहला अधिकार

चीपई ।

जबूदीप द्विपे इह सार । सुरज मंडल की उनहार ॥
 मध्य सुमेरुर्काणिकाभास । बने छेत्र दल दीरघ जास ॥४१॥
 तारागन मकरद मनोग । सुरनरसग भ्रमरकुलजोग ॥
 लवनसमुद्र सरोवरथान । दीप किधौ यह कमल महान ॥४२॥
 लच्छ महा जोजन विस्तार । बसै विविध-रचना-आधार ॥
 दच्छिन भरत धनुष-सठान ॥ पर्वत फणच नदीजुग बान ॥४३॥
 मानों सागरप्रति अनुमानि । तानत तीर छार-जल जानि ॥
 ऐसी भांति बिराजत खेत । छहो-खंड-मंडित छवि देत ॥४४॥
 पांच मलेच्छ बसै तामाँह । धर्म कर्म कछु जानै नाहि ॥
 उत्तम आरजखंडमभार । देस सुरम्य बसै मनहार ॥४५॥
 जनकुल जहां रहै बहु भांति । पास पास सोहै पुर-पांति ॥
 सरवर नदी सैल उद्यान । वन उपवनसौं सोभामान ॥४६॥
 तहां नगर पोदनपुर नाम । मानों भूमितिलक अभिराम ॥
 देवलीककी उपमा धरै । सब ही विष देखत मनहरै ॥४७॥

दोहा ।

तुंग कोट खाई सजल, सघन बाग गृह-पांति ॥
 चौपथ चौक बजारसौं, सोहै पुर बहुभांति ॥४८॥
 ठाम ठाम गोपुर लसे, बापी सरवर कूप ॥
 किधौ स्वर्ग ने भूमिकौं, भेजी भेंट अनूप ॥४९॥

चौपई ।

जैनी प्रजा जहां परवीन । बसै दानपूजाव्रतलीन ।
 जैनभवन ऊंचे अति बने । सिखर घुजासौं सोभित घने ॥५०॥
 इहि विधि पुरसोभा अधिकार । वरनन करत लगै बहुबार ।
 राज करै राजा अरविंद । सोहै मानो स्वर्ग सुरिंद ॥५१॥
 पालं प्रजा कुमति जिन दली । नीतिबेलमडित भुजबली ।
 दयाधाम सज्जन गंभीर । गुनरागो त्यागी रनधीर ॥५२॥
 तिस भूपतिकं विप्र सुजान । विस्वभूति मत्री बुधिवान ।
 ताकं तिया अतृदरि सती । रूपसील-गुन-लच्छनवती ॥५३॥
 दोय पुत्र तिनकं अवतरे । पापपुन्य की पटतर धरे ।
 जेठो नदन कमठ कुपूत । दूजो पुत्र सुधी मरुभूत ॥५४॥

दोहा ।

जेठो मतिहेठो कुटिल, लघुसुत सरल सुभाय ।
 विष अमृत उपजे जुगल, विप्र जलधिके जाय ॥ ५५ ॥
 बड़े पुत्रने भारजा, व्याही बरुना नाम ।
 लघुने बरी विसुन्दरी, रूपवती अभिराम ॥ ५६ ॥

चौपई ।

यों सुख निवसै बाधव दोय । निज निज टेव न टारै कोय ।
 षक्र चाल विषधर नहिं तजै । हस वक्रता भूल न भजै ॥५७॥

दोहा ।

उपजे एकहि गभंसौं, सज्जन दुर्जन येह ।
 लोह-कबच रच्छा करै, खाडो खंडै देह ॥५८॥

चोपई ।

अति सज्जन मरुभूति-कुमार । नीति-शास्त्रको जाननहार ॥
सबकों इष्ट सकलगुनगेह । राजा प्रजा करै सब नेह ॥५६॥
एक दिना भूपति-मंत्रीस । सेत बाल देख्यौ निज सीस ॥
उपज्यो विप्र-हियै वंराग । जान्यौ सब जग अथिर सुहाग ॥६०

दोहा ।

जरा मौतको लघु बहिन, यामें ससे नाहिं ॥
तौ भी सुहित न चितवै, बडी भूल जगमाहिं ॥६१॥

चोपई ।

यह विचार मंत्री मनमाहिं । निज सुत सौंपि रायकी बाहिं ॥
सुगुरु-साखि जिन-चारित लियौ । वनोवास ग्रातमहित कियौ ।
अब मरुभूति विप्र सुख करै । अहनिन नीतिपंथ पग धरै ॥
'राजा प्रीति करै बहु भाय । सोमप्रकृति सबकों सुखदाय ॥६३
एक समय आपन अरविद । मंत्री सेनासहित नरिद ॥
'राय वजूवीरजपर चढ़े । क्रोधभाव उरमें अति बढे ॥६४
पीछे कमठ निरकुश होय । लग्यौ अनीति करन सठ सोय ॥
जो मन आवैं सो हठ गहै । 'मैं राजा' सबसौं इम कहै ॥६५
एक दिना निजभ्रातानारि । भूषन-भूषितरूप निहारि ॥
'रागअध अति विह्वल भयौ । तीच्छन कामताप उर तयौ ॥६६
महा मलिन उर बसै कुभाव । दुर्गतिगामी जीव सुभाव ॥
पुत्री सम लघुभ्रातानारि । तहां कुदिष्ट धरी अविचारि ॥६७

दोहा ।

पाप कर्मको डर नहीं, नहीं लोककी लाज ॥
 कामी जनकी रीति यह, धिक तिस जन्म अकाल ॥६८॥
 कामी काल अकालमें, हो हैं अघ अवेव ॥
 मदनमत्त मदमत्त सम, जरो जरो यह टेव ॥६९॥
 पिता नीर परसै नहीं, दूर रहै रवि यार ॥
 ता अंबुजमें मूढ अलि, उरन्नि मरै अविचार ॥७०॥
 त्यों ही कुविसनरत पुरुष, होय अबस अविवेक ॥
 हितअनहित सोचै नहीं, हिये विसनकी टेक ॥७१॥

चौपड :

बनमें सघन लतागृह जहां । गयो कमठ कामातुर तहा ॥
 बड़ी वेदना कल नहिं परे । छिन छिन काम-विया दुख करे ॥
 कमठ सखा कलहंस विसेल । पूछत भयो दुखी तिह देख ॥
 कौन व्याधि उपजी तुम अंग । अतिव्याकुल दोखत सरबग ॥
 तव तिन लाज छोरि सब सही । मनकी बात मित्रसो कही ॥
 सुनि कलहंस कथा विपरीति । सिच्छावचन कहे करि प्रीति ॥
 अति अनोग कारज इह बीर । सो तुम चित्यो साहस-धीर ॥
 परनारोमम पाप न आन । परभवदुख इह भव जस-हान ॥७५॥
 इस ही बंझासो अघ भरे । रावण आदि नरकमें परे ॥
 जगमें छेठ पितासमतूल । बात कहत लाजे नहिं नूल ॥७६॥
 तात यह हठ नूल न करी । सुहित सीख मेरो मन धरी ॥
 लोकरनिद कारज यह जान । धर्मनिद निहचं उर आन ॥७७॥

दीहा ।

यों कलहमें अनेक विघ्न, दई मील्ल सुखदेन ॥
 ते सब कमठकुर्माजप्रति, भये विकल हिनबन ॥ ७८ ॥
 आयुहीन नर को जया, श्रोपधि नगं न लेम ॥
 र्यों ही रागो पुरुष प्रति, वृथा धरम-उपदेश ॥ ७९ ॥
 बोली नर कामो कमठ, मृनो मित्र निरधार ॥
 जो नहि मिले विमुंदरी, तो मुझ मरन विचार ॥ ८० ॥
 बेस कमठकी अधिक हूठ, कृपति करी कलहमें ॥
 जाय कहे ता नागिमी, झूठ बचन अपमंस ॥ ८१ ॥

प्रतिहृष्ट ।

मूल विमुंदरी आज कमठ बनमें वृक्षी ।
 नू ताकी मृष नेहू होय जिहि विधि मुखी ॥
 मृनते ही सतभाव गई बनमें सही ।
 निजमें कर परपंच कमठ कपटो सही ॥ ८२ ॥

दीहा ।

झुलबल कए भीतर सई, बनितो गई अजात ।
 राग बचन भांते विविध, दुराचारको खान ॥ ८३ ॥

खान छंद ।

गलपानी कमठ कलकी । अघसी मनमा नहि सुकी ।
 भावज बन-करनी रंजो । निज मीयनरोवर भंजो ॥ ८४ ॥
 रिपू कीत विजयजग पायो । अरविद नृपनि घर आयो ॥
 जे बंध कमठने कीने । राजा सब ते मृन माने ॥ ८५ ॥

मंत्री मरुभूति बुलायौ । तार्कीं सब भेद मुनायो ॥
 कहु विप्र सुधी क्या कीजै । क्या दंड इसँ अब दीजै ॥८६॥
 दुज कहे सरल परिनामो । अपराध छिमा कर स्वामी ॥
 जो एक दोष सुन लीजै । तार्कीं प्रभु दंड न दीजै ॥ ८७ ॥
 तव भूप कहै सुन भाई । जो निग्रहजोग अन्याई ॥
 तातै करुना किम होहै । यह न्याय नृपति नहिँ सोहै ॥८८॥
 तातै गृह गच्छ सयाने । मत खेद हियेँ कछु आने ॥
 ऐसेँ कह विप्र पठायौ । तिस पोछेँ कमठ बुलायौ ॥८९॥
 अति निंदो नीच कुकर्मी । जानो निरघार अत्रमी ॥
 राजा अति ही रिस कीनी । सिर मुंड दंड बहु दीनी ॥९०॥
 मुखकं कालोस लगाई । खर रोप्यौ पीर न आई ॥
 फिर सारे नगर फिरायौ । प्रति वीथी डोल बजायौ ॥९१॥
 इस भाति कमठकी ख्वारी । देखेँ सब ही नरनारी ॥
 पुरवासी लोक धिकारै । बालक मिलि कंकर मारै ॥९२॥
 यो दंड दियो अति भारी । फिर दीनीं देश निकारी ॥
 जो दीरघ पाप कमाये । ततकाल उदै वहु आये ॥ ९३ ॥

दोहा ।

इहि विधि फूल्यौ पाप तरु, देख्यौ सब ससार ॥

आगे फल है नरक फल, धिक दुबिसन असार ॥ ९४ ॥

चोपई ।

महादंड भूपति जब दयौ । कमठ कुसील दुखी अति भयौ ॥

बिलखत बदन गयौ चल तहाँ । भूताचलपर्वतुहै जहा ॥९५॥

रहै तहां तपसी-समुदाय । ग्यान बिना सब सोखैं काय ॥
 केई रहे अधोमुख भूल । धूंआं पान करे अधमूल ॥६६॥
 केई ऊरधमुखी अधोर । देखैं सब गगनकी ओर ॥
 केई निवसैं ऊरध बाहि । दुविध दयासों परचै नाहि ॥६७॥
 केई पच अगनि भूल सहै । केई सदा मौनमुख रहै ॥
 केई बंठे भसम चढाय । केई मृगछाला तन लाय ॥६८॥
 नख बढाय केई दुख भरें । केई जटा-भार सिर धरें ॥
 यों अग्यान तपलीन भलीन । करे खेद परमारथ हीन ॥६९॥
 तिनमे एक तापसीनाथ । प्रनम्यौ ताहि धरे सिर हाथ ॥
 तिन असीस दे आदर कियौ । दिच्छादान कमठ तहँ लियौ १००
 करन लग्यौ तब कायकलेस । उर वैराग विवेक न लेस ॥
 ठाढो भयो सिला कर लिये । किधौं फनी फन ऊँचो किये १०१
 मंत्री बंधवकी सुधि पाय । राजासों विनयो इमि आय ॥
 भूताचलपर्वतकी ओर । भ्राता कमठ करे तप घोर ॥१०२॥
 जो नरनायक आग्या होय । देखूं जाय सहोदर सोय ॥
 पूछैं नृपति कौन तप करे । भो प्रभु तापसके द्रत धरे ॥१०३॥
 एक बार मिलि आऊँ ताहि । राय कहै मत्री मत जाहि ॥
 खलसों मिलै कहा सुख होय । विषघर भेंटे लाभ न कोय ॥१०४
 बरजौ रह्यो न बारबार । महा सरलचित्त विप्रकुमार ॥
 भ्रातमोहबस उद्यम कियौ । कोमल होत सुजनकी हियौ १०५
 दोहा
 दुर्जनदूखित संतकौ, सरल सुभाव न जाय ।
 दर्पणकी छवि छारसौं, अधिकहि उज्ज्वल थाय ॥१०६॥

चौपई ।

फेरि दुष्ट भीलनतें मिल्यो । भयो चोर घर मूसन^१ हिल्यो ॥
पाप करत कर आयो^२ जबै । बांधि बुरी विधि मारयो तबै ॥

दोहा ।

जैसी करनी आचरै, तैसो हो फल होय ।

इन्द्रायनकी बेलिकै, आँख न लागै कोय ॥११८॥

चौपई ।

एक दिना अरविद नरिंद । पूछे कर जुग जोरि मुनिंद ॥
भो प्रभु मुझ मंत्री मरुभूत । क्यो नहिं आयो ब्राह्मणपूत ॥११९॥
यह सुनि अवधिवत मुनिराय । सब बिरतंत कह्यो समुझाय ॥
राजा मन अति भयो मलीन । हा मंत्री सज्जनता लीन ॥१२०॥
बरजत गयो दुष्टके पास । कुमरन लह्यो सह्यो बहु आस ॥
होनहार सोई विधि होय । ताहि मिटाय सकं नहिं कोय ॥१२१॥
यो विचारि मन सोक मिटाय । साधु पूजि घर आये राय ॥
यह सुनि दुष्टसग परिहरो । सुखदायक सतसंगति करो ॥१२२॥

छप्पय ।

तपे तवापर आय, स्वातिजलबूंद विन्दु^५ ।

कमलपत्रपरसंग^६, वही मोतीसम दिदु^६ ॥

सागरसीप समीप, भयो मुक्ताफल^७ सोई ।

सगतको परभाव, प्रगट देखो सब कोई ॥

यो नीचसंगते नीचफल, मध्यमते मध्यम सहो ॥

उत्तमसंजोगते जीवको, उत्तमफलप्रापति कही ॥१२३॥

इति श्रीपाश्र्वपुराणभाषाया मरुभूतिभववर्णन

१. मूसन = चोरीकरना या ठगना २. कर आयो
३. बिलीनी - नेह ४. कमलपत्रपरसंग = कमर

दूसरा अधिकार

दोहा ।

अस्वसेन-कुल-चन्द्रमा, बामा-उर-अवतार ।

बदौ पारसपदकमल, भविजनअलि आधार ॥१॥

पद्धरी छंद

इसभाति तजे मरुभूति प्रान । अब सुनो कथा आगे सुजान ॥
 अतिसघन सल्लकी बन विशाल । जह तरुवर तुंग तमाल ताल ॥
 बहु बेलजाल छाये निकुंज । कहिं सूखि परे तिन पत्रपु ज ॥
 कहिं सिकताथल कहिं सुद्ध भूमि । कहिं कपि तरुडारन रहे भूमि
 कहिं सजलथान कहिं गिरि उतग । कहिं रोछ रोज विचरै कुरंग ॥
 तिस थानक आरतध्यानदोष । उपज्यौ वनहस्ती वजूघोष ॥
 अति उन्नत मस्तकसिखर जास । मद-जीवनभरना भरहिं तास
 दीसै तमवरन विसाल देह । मनौ गिरिजंगम दूसरो येह ॥५॥
 जाको तन नख शिख छोमवत । मुसलोपम दीरघ धवल दत्त ॥
 मदभीजे भलकै जुगल गुंड । छिन छिनसौं फेरै सुंड दड ॥६॥
 जो बरुना नामै कमठ नार । पोदनपुर निवसै निराधार ॥
 सो मरि तिहि हथिनो हुई आन । तिससग रमै नित रजमान ॥
 कबही बहु खडै बिरछबेलि । कबही रजरंजित करहिं केलि ।
 कबही सरवरमै तिरहिं जाय । कबही जल छिरकै मत्ताकाय ॥
 कबही मुख पंकज तोरि देय । कबही दह-कादो अंग लेय ॥६॥
 भीलका बीचड

दोहा ।

यो मुछद क्रीडा करे, बरुना-हुथिनी सत्थ ।

बन निवसे बारण^१ बली, मारण-सील समत्थ^२ ॥ १० ॥

चौपई ।

एक दिवस अरविद नरेस । ज्यो विमानमै स्वर्ग सुरेस ॥

यो निजमहलन निवसे भूप । देख्यो बादल एक अनूप ॥११॥

तुंग^३ सिखर अति उज्जल महा । मानो मंदिर ही बनि रहा ॥

नर^४बे निरखि चितवें ताम । ऐसो ही करिये जिनघाम ॥१२॥

लिखन हेत कागद कर लयो । इतने सो सरूप मिटि गयो ॥

तब भूपति उरकरे विचार । जगतरौति सब अथिर असार ॥१३॥

तन धन राज-संपदा सब । यो ही विनसि जायगी अब ॥

मोहमत्त प्राणी हठ गहै । अथिर वस्तुको थिर सरदहै ॥१४॥

जो पररूप पदारथजाति । ते अपने माने दिनराति ॥

भोगभाव सब दुखके हेत । तिनहीको जाने सुखखेत ॥१५॥

ज्यों माचै^५-कोदो^६ परभाव । जाय जथारथ दिष्टि स्वभाव ॥

समझे पुरुष औरकी और । त्यों ही जगजीवनकी दौर ॥१६॥

पुत्र कलत्र^७ मित्रजन जेह । स्वारथ लगे सगे सब एह ॥

सुपनसरूप सकल संभोग । निजहितहेत विलब न जोग ॥१७॥

यो भूपति वैराग विचारि । डारी पोठ परिग्रह भारि ॥

राजसमाज पुत्रको दियो । सुगुरुसाखि नृप चारित लियो ॥१८॥

घरी दिगंबरमुद्रा सार । करे उचित आहार विहार ॥

१. हाथी २. समर्थ ३. ऊचा ४ राजा ५ उम्मत ६ एकघान ७ स्त्री ।

बारहविध दुद्धर तपलीन । छहोकाय पोहर^१ परधीन ॥१६॥
 एकसमय अरविद मुनीस । सारथवाहीके सग ईस ॥
 सिखर सुमेरु बदनाहेत । चले ईरज्यापथ पग देत ॥२०॥
 गये सल्लकी बनमै लघ । तहा जाय उत्तरचो सब सघ ॥
 निजसिञ्जाय^२ समय मन लाय । प्रतिमाजोग दियो मुनिराय ॥२१॥
 तावत अज्रघोष गजराज । आयौ कोपि कालसम गाज ।
 सकलसघमै खलबल परी । भाजे लोग कीकि^३ धुनि करी ॥२२॥
 गजके धकं परचो जो कोय । सो प्राणी पहुच्यौ परलोय ॥
 मारे तुरग^४ तिसाये गैल । मारे मारगहारे बँल ॥ २३ ॥
 मारे भूखे करहा^५ खरे । मारे जन भाजे भय भरे ॥
 इहिविध हाथी करत सँघार । मुनि सनमुख आयौ किलकार ॥२४॥
 अति विकराल रोषविष भरौ । मुनि मारनकौ उद्यम करौ ॥
 साधु सुदर्शन मेरु समान । सिरीवच्छ लच्छन उर थान ॥२५॥
 सो सुचिन्ह गज देख्यौ जाम । जाती-सुमरन उपज्यौ ताम ॥
 ततखिन सांत भयौ गजईस । मुनिके चरन धरचौ निज सीस ।
 तब मुनि चवै^६ मधुर धुनि महा । रे गयद^७ यह कीनों कहा ॥
 हिंसा करम परम अघहेत । हिंसा दुरगतिके दुखदेत ॥२७॥
 हिंसासौ भमिये ससार । हिंसा निजपरकौ दुखकार ॥
 ते ये जीव विधु से आय । पातकते न डरचौ गजराय ॥२८॥
 देखि देखि अघके फल कौन । लई विप्रते कुजर^८-जौन ॥

१ पीर हरने वाले । २ त्वाच्याय ३ किलकारी ४ घोडा ५ ऊट ६ कहै
 ७ हाथी ८ हाथी ९ योनि ।

तू मंत्री मरुभूति सुजान । मै अरविंद क्यो न पहिचान ॥२६॥
 धर्मविमुख आरतके दोष । पसु-परजाय लई दुखकोष ॥
 अब गजपति ये भाव निवारि । धर्मभावना हिरदं धारि ॥३०॥
 सम्यकदरसन-पूरब जान । पालि अणुव्रत जब लौं प्राण ॥
 सुन करिंद^१ उर कोमल थयौ । किये पाप निज निदत भयौ ॥३१॥

दोहा ।

फिर गुरु-पाँयन सिर धरचौ, धर्म गहन उर हेत ॥
 तब सत्यारथ धर्मविधि, कही साधु समचेत ॥३२॥

चौपई ।

सुन हस्ती सासन अनुकूल । सकल धरमकौ दसन मूल ॥
 सब गुनरत्नकोष यह जान । मुक्ति-धौरहर^२-धुर^३-सोपान^४ ॥३३॥
 तातं यह सबहीकौ सार । या बिन सब आचरन असार ॥
 जो सरदहै औरकी और । सो मिथ्यातभावकी दौर ॥३४॥
 दोष अठारह-वरजित देव । दुविधसंगत्यागी^५ गुरु एव ।
 हिसावरजित धरम अनूप । यह सरधा समकितकौ रूप ॥३५॥

दोहा ।

सकाविक दूषन बिना, आठो अग समेत ।
 मोख-बिरछ-अंकूर यह, उपजै भवि-उर-खेत ॥३६॥

चौपई ।

अंगहीन दरसन जगमाहिं । भवदुखमेटन समरथ नाहिं ॥
 अछररऊन^६ मत्र जो होय । विषवाधा मेटे नहिं सोय ॥३७॥

१ हाथी २. महल ३ ध्रुव ४. सीढी ५. परिग्रह त्यागी ६. कम ।

परमेष्ठि परमपद ध्यावे । ऐसै गज काल गमावै ॥
 एकै दिन अधिक तिसायी । तब वेगवती तट आयी ॥४७॥
 जल पीवन उद्यम कीधी । कादो द्रह कुंजर बीधी ॥
 निहचं जब मरन विचारौ । सन्यास सुधी^१ तब धारौ ॥४८॥
 सो कमठ कलंकी सूवो । ता बन कुरकट अहि हूवो ॥
 तिन आय डस्यौ गज ग्याता । यह बंर महादुखदाता ॥४९॥

दोहा ।

मरन करघौ गजराज तब, राखे निर्मल भाव ।

सुरग बारवै सुर भयौ, देखौ धर्मप्रभाव ॥५०॥

चीपई ।

तहां स्वयप्रभ नाम विमान । ससिप्रभदेव भयो तिहि थान ॥
 अरुधि जोड सब जान्यौ देव । व्रतकौ फल पूरबभव भेव ॥५१॥
 जिनसासन ससौ बहुभाय । धर्मविषै दिढता मन लाय ॥
 सवा सासते श्रीजिनधाम । पूजा करी तहां अभिराम ॥५२॥
 महामेरु नन्दीसुर आदि । पूजे तहा जिनबिब अनादि ।
 कल्यानक-पूजा बिस्तरै । पुन्य भंडार देव यो भरै ॥५३॥
 सोलह सागर आयु प्रमान । साढ़े तीन हाथ तन जान ।
 सोलह सहस वर्ष जब जाहि । असन^२-चाह उपजे उरमाहि ॥५४॥
 अनुपम अमृतमय आहार । मनसौं भुजं देवकुमार ।
 आठदुगुन^३ पख बीतै जास । तब सो लेय सुगंध उसास ॥५५॥
 * अरुधि चतुर्थ अरुनि परजत । यही विक्रियाबल विरतत ।

अवधिछेत्र जावत परमान । होय विक्रिया तावत मान ॥५६॥

दोहा ।

वदनचद्र^१ उपमा धरै, विकसित वारिज^२ नैन ।
 अग अग भूषन लसै, सब बानक^३ सुखदैन ॥५७॥
 सुन्दर तन सुन्दर वचन, सुन्दर स्वर्गनिवास ।
 सुन्दर वनितामडली, सुन्दर सुरगन दास ॥५८॥
 अणिमा महिमा आदि दे, आठ रिद्धि फल पाय ॥
 सुर सुछदक्रीडा करै, जो मन वरतै आय ॥५९॥
 सुनत गोत-सगीत-धुनि, निरखत निरत रसाल ॥
 सुखसागरमै मगन सुर, जात न जानै काल ॥६०॥
 लोकोत्तम सब सपदा, अनुपम इन्द्री-भोग ॥
 सुफल फलयौ तपकल्पतरु, मिल्यौ सकल सुखजोग ॥६१॥
 जैवतो बरतो सदा, जैनधर्म जग माहि ।
 जाके सेवत दुखसमुद, पसुपछो तिर जाहि ॥६२॥

छन्द ।

इसही जम्बूदीप, पूर्व विदेह मभारै ,
 पुहकलावतो देस, विकसत नैन निहारै ॥६३॥
 तथा विजयारध नाम, सौहै सैल रवानो^४ ।
 उज्जल वरन विसाल, रूपमई गिरिरानो^५ ॥६४॥
 जोजन परम पचास, भूमिविसै चौड़ाई ।

१ चन्द्रमुख २ कमल ३ वनाव । ४ सुन्दर ५ पहाडी का राजा

तु ग^१ पचीस प्रमान सोभा कही न जाई ॥६५॥
 चौथाई भूमांभ, नौ सिर कूट विराजे ।
 सिद्धसिखर जिनधाम, मणिप्रतिमा तहां छाजै ॥६६॥
 उत्तर दक्षिन ओर, श्रेणी दोय जहां हैं ।
 दोय गुफा गिरि हेठ^२, अति अधियार तहा है ॥६७॥
 तापर स्वर्ग समान, लोकोत्तम पुर सोहै ।
 घापी-कूप-तलाव,—मडित सुर मनमोहै ॥६८॥
 विद्युत्तगति सूपाल, न्याय प्रजा प्रतिपालै ।
 नीतिनिपुन धर्मज्ञ, संत सुमारग चालै ॥६९॥
 विद्युत्तमाला नांव, ता घर नारि सयानी ।
 मानों मनमथ^३ जोग, आय मिली रतिरानी ॥७०॥
 तिनकं सो सुर आय, पुत्र भयो बड़भागी ।
 अगनिवेग तसु नाम, अति सुन्दर सौभागी ॥७१॥
 सोमप्रकृति^४ परवीन, सकलसुलच्छनधारी ।
 जिनपदभक्ति पुनीत, सबहीकों सुखकारी ॥७२॥
 राजसंपदा भोग, भुंजत पुन्यनियोग ।
 एक दिना इन साधु, भेंटे भाग सजोग ॥७३॥
 स्रवन सुन्यौ उपदेश, भर जोबन वैराग्यौ ॥
 आसनभव्य^५ कुमार, संजमसौ अनुराग्यौ ॥७४॥
 तजि परिग्रह गुरुसाख, पञ्चमहाव्रत लीनै ।

१ ऊचा २ पास ३, कामदेव ४ सोम्य स्वभावी ५ निकट मध्य ।

दुद्धर तप आराध, रागादिक कृस कीर्त ॥७५॥
 छीन किये परमाद, विचरं एकविहारी ।
 वारह अग ममुद्र, पार भयी श्रुतधारी ॥७६॥
 एक दिवस धरि जोग, हिमगिर कवर'माहीं ।
 निवसे^३ आतमलीन, वाहरकी सुधि नाही ॥७७॥

तहा ।

कुरकट नामा कमठचर, दुष्टनाग दुखदाय ।
 सो मरि पचम नरकमें, परची पापवस जाय ॥७८॥
 छेदन भेदन आदि बहु, तहा वेदना घोर ।
 सहस जीभसों वरनिये, तऊ न आवं ओर ॥७९॥
 ऐसे दुखमें कमठ जिय, कोनी पूरन आव ।
 सत्रह सागर भुगतर्क, निकस्यो कूरसुभाव ॥८०॥

चोपई ।

बैर भाव उरते नहिं टरची । फेरि आय अजगर अवतरची ॥
 ससकारवस आयी तहा । हिमगिरिगुफा मुनीसुर जहा ॥८१॥
 मिले साधु सजमधर धीर । समभावनतं तज्यो सरीर ॥
 लीनों स्वर्गसोलवं वास । जो नितनिरुपमभोगनिवास ॥८२॥
 जन्म-सेजतं जोवन पाय । उठची अमर^३ सपूरन काय ॥
 देखि सपदा विस्मय भयी । अवधि होत ससें सब गयी ॥८३॥
 पूजा करी जिनालय जाय । भक्ति-भाव-रोमाचित काय ॥
 पूरवसचित पुन्यसजोग । करे तहाँ सुर वाछित भोग ॥८४॥

गये बरस बाईस हजार । भोजन भुंजें मनसाहार ॥
 तावतमान पच्छजव जाय । तब ऊसासौं^१ दिसि^२महकाय ॥८५॥
 देखें पंचम-^३भूपरजंत । अवधिग्यानबल मूरतिवत ॥
 तितने मान विक्रिया करे । गमनागमन हिये जव धरे ॥८६॥
 तीन हाथ अति सुन्दर काय । लेस्या सुकल महा सुखदाय ॥
 यिति सागर बाईस विसाल । इहिविध बीते सुखमें काल ॥८७॥
 दोहा ।

आदि अंत जिस धमसौं, सुखी होय सब जीव ।
 तार्की तनमनवचनकरि, हे नर सेव सदीव ॥८८॥
 इतिश्रीमत्पाश्र्वनाथपुराणभाषाया गजस्वर्गगमनविद्याधरभव-
 विद्युत्प्रभदेव भववर्णन नाम द्वितीयोऽधिकार ॥२॥

तीसरा अधिकार



दोहा

अस्वसेनकुल-कमल रवि^१, वामाकुंवर कृपाल ।
 वन्दौं पारसचरन जुग, सरनागत-प्रतिपाल ॥१॥

चौपई

जम्बूदीप वसं घहुफेर । जाके मध्य सुदर्शन मेर ।
 कंचनमनिमय अतुलसुहाग । ता पर्वतके पच्छिम भाग ॥२॥
 अपरविदेह^४ विराजै खेत । सो नित चौथेकाल समेत ।

१ उच्छ्वास २ दिशा ३ पांचवें नरक ४ रूप ५ पश्चिम विदेह ।

क्रमक्रमसौं सिंसु भयौ कुमार । पढ लीनी विद्या सब सार ।
 जोवनवत कुमर जब भयौ । निर्मल नीतिपथ पग ठयी ।
 रूप-तेज-बल-बुद्धि-विज्ञान । सकल सारगुणरत्ननिधान ॥१४॥
 कीनी पिता व्याहविधि जोग । राजसुता बहु बरौ मनोग^१ ।
 क्रमकरि कुमर पितापद पाय । राज करै थुति^२ करिय न जाय॥
 पुन्यजोग आयुधगृह^३ जहां । चक्ररतन वर उपज्यौ तथा ।
 छहोखडवरती भूपाल । बस कीने नाये निजभाल ॥१६॥
 देव दैत्य विद्याधर नये । नृप मलेच्छ सब सेवक भये ।
 बढी सपदा पुन्यसयोग । इन्द्रसमान करै सुखभोग ॥१७॥

दोहा ।

सपूरन सुख भोगवै, वज्रनाभि चक्रैस ।
 तिस विभूतिबल वरनऊं, जथासकति लवलेस^४ ॥१८॥

चीपई ।

सहस बतीस सासते देस । धनकनकचन भरै विसैस ।
 विपुल^५ बाड बेढे चहुँश्रौर । ते सब गांव छानव कोर ॥१९॥
 कोट कोट दरवाजे चार । ऐसे पुर छव्वीसहजार ।
 जिनकों लग पाचसौं गाव । ते अटव चउ^६सहस सुठाव ॥२०॥
 पवंत श्रौर नदीके पेट । सोलह सहस कहे वे खेट ।
 कवंट नाम सहस चौबीस । केवल गिरिधर बेढे दीप ॥२१॥
 पत्तन अडतालीस हजार । रतन जहा उपज अति सार ।

१ मुदर २ स्तुति ३ गौश्र मंडार ४ घोडी ५ घने ६ चार हजार ।

एकलाख द्रोणीमुख^१ वीर । सहस्र घाट सागरके तीर ॥२२॥
 गिरि ऊपर सबाहन^२ जान । चौदह सहस्र मनोहर थान ।
 अट्ठाईस हजार असेस । दुर्ग^३ जहा रिपुको न प्रवेस ॥२३॥
 उपसमुद्रके मध्य महान । अंतरदीप छपन परिमान ।
 रतनाकर छब्बीस हजार । बहु विध सार वस्तुभंडार ॥२४॥
 रतनकुच्छ^४ सुन्दर सातसै । रतनधरा थानक जहँ लसै ।
 इन पुरसौ बस राजै खरे । जैनधाम धरनी जनभरै ॥२५॥
 वर गयद चौरासीलाख । इतने ही रथ आगम-साख ।
 तेज तुरग अठारह कोर । जे बढ चलै पदनतै जोर ॥२६॥
 पुनि चौरासी कोटि प्रमान । पायक^५ सघ बड़े बलवान ।
 सहस्र छानवै वनिता^६ गेह । तिनको अब विवरन सुन लेह ॥२७॥
 आरजखड बसै नरईस । तिनको कन्या सहस्र बतीस ।
 इतनी ही अतिरूप रसाल । विद्याधरपुत्री गुनमाल ॥२८॥
 पुनि मलेच्छ भूपनकी जान । राजकुमारी तावतमान ।
 नाटकगिन बत्तीस हजार । चक्री नृपको सुखदातार ॥२९॥
 आदि सरौर^७ आदि^८ सठान । पूर्वकथित तन लच्छन जान ।
 बहुविध विजन^९ सहित मनोग । हेमवरन^{१०} तन सहजनिरोग ३०
 छहो खड भूपति बलरास । तिनसौ अधिक देहबल जास ।
 सहस्र बतीस चरनतल रसै । मुकटबधराजा नित नसै ॥३१॥

जाइसो (संस्कृत विशेषण) का आशय के प्रधान

- १ द्वैमसम्बन्ध जैसे २ निवास स्थान ३ किले ४ रत्नो की खान
 ५ पैदल सिपाही ६ स्त्री ७ परमौदारिक शरीर ८ समचतुरस्रस्थान
 ९ तिल आदि चिह्न १० स्वर्ण के ममान रंग ।

भूप मलेच्छ छोरि अभिमान । सहस्र अठारह माने श्रान ।
पुनि गनवद्ध बखाने देव । सोलह सहस्र करे नृप सेव ॥३२॥
कोटि थाल कंचननिर्मान । लाखकोटि हलसहित किसान ।
नाना वरन गऊकुल^१ भरे । तीनकोटि व्रज^२ आगम धरे ॥३३॥

दोहा ।

अब नवनिधिके नाम गुन, सुनो जयारथरूप ।

जैनी विन जान नहों, जिनकोँ सहज सरूप ॥३४॥

चौपई ।

प्रथम कालनिधि सुभ आकार । सो अनेक पुस्तकदातार ।
महाकालनिधि दूजी कही । याकी महिमा सुनियौ सही ॥३५॥
असि ममि आदिक साधन जोग । सामग्री सब देय मनोग ।
तोजी निधि नैसर्प महान । नाना विध भाजनकी खान ॥३६॥
पाडुक नाम चतुरथी होय । सब रसधान समर्पे सोय ।
पदम पचमी सुकृत खेत । वाछित वसन निरंतर देत ॥३७॥
मानव नाम छठी निधि जेइ । आयुधजात^३ जन्मभू देह ।
सप्तम सुभग पिगला नाम । बहुभूषन आर्पे अभिराम ॥३८॥
संख निधान आठमी गनी । सब वाजिन्न-भूमिका वनी ।
सर्वरत्न नवमी निधि सार । सो नित सर्वरत्नभंडार ॥३९॥

दोहा ।

ये नौनिधि चक्रेसकै, सकटाकृत^४ सठान^५ ।

आठचक्रसंजुक्त सुभ, चौखूटी सब जान ॥४०॥

१. गोशाला २. पशु स्थान ३. शस्त्र निर्माण ४. गाड़ी के प्रकार ५. प्रकार

जोजन आठ उतग अति, नव जोजन विस्तार ।
 बारह मित^१ दीरघ सकल, वसं गगन निरधार ॥४१॥
 एक एकके सहस मित, रखवाले जखदेव^२ ।
 ये निधि नरपति पुन्यसौं, सुखदायक स्वयमेव ॥४२॥

चाँपई ।

प्रथमसुदरसन चक्रपसत्थ^३ । छहोखडसाधन समरत्थ ।
 चडवेग दिढदड दुतीय । जिस बल खुलै गुफा गिरिकीय ॥४३॥
 चर्मरत्न सो तृतीय निवेद । महा वज्रमय नीर अभेद ।
 चतुरथ चूडामनि मति-रैन । अधकारनासक सुखदेन ॥४४॥
 पचम रत्न काकिनी जान । चिंतामनि जाकौ अभिधान^४ ।
 इन दोनौतै गुफामभार । ससिसूरज लखिये निरधार ॥४५॥
 सूरजप्रभ सुभ छत्र महान । सो अति जगमगाय ज्यौं भान^५ ।
 सोनदक असि^६ अधिक प्रचड । डरै देखि बैरो बलबड ॥४६॥
 पुनि अजोध सेनापति सूर । जो दिगविजय करै बल भूर ।
 बुधसागर प्रोहित परवीन । बुधिनिधान विद्यागुनलीन ॥४७॥
 थपित^७ भद्रमुख नाम महत । सिल्पकलाकोविद^८ गुनवत ।
 कामबृद्ध गृहपति विख्यात । सब गृहकाज करै दिनरात ॥४८॥
 व्याल विजयगिरि अति अभिराम । तुरग^९ तेज पवनजय नाम ।
 वनिता नाम सुभद्रा कही । धूरै वज्ज पानि^{१०} सौं सही ॥४९॥

१ प्रमाण २ यक्षदेव ३ प्रशस्त ४ नाम ५ सूर्य ६ तलवार ७ शिल्पकार
 ८ विद्वान ९ घोडा १० हाथ ।

महादेहवल धारै सोय । जा पटतर^१ तिय अवर न कोय ।
मुख्यरतन यह चौदह जान । और रतनकौ कौन प्रमाना^२ ॥५०॥
दोहा ।

राजअग चौदह रतन, विविध भाति सुखकार ।
जिनकी सुर सेवा करै, पुन्यतरोवर-डार ॥५१॥
चक्र छत्र असि दडमनि, चर्म काकिनी नाम ।
सात रतन निर्जोव यह, चक्रवर्ति के धाम ॥५२॥
सेनापति गृहपति थपित, प्रोहित नाम तुरग ।
वनिता मिलि सातौ रतन, ये सजीव सरवग ॥५३॥
चक्र छत्र असि दड ये, उपजै आयुधयान ।
चर्म काकिनी मनिरतन, श्रीगृह उतपति जान ॥५४॥
गज तुरग तिय तीन ये, रूपाचलतं होत ।
चार रतन बाको विमल, निजपुर लहैं उदोत ॥५५॥
चौपई ।

मुख्य संपदाकी विरतत । आगँ और सुनौ मतिवत ।
सिंहवाहनी सेज मनोग । सिंहारूढ^३ चक्रवं^३ जोग ॥५६॥
आसन तु ग अनुत्तर नाम । मानिकजालजटित अभिराम ।
अनुपम नामा चमर अतूप । गगातरल-तरग-सरूप ॥५७॥
विद्युतदुति मनिकुंडल जोट । छिपे और दुति जाकी ओट ।
कवच अमेद अमेद महान । जामं भिदं न बैरीवान ॥५८॥
विसमोचिनी पादुका^४ दौय । परपदसौं विष मुंचं सोय ।

१ तुलना मे २ सिंही पर रखी हुई ३ चक्रवर्ति के योग्य ४ खडाक ।

अजितजं रथ महारवन्न^१ । जलपं थलवत करं गवन्न^२ ॥५६॥
 वज्रकाड चक्रीधर चाप । जाहि चटावत नरपति आप ।
 वान श्रमोघ^३जवं कर लेत । रनमे मदा विजय वर देत ॥६०॥
 विकट वज्रतु डा अभिधान^४ । सत्रुसडिनी मकती जान ।
 सिहाटक वरछो विकगल । रतनदड लागी रिपुकाल ॥६१॥
 लोहवाहिनो तोखन छुरी । जिमि चमकं चपलादुति^५ दुरी^६ ।
 ये सब वस्तुजाति भूमहि । चक्री छूट श्रीर घर नाहि ॥६२॥

दाहा ।

मनोवेग नामा कणय (?), अयन कह्यो विट्यात ।
 खेटभूतमुख नाग है, दोनो आयुध जात ॥ ६३ ॥
 चौपई ।

आनन्दन भेरो दस दोय । वारह जोजन लों धनि होय ।
 वज्रघोस पुनि जिनकी नाम । वारह पटह^७ नृपति के घाम ॥६४॥
 वर गभोरावतं गरीस । सोभनरूप सख चौवीस ।
 नानावरन धुजा रमनीय । अडतालीस कोट मित कीय ॥६५॥
 इत्यादिक बहुवस्तु अपार । वरनन करत न लहिये पार ।
 महलतनी रचना असमान । जिनमत कही सो लीजं जान ॥

दोहा ।

चक्री नृपकी सपदा, कहै कहां लों कोय ।
 पुन्यवेल पूरव बई, फली साधनी^८ सोय ॥६७॥

१ सुन्दर २ गमन ३, मचूक ४ नाम ५ विजली ६ तेज ७ नषकारे ८ धनी

इहि विषय ब्रह्मनाभि नरराय । करे भोग चप्रीपद पाय ।
 धर्मध्यान ग्रहनिमित्त श्राद्धर । निमल नीतिपथ पग धरे ॥६८॥
 पूजा करे जिनालय जाय । पूजे गदा गुरु के पाय ।
 नामाधिक साधे अघनाम । करे परव प्रोपधउपयाम ॥६९॥
 चारप्रकार दान नित देय । श्रीगुन ह्यार्ग गुन गहू मेघ ।
 मम सोम पालं बडभाग । मनघनकाय धर्ममी राग ॥७०॥
 सिहासनपर बाँठ नरेश । परे पुनीतं धर्म उपदेश ।
 सुजन सभाजन किकरलोग । देय मुहिनमिच्छाम मव जोग ॥७१॥
 शोभा ।

बीजरात्रि फल भोगदं, ज्यो विमान जगमाहि ।
 त्यो चक्रीनृप सुख करे, धर्म विसारे नाहि ॥७२॥

नर-२ प्रथम योगीगमा

इहिविध राज करे नरनायक, भोग पुन्य घिसालो ।
 सुखमागरमें रमत निरतर, जात न जाने फाली ॥७३॥
 एक दिना सुभकर्मसजोगे, छेमकर मुनि वन्दे ।
 देखे श्रीगुरु के पदपंकज, लोचन श्रलि श्रानन्दे ॥७४॥
 तीन प्रदच्छन दे सिरनाथी, करि पूजा थुति कीनी ।
 साधु समीप विनय कर बँढ्यी, पायनमें दिठ^१ दीनी ॥७५॥
 गुरु उपदेश्यी धर्म सिरोमनि, सुनि राजा वरामे ।
 राज रमा^२ वनितादिक जे रस, ते-रस वेरस^३ लागे ॥७६॥

१ रात-दिन २ घण्टी ३ अनुदंशी ४ वनिन ५ दृष्टि ६ तदमी ७ बुरे
 स्वाद वाले ।

मुनिसूरजकथनी किरनावलि, लगत भरमबुध भागी ।
 भव-नन-भोगमरूप विचारं, परम-धरम-अनुरागी ॥७७॥
 इस ससार महावनभोतर, भ्रमते ओर न आवं ।
 जामन मरन-जरा-दो^१ दाऱ्यौ, जीव महादुख पावं ॥७८॥
 कवही जाय नरकथिति भुजं छेदन भेदन भारी ।
 कवही पसु परजाय घरं तहें, ब्रध वधन भयकारी ॥७९॥
 सुरगतिमें परमपति देखं, रागउदय दुख होई ।
 मानुष जोनि अनेक विपतिमय, सर्वमुखी नहिं कोई ॥८०॥
 कोई इष्टविद्योगी विलखं, कोई असुभसंजोगी ।
 कोई दोन दारिद्र विगूचे^२, कोई तनके रोगी ॥८१॥
 किसही घर कलिहारी^३ नारी, कं बरी सम भाई ।
 किसहीकं दुख बाहर दीखं, किसही उर दुचित्ताई^४ ॥८२॥
 कोई पुत्र विना नित भूरं, होय मरं तव रोवं ।
 खोटी सततिसौं^५ दुख उपजं, क्यो प्राणी सुख सौवं ॥८३॥
 पुन्यउदय जिनकं तिनकों भी, नाहिं सदा सुख साता ।
 यो जगवास जथारथ देखत, सब दीखं दुखदाता ॥८४॥
 जो ससारविषं सुख हो तो, तीर्थङ्कर क्यो त्यागं ।
 काहेकों सिवसाधनकर ते, सजमसौ अनुरागं ॥८५॥
 देह अपावन अथिर घिनावन, यामै सार न कोई ।
 सागरके जलसौं सुचि^६ कीजं, तौ भी सुचि नहिं होई ॥८६॥
 सात कुधातमई मलमूरति, चामलपेटी सोहै ।

१ प्राण २ दुःख ३ सडाई करने वाली ४ चिन्ता ५ सन्तान से उपवित्र ।

अतर देखत या सम जगमें, और अपावन को है ॥८७॥
 नव मलद्वार^१ खवं निसिवासर नाव लिये दिन आवें ।
 व्याधि उपाधि^२ अनेक जहा तहा, कौन सुधी सुख पावें ॥८८॥
 पोखत तौ दुख दोख करे सब, सोखत सुख उपजावे ।
 दुर्जन देहसुभाव वरावर, मूरख प्रीति बढावें ॥८९॥
 राचनजोग^३ स्वरूप न याको, विरचनजोग^४ सही है ।
 यह तन पाय महा तप कीजै, यामें सार यही है ॥९०॥
 भोग बुरे भवरोग बढावें, वैरी है जग जीके ।
 वेरस^५ होहि विपाक^६ सम अति, सेवत लागे नीके ॥९१॥
 वज्र अगनि विषसों विषधरसों,^७ ये अधिके दुखदाई ।
 धर्मरतनके चोर चपल ये, दुर्गतिपथ सहाई ॥९२॥
 ज्यों ज्यो भोग सँजोग मनोहर, मनवाछित जन पावें ।
 तिसना नागनि त्यो त्यो डकै, लहर जहरकी आवें ॥९३॥
 मोह उदय यह जीव अग्यानी, भोग भले कर जानें ।
 ज्यों कोई जन खाय घतूरो, सो सब कंचन^८ मानें ॥९४॥
 मैं चक्री पद पाय निरंतर, भोगे भोग घनेरे ।
 तौ भी तनिक भये नहि पूरन, भोगमनोरथ मेरे ॥९५॥
 राज-समाज महा अघकारन, वैर बढावनहारा ।
 वेस्यासम लछमी अति चचल, याकी कौन पत्यारा^९ ॥९६॥

(१ दो कान, दो नाक, दो प्राँख, मुह, गुदा, लिंग या योनी—ये ६ मल द्वार हैं) २ मानसिक चिन्ता ३ प्रेम करने योग्य ४ विरक्त होने योग्य ।
 ५ मानन्दहीन ६ कल ७ साँप ८ सोना ९ विपवास ।

मोह महा रिपु चर विचारा, जगजिय मकट डाले ।
 घर कारागृह वनिता ब्रेडो, परिजन जन रत्नवाले ॥६७॥
 सम्यकदरसन ग्यान-चरन-नप, ये जियके हितकारी ।
 ये ही मार अमार और मत्र, यह चक्री चित धारी ॥६८॥
 छोटे चोदह रतन नवी निधि, अरु छोडे सग साथी ।
 कोडि अठारह घोडे छोडे, नीरासो लख हाथी ॥६९॥
 इत्यादिक नपति बहुतेरी, जोरन-तिन ज्यो त्यागी ।
 नीति विचार नियोगी सुतकी, राज दियो बडभागी ॥१००॥
 होय निसल्य अनेक नृपाति सँग, भूपन वमन उतारे ।
 श्री गुरुचरन धरी जिनमुद्रा, पच महाव्रत धारे ॥१०१॥
 धन यह समझ नुबुद्धि जगत्तम^३, धन यह धीरजभारी ।
 ऐसी सपति छोरि बसे वन, तिन पद ढोक हमारी ॥१०२॥

दोहा ।

परिग्रहपोट उतारि सत्र, लीनों चारित पथ ।
 निज सुभावमै थिर भये, वज्रनाभि निरग्रथ ॥१०३॥

चौगई ।

वारहविध दुद्धरतप करं । दसलच्छनी धरम अनुसरं ॥
 पढे अग-पूरव श्रुत सार । एकाकी विचरं अनगार ॥१०४॥
 ग्रीषमकाल बसे गिरिसीस । बरसामै तरुतल मुनिईस ॥
 सीतमास तटिनोतट^५ रहै । ध्यान अगनिमै कर्मनि दहै ॥१०५॥

१ पुराना तिनका २ हकदार (बडा) ३ सत्तार मे उत्तम ४ ग्यारह अग चोदह
 पूव । ५ नदी किनारे ।

एक दिना बनमै थिर काय । जोग दिये ठाडे मुनिराय ॥
 कमठजीव अजगर-तन छोरि । उपज्यौ छठे नरक अतिघोर ।
 थिति सागर बाईस प्रमान । देखे दुख जानै भगवान ॥
 पूरनआयु भोगकर भरघौ । बनहि कुरंग^१ भोल अवतरघौ ॥ १०७ ॥
 कालसरूप वदन विकराल । घनचर जीवनकी छयकाल^२ ।
 धनुषबान लोये निजपान^३ । भ्रमै मासलोभी बन थान ॥ १०८ ॥
 सो पापी चल आयौ तहा । जोगारूढ खड़े मुनि जहा ॥
 सत्रुमित्रसौं सम कर भाव । लगे आपमै सुद्धसुभाव ॥ १०९ ॥
 कु कुम^४ कादो^५ महल मसान । कोमल सेज कठिन पाषान ।
 कचन काच दुष्ट अरु दास । जीवन मरन बराबर जास ॥ ११० ॥
 निर्ममत्त तनकी सुधि नाहि । सातौं भय वरजित उरमाहि ॥
 देखि दिगबर^६ कोप्यौ नीच । कपित अधर दसनतल^७ भीच ॥ १११ ॥
 तान कमान कान लौं लई । तोखन^८ सर^९ मारघौ निरदई ॥
 मुनिवर धर्मध्यान आराध । दुखमै धीरज तज्यौ न साध ॥ ११२ ॥
 दरसनग्यानचरन तप सार । चारौ आराधन चित धार ॥
 देहत्याग तब गये मुनिद्र । मध्यम प्रैर्वायक अर्हमिद्र ११३ ॥
 तहें उपपादसिला निकलक^{१०} । हसतूल^{११} जुत रतन पलक ॥
 उठ्यौ सेज तजि दीपत^{१२} काय । अल्पकाल मै जीवन पाय ॥ ११४ ॥
 देखे दिसि अतिविस्मयरूप । महा मनोग विमान अन्नप ॥
 अतुल तेज अर्हमिद्र निहार । अवधिज्ञान उपज्यौ तिहि बार ॥ ११५ ॥

१ बंदसूरत २ मष्ट करने वाला ३ अपने हाथ मे ४ केशर ५ कीचड
 ६ मुनि ७ दात ८ तीक्ष्ण ९ बाण १० कलकरहित ११ रुई १२ घमकती हुई ।

जान्यो मव पूरव-भव-नेव । चारित विरद्य, फलयो सुखदेव ॥
 अनुपम आठो दरव सँजोय । रतनविष्व पूजे धिर होय ॥११६॥
 आयो सुर हर्षित निजथान । महारिद्धि महिमा असमान ॥
 तीनभवनवरती जिनधाम । भावभाक्त निन करै प्रनाम ॥११७॥
 तीथङ्कर केवलि-समुदाय । निजथानक धित पूजै पाय ॥
 पचकल्याणक काल विचारि । प्रनमं हस्तकमल मिरधारि ॥११८॥

दीपा ।

अनाहृत^१ अहमिद्रगन, आवे सहज नुभाय ।
 धर्मकथा जिनगुनकथन करै ननेह बढाय ॥११९॥
 कवहीं रतनविमानमे, कवहीं महलमभार ।
 कबही वनक्रीडा करै, मिलि अहमिद्रकुमार ॥१२०॥
 और वास^२ निज वासते, उत्तम दीसै नाहि ॥
 ताहींते ते अमरगन^३, और कहीं नहि जाहि ॥१२१॥
 प्रीत भरे गुन आगरे^४, सुभग^५ सोम^६ श्रीमन्त ।
 सातधात मलसौं रहित, लेस्या सुकल धरत ॥१२२॥
 सब समान-सपतिपनी सब माने हम इन्द्र ।
 कला ग्यान विग्यानसम, ऐसे सुर अहमिद्र ॥१२३॥
 सुकल वरन तनमनहरन, दोय हाथ परिमान ।
 मानौं प्रतिमा फटिकको^७, महातेज दुतिवान ॥१२४॥

१ विना बुलाये २ निवानस्पान ३ देवता ४ भंडार ५ सुन्दर ६ सोम्य प्रकृति
 ७ स्फटिकमणि ।

कामदाह उरमै नहीं, नहिं वनिताकौ राग ।
 कल्पलोकके सुर सुखी, असंख्यातवै भाग ॥१२५॥
 सत्ताईस हजार मित बरस बीति जब जाहिं ।
 मानसीक आहारकी, रुचि उपजै मनमाहिं ॥१२६॥
 साढे तेरह पच्छपर, लेत सुगंध उसास ।
 छठी अवनि लौं जिन कही, अवधिविक्रिया जास ॥१२७॥
 सागर सत्ताईस मित, परम आयु तिहिं थान ।
 सुभग सुभद्र विमानमै, यो सुख करै महान ॥१२८॥
 चौपाई ।
 अब सो भील महादुखदाय । रुद्रघ्यानसौ छोडी काय ॥
 मुनिहत्या-पातकते मरचौ । चरम^१ सुभ्रसागरमै^२ परघो ॥१२९॥
 दोहा ।
 कथा तहाके कष्टकी, को कर सके बखान ।
 भुगतै सो जानै सहो, कै जानै भगवान ॥१३०॥
 दोहा ।
 जनमथान सब नरकमै, अध अधोमुख जौन ।
 घटाकार^३ घिनावनी, दुसह^४ बास दुखभौन^५ ॥१३१॥
 तिनमै उपजै नारकी, तल सिर ऊपर पाय ।
 विषम दज्ज कटकमई, परै भूमिपर आय ॥१३२॥
 जो विषेल बीछू सहस, लगे देह दुख होय ।

१ अन्तिम २ नरक ३ लटकते हुए विजयघट की तरह ४ न सहने योग्य
 ५ दुख का घर ।

पूरबपापकलाप^१ सब, आप जाप^२ कर लेय ।
 तब विलापकी ताप तप, पश्चात्ताप करेय ॥१४२॥
 मै मानुष परजाय धरि, धन-जोबन-मदलीन ।
 अधम काज ऐसे किये, नरकबास जिन दीन ॥१४३॥
 सरसोसम^३ सुखहेत तब, भयी लपटी जान ।
 ताहीकौ अब फल लग्यौ, यह दुख मेह समान ॥१४४॥
 कदमूल मद मास मधु, और अभच्छ अनेक ।
 अच्छन-बस^४ भच्छन किये, अटक^५ न मानी एक ॥१४५॥
 जल थल नभचारी विविध, बिलवासी बहु जीव ।
 मै पापी अपराध बिन, मारे दीन अतीव ॥१४६॥
 नगरदाह कीनों निठुर, गाम जलाये जान ।
 अटवीमै दोनी अग्नि, हिंसा कर सुखमान ॥१४७॥
 अपने इंद्रीलौभकौ, बोल्यौ मृषा मलीन ।
 कल्पित ग्रथ बनायकं, बहकाये बहु दीन ॥१४८॥
 दावघातपरपचमौ, परलछमी हर लीय ।
 छलबल हठबल दरबबल, परवनिता^६ बस कोय ॥१४९॥
 बढी परिग्रहपोट सिर, घटी न घटकी चाह ।
 ज्यो ईन्धनके जोगसौं, अग्नि करे अतिदाह ॥१५०॥
 बिन छान्यौ पानी पियौ, निसि^७ भु ज्यौ अविचारि ।
 देवदरब खायौ सही, रुद्रध्यान उर धारि ॥१५॥

१ समूह २ याद कर ३ सरसो के दान के समान थोडामा ४ इन्द्रि
 ५ क्वावट ६ परस्त्री ७ रात्रि म ।

कीनी सेव कुदेवकी, कुगुरुनकों गुरु मानि ।
 तिनहींके उपदेशसौं, पशु होमै हित जानि ॥१५२॥
 दियौ न उत्तमदान मै, लियौ न सजमभार ।
 पियौ मूढ़ मिथ्यातमद, कियौ न तप जगसार ॥१५३॥
 जो धर्माजन दयाकरि, दोनी सीख निहोर^१ ।
 मै तिनसौं रिस कर अधम, भाखे बचन कठोर ॥१५४॥
 करी कमाई परजनम, सो आई मुझ तोर ।
 हा हा अब कैसे धरू, नरकधरामै घोर ॥१५५॥
 दुलभ नरभव पायकै, केई पुरुष प्रधान ।
 तपकरि साधे सुरग सिव, मै अभागि यह थान ॥१५६॥
 पूरब सतन यो कही, करनी चालै लार ।
 सो अब आँखन देखिये, तब न करी निरधार^२ ॥१५७॥
 जिस कुटु ब के हेत मै, कोने बहुबिध पाप ।
 ते सब साथी बीछडे परचौ नरकमै आप ॥१५८॥
 मेरी लछमी खानकौं, सीरी^३ भये अनेक ।
 अब इस विपत बिलापमै, कोउ न दीखै एक ॥१५९॥
 सारस सरबर तजि गये, सूखो नोर निराट^४ ।
 फलबिन बिरख बिलौककै, पछी लागे बाट^५ ॥१६०॥
 पचकरन^६—पोषन^७ अरथ, अनरथ किये अपार ।
 ते रिपु ज्यो न्यारे भये, मोहि नरकमै डार ॥१६१॥

१ उपकार करके २ निर्णय ३ सालीदार ४ तिनान्त (बिलकुत)
 ५ राग्ना ६ पाचो इन्द्रिया ७ पृष्ट करने ।

तब तिलभर दुख सहनकौं, हुतो अघीरज भाव ।
 अब ये कैसे दुसह दुख, भरिहीं दीरघ आव' ॥१६२॥
 अघ बैरीके बस परघौ, कहा करूँ कित जाउ ।
 सुनै कौन पूछूँ किसे, सरन कौन इस ठाउ ॥१६३॥
 यहां कछु दु.ख हतनकौ^२, उक्त^३ उपाव न मूर^४ ।
 थिति बिन बिपतसमुद्र यह, कब तिरहीं तट दूर ॥१६४॥
 ऐसी चिंता करत हू, बढे बेदना एम ।
 घीव तेलके जोगतं, पावक^५ प्रजुलै जेम ॥१६५॥

सोरठा ।

इहिबिध पूरब पाप, प्रथम नारकी सुधि करै ।
 दुखउपजावन जाप, होय विभगा अवधितं ॥१६६॥
 दोहा ।

तब ही नारकि निर्देई, नयी नारकी देख ।
 धाय धाय मारन उठे, महादुष्ट दुरभेख ॥१६७॥
 सब क्रोधी कलही^६ सकल, सबके नेत्र फुलिग^७ ।
 दु ख देनकौ अति निपुन, निठुर नपुंसकलिग ॥१६८॥
 कु त^८ कृपान^९ कमान सर, सकती^{१०} मुगदर दड ।
 इत्यादिक आयुध विबिध, लिये हाथ परचड ॥१६९॥
 कहि कठोर दुर्वचन बहु, तिल तिल खडे काय ।
 सो तबही ततकाल तन, पारे-वत मिल जाय ॥१७०॥

१ आयु २ नाश करने को ३ युक्ति ४ मूल ५ अग्नि ६ लड़ाई करने वाले
 ७ अग्नि बरसाने वाले ८ भाला ९ तलवार १० एकअस्त्र ।

काँटेकर छेदं चरन, भेदं मरम विचारि ।
 अस्थिजाल चूरन करे, कुचले खाल उपारि ॥ ७१॥
 चोरै करवत काठ ज्यो, फारे पकरि कुठार ॥
 तोड़ें अतरमालिका, अतर उदर बिदार ॥१७२॥
 पेलं कोल्हू मेलकं, पोसै घरटी^१ घाल ।
 तावें ताते तेलमै, दहैं दहन^२ परजाल ॥१७३॥
 पकरि पाय पटकं पुहुमि^३, भटकं परसपर लेहि ।
 कटक सेज सुवावहीं, सूलीपर धरि देहि ॥१७४॥
 घसं सकटक रूखसौं, बैतरनी ले जाहि ।
 घायल घेरि घसीटिए, किंचित करुना नाहि ॥१७५॥
 केई रक्त चुवाव तन विलवल भाजें ताम ।
 पवंत अतर जायके, करे बैठि विसराम ॥१७६॥
 तहा भयानक नारको, धारि विक्रिया भेख ।
 बाघ मिह अहि^४ रूपसौं, दारै^५ देह विसेख ॥१७७॥
 केई करसौं पाय गहि, गिरसौं देहि गिराय ।
 परे आन दुर्भूमिपर, खड खंड हो जाय ॥१७८॥
 दुखसौं कायर चित्तकरि, दूँढें सरन सहाय ।
 वे अति निर्दय घातकी, यह अति दोन घिघाय^६ ॥१७९॥
 त्रण^७-वेदन नोकी करे, ऐसे करि विश्वाम ।
 सोचें खारे नीरसौं, जो अति उपजें त्रास ॥१८०॥

केई जकरि जँजीरसों, खँचि थभ अति बांधि ।
 सुध कराय अब मारिये, नाना आयुध साधि ॥१८१॥
 जिन उद्धत अभिमानसों कोनै परभव पाप ॥
 तपतलोह आसनविषं, त्रास दिखावँ थाप ॥१८२॥
 ताती पुतली लोहकी, लाय लगावँ अग ।
 प्रीत करी जिन पूर्वभव, परकामिनि'के सग ॥१८३॥
 लोचनदोषी जानिकं, लोचन लेहि निकाल ।
 मदिरापानी पुरुषकों प्यावँ ताबो गाल ॥१८४॥
 जिन अगनसों अघ किये, तेई छेदे जाहि ।
 पल^३-भच्छनके पापतं, तोडि तोडि तन खाहि ॥१८५॥
 केई पूरब वंरके, याद दिवावँ नाम ।
 कह दुर्वचन अनेक विध, करै कोप सग्राम ॥१८६॥
 भये विक्रिया देहसौ, बहुविध आयुधजात^३ ।
 तिनहीसों अति रिस^४ भरे, करै परस्पर घात ॥१८७॥
 सिथिल होय चिर युद्धतं, दोन नारकी जाम ।
 हिंसानंदी असुर दुठ, आन भिरावँ ताम ॥१८८॥
 सोरठा ।
 तृतीय नरक परजत, असुरादिक दुख देत हैं ।
 भाख्यौ जिनसिद्धन्त, असुरगमन आगे नहीं ॥१८९॥
 दोहा ।
 इहिविध नरक-निवासमै, चैन एकपल नाहि ।

तपै निरतर नारकी, दुखदावानलमाहिं ॥१६०॥
 मार मार सुनिये सदा, छेत्र महा दुरगध ।
 बहै बात^१ असुहावनी, असुध छेत्र सबध ॥१६१॥
 तीनलोककौ नाज सब, जो भच्छन कर लेय ।
 तौहू भूख न उपसमै^२, कौन एक कन देय ॥१६२॥
 सागरके जलसौं जहा, पीवत प्यास न जाय ।
 लहै न पानी बू दभर, दहै निरतर काय ॥१६३॥
 बायपित्तकफजनित जे, रोगजात जावत ।
 तिन सबहीकौ नरकमै, उदय कह्यौ भगवत ॥१६४॥
 कद्रुतु बी^३ सौं कद्रुक रस, करवतकी सी फास ।
 जिनकी मृत मजारसौं^४, अधिक देहदुरबास^५ ॥१६५॥
 जोजन लाख प्रमान जहँ, लोहपिंड गल जाय ।
 ऐसी ही अति उसनता, ऐसी सीत सुभाय ॥१६६॥

प्रदिल्ल छद

पकप्रभापरजत उसनता अति कही ।
 धूमप्रभामै सीत उसन दोनौं सही ॥
 छठी सातमी भूमि मे केवल सीत है ।
 ताकी उपमा नाहिं महा विपरीत है ॥१६७॥
 दोहा ।

स्वान^६ स्यार मजारकी, पडी कलेवर-रास^७ ।
 मास वसा^८ अरु रुधिरकी, कादौ जहा कुबास ॥१६८॥

१ हवा २ शान्त ३ कडवीतूमडी ४ बिल्ली से ५ दुर्गन्ध ६ कुना ७ शरीर ८ चर्बी

ठाम ठाम असुहावने, सेंभल तरुवर भूर ।
 पनें दुखदेनें विकट, कटककलित करूर^१ ॥१६६॥
 और जहा असिपत्र^२ बन, भीम तरोवर खेत ।
 जिनके दल तरवारसे, लगत घाव करदेत ॥२००॥
 वैतरिना सरिता समल, लोहित लहर भयान ।
 बहै खार सोनित^३ भरी, मासकीच घिन घान ॥२०१॥
 पछी वायस^४ गोघगन, लोहतुंडसौं^५ जेह ।
 मरम विदारें दुख करे, चूटै चहुदिस देह ॥२०२॥
 पचेंद्री मनकों महा, जे दुखदायक जोग ।
 ते सब नरकनिकेतमै^६, एर्कपिंड अमनोग ॥२०३॥
 कथा अपार कलेसकी, कहै कहा लौं कोय ।
 कोड़ जीभसौं बरनिये, तऊ न पूरी होय ॥२०४॥
 सागरबध प्रमानथिति, छिनछिन तीखन त्रास ।
 ये दुख देखें नारकी, परवस परे निवास ॥ २०५ ॥
 जैसी परवस बेदना, सहै जीव बहु भाय ।
 स्वधस सहै जो अस भी, तौ भवजल तिरजाय ॥ २०६ ॥
 ऐसे नरकांह नारकी, भयौ भोल दुठ भाव ।
 सागर सत्ताईसकी, धारी मध्यम आव ॥ २०७ ॥
 सागर काल प्रमान अब, बरनों औसर पाय ।
 जिनसौं नरकनिवासकी, थिति सब जानी जाय ॥२०८॥

१ क्रूर २ तलवार की धार समान पत्ते ३ खून ४ कौम्रा ५ लोहे की सी
 षोष ६ घर ।

चौपई ।

पहले तीन पत्यके भेव । एकचित्तकरि सो सुन लेव ॥
जिनसौं सागर उपजँ सही । जथागीत जिनसासन कही ॥२०६॥
सोरठा ।

प्रथम पत्य ब्योहार, दुतिय नाम उद्धार भन ।
अर्धा त्रितिय त्रिचार, अब इनकौ विस्तार सुन ॥२१०॥

चौपई ।

पहले गोल कूप कल्पिये^१ । जोजन बडे मान थरपिये ॥
इतनौ ही करिये गंभीर । बुधिबल^२ ताहि भरौ नर धीर ॥२११॥
सात दिवसके भीतर जेह । जने^३ भेडके बालक^४ लेह ।
उत्तम भोगभूमिके जान । तिनके रोमअग्र मनआन ॥२१२॥
ऐसे सूच्छम करिये सोय । फेरि खड जिनकौ नहि होय ॥
तिन सौं महाकूप वह भरौ । बारंवार कूट दिढ करौ ॥२१३॥
तिन रोमनकी सख्या जान । पैतालीस अक परवान ॥
ते श्रीजिनसासनमै कहे । कर प्रतीत जंनो सरदहे ॥२१४॥

चामर छन्द ।

चार एक तीन चार पाच दो छ तीन ले ।
सुन्न तीन सुन्न^५ आठ दोय अंक सुन्न दे ॥
तीन एक सात सात सात चार नौ करौ ।
पाच एक दोय एक नौ समार दो धरौ ॥२१५॥

१ कल्पना कीजिए २ बुद्धि प्रमाण ३ पैदा हुए ४ भेड का बच्चा ५ बिन्दु

दोहा ।

सात बीस ये अंक लिखि, और अठारह सुत्र ।
प्रथम पत्यके रोमकी, यह संख्या परिपुत्र^१ ॥

चीपई ।

सौ सौ बरस बीत जब जाहिं । एक एक काढी यामाहिं ॥
ऐसी विध सब करते सोय । कूप^२ उवर जब खाली होय ॥२१७॥
जो कछु लगे काल परवान^३ । सो द्योहार पत्य उरग्रान ॥
प्रथम पत्य सवतं लघुरूप । बीजभूत भाख्यौ जिनरूप ॥२१८॥

दोहा ।

संख्या कारन जिन कह्यौ, और न यासौं काज ।
दुतिय पत्य विवरन सुनों, जो भाख्यौ जिनराज ॥२१९॥

चीपई

पूरवकथित रोम सब धरौ । तिनके अस कल्पना करौ ॥
बरस असंख कोटिके जिते । समय होहिं आतम परिमिते^४ ॥२२०॥
एक एकके तावत^५ मान । करौ भाग विकल्प^६ मन ग्रान ॥
याविध ठान रोमकी रास । समय समय प्रति एक निकास ॥
जितनों काल होय सब येह । सो उद्धार पत्य सुन लेह ॥
याकं रोमनसौं परवान । दीपोदधिकी सख्या जान ॥२२२॥

दोहा ।

कोडाकोडि पचीसके, पत्य रोम जाबंत ।
तितने दीप समुद्र सब, बरनें जैनसिधंत ॥२२३॥

१ परिपूर्ण २ कुर्पा ३. प्रमाण ४ प्रमाण ५ उतने ६. विचार ।

चोपई ।

अब सुन त्रितिय पत्य की कथा । श्रीजिनमासन बरनो जया॥
 दुतियपत्यके अमित अपा । रोम अंन लीजं निर्धारि ॥२२४॥
 एक एकके भाग प्रमान । करि सौ बरम नमय परवान ॥
 इहिविध रामि होय फिर एह । नमय नमय प्रति लीजं तेह ॥
 ऐसे करत लग जो काल । मोई अर्घापत्य विसाल ॥
 करमनकी यिति यानो जान । यह उत्कृष्ट कही भगवान ॥२२६॥

गोहा ।

प्रथम पत्य मर्यातमिन, दुतिय अनत्यप्रमान ।
 असत्यातगुन तीमरी, लिख्यो जिनागम जान ॥२२७॥
 इन नव तीनों पत्यमें, अढापत्य महान ।
 दस कोडाकोडी गये, अढासागर ठान ॥२२८॥
 इस ही अद्धानिघुमों, पुन्यपाप परभाव ।
 नमारीजन भोगवै, सुरगनरककी आव ॥२२९॥
 ऐसे दीरघ काल लों, नरक सातवै यान ।
 कमठ जीव दुख भोगवै, परचो कर्मवस घान ॥२३०॥
 धिक धिक विषयकषायमल, ये बैरी जगमाहि ।
 ये ही मोहित जीवकों, अबसि नरक ले जाहि ॥२३१॥
 धर्म पदारथ ग्रन्थ जग, जा पटतर कछु नाहि ।
 दुर्गतिवाम बचायकै, धरै सुरगसिवमाहि ॥२३२॥

यही जान जिनधर्मकों, सेवो बुद्धिविशाल ।
मन तन वचन लगायकं, तिहुँपन^१ तीनों काल ॥२३३॥
इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषाया वज्रनाभग्रहमिन्द्रसुखमिह्नरक-
दु खवर्णन नाम तृतीयोधिकार ॥३॥

चौथा अधिकार ।

मोरठा—मरुथल^२ ससार, वामानदन कलपतरु ।
वाछितफलदातार, सुखकामी सेवो सदा ॥१॥
चौपई ।
इसही जवूदीपमभ्रार । भरतखंड दच्छिन विसि सार ।
कौसलदेस बसै अभिराम । नगर अजोध्या उत्तम ठान ॥२॥
आरजखडमार्हि परधान । मध्यभाग राजे सुभथान ॥
गढ़ गोपुर खाई गृहपांति । घनबनसौं सोहै बहुभांति ॥३॥
ऊंचे जिनमदिर मनहरै । कचन कलस धुजा फरहरै ॥
वज्रबाहु भूपति तिहि थान । वर-इखाकवंस-नभ-भान ॥४॥
जैनधर्म पाले बडभाग । जिनपद-कमलनि मधुप^३ सराग ॥
प्रभाकरो तिय ताघर सती । जीती जिन रंभा-रति-रती ॥५॥
दोहा ।
यथा हसके वंसकों, चाल न सिखवै कोय ।
त्यौं कुलीन नर-नारिकै, सहज नमन-गुण होय ॥६॥

१ बाल, युवा और वृद्धपन २ मरुस्थल ३ मोरा ।

चोपई ।

वह अर्हमिद्र तहातं चर्यौ^१ । तिनकै सुदिन पुत्र सो भयौ ॥
 तां व धरचौ आनदकुमार । अतुल तेज सब लच्छन सार ॥७॥
 सुभग सोम श्रीवत^२ महान । बल-वीरज-धीरजगुनयान ॥
 नरनारी-मन-मानिक-चोर । देखत नयन रहै जा ओर ॥८॥
 जाके सुगुन सेस कह थकै । और कौन वरनन कर सकै ॥
 जोबनचंत जनक तिस देख । व्याहमहोत्सव कियौ विसैख ॥९॥
 परनी राजसुता बहु भाय । जिनकी छवि वरनी नहि जाय ॥
 क्रमसौं कुमर पितापद पाय । बलसौं बस कीये बहुराय^३ ॥१०॥
 दोहा ।

जोबन वय^४ संपत्ति बडी, मित्यौ सकल सुखजोग ।
 'महामडली' पद लह्यौ, पूरव-पुन्य-नियोग ॥११॥
 चौपाई ।

अब सुन आठ जातिके भूप । जिनकौ जिनमत कह्यौ सम्य ॥
 कोटि ग्रामकौ अधिपति होय । राजा नाम कहावै सोय ॥१२॥
 नव^५ पांचसौ राजा जाहि । अधिराजा नृप कहिये ताहि ॥
 महस राय जिस मानै आन । महाराज राजा वह जान ॥१३॥
 दोय सहन नृप नव असेस । मडलीक वह अर्थ नरेस ॥
 चार सहस जिस पूजै पाय । सोई मंडलीक नरराय ॥१४॥
 आठ सहस भूपतिकौ ईम । मडलीक सो महा महीस ॥
 सोलह सहस नव भूपाल । सो अधचक्रौ पुन्यविसाल ॥१५॥

१ जन २ नक्षत्रान ३ बहन से राजा ४ चक्र ५ गिर भुक्ताने है ।

सहस्र वतीस आन जिस बहै । ताहि सकलचक्री बुध कहै ॥
इनमें श्रीआनंदनरेस । महामंडली पद परमेस ॥१६॥

मोरठा ।

आठ सहस्र सुखहेत, नृप नछप्र सेव सदा ।
कीरति-किरन-समेत, सोहै नरपतिचक्रमा ॥१७॥

घोष ६ ।

एक दिना आनंद महीस । बंठघी सभा सिहासनसीस ॥
मंत्री तथा स्वामिहित नाम । कहै विवेकी सुवचन ताम ॥१८॥
स्वामी यह बसंत रितुराज । सब जन करे महोच्छ्रवकाज ॥
नंदीसुर-सत अवसर येह । करिये प्रभु-पूजा जिन गेह ॥१९॥
पूजा सदा पाप निरवर्त्त^१ । पर्वसंजोग महाफल फल ॥
परम पुन्यकी कारन आन । नहीं जगतमें जग्यसमान^२ ॥२०॥

शोभा ।

जिनपूजा की भावना, सब दुखहरन-उपाय ।
करते जो फल संपर्ज^३, गो बरन्यी किमि जाय ॥२१॥

घोष ६ ।

सुनि राजा मंत्री उपदेस । नगर महोच्छ्रव कियो विसेस ॥
करि सनान जिनमदिर जाय । जनिविब पूजे विहसाय ॥२२॥
बहुविध पूजा दरब मनोग । धरे आन जिनपूजनजोग ॥
भावभक्तिसे मंगल ठयो । राजाके मन ससय भयो ॥२३॥

१, नष्ट धरे २ पूजा के समान, ३ उत्पन्न धरे ।

विपुलमती मुनिवर तिहि थान । इरतन कारन आये जान ॥
तिन पूजि नृप पूछै येह । नो मुनींद्र मुक्त मन मंदेह ॥२५॥

गेहा ।

प्रतिमा घात पखानकी, प्रगट अचेतन अग ।
पूजक जनकों पुन्यफल, ब्यो कर देय अभग^१ ॥२५॥
तुम जगमें नमय-तिमिर-दूरकरन रविरूप ।
एह दुक्त भरम मिटाइये, करे वीनती नृप ॥२६॥
तब ग्यानी गनधर कहै, नमाधान नुन राय ।
भवि-जनकों-प्रतिमा भगति, महापुन्य-फलदाय ॥२७॥
भाब नुभानुभ जीवके, उपलै कारन पाय ।
पुन्य पाण तिननों बधै, यों भाष्यो जिनराय ॥२८॥
कुमुम^२ बरन को जोग लहि, जंमे फटिक^३ पखान ।
अत्नस्वाम दुतिकों धरै, यही जीवकी बान^४ ॥२९॥
सो कारन है दोय विध, अतरंग बहिरग ॥
तिनके ही उर आय है, जे नमके मरवग^५ ॥३०॥
बाहिज कारन जानियो, अतरगको हेन ।
मोई अंतरभाब नित. कर्मबचकों देत ॥३१॥
जिन परिनामन पुन्य बहु, बधै अन्यथा नाहि ।
तिन भावनकों निमित्त है, जिनप्रतिमा जगमाहि ॥३२॥

वीतरागमुद्रा निरखि, सुधि^१ आवै भगवान ।
 वही भाव कारन महा, पुन्यबंधकी जान ॥३३॥
 रागद्वेषवर्जित समल^२, सुखदुखदाता नाहि ।
 वपनवत भगवान हैं, यह धारों उरमाहि ॥३४॥
 तिनकी चितन ध्यान जप, धुति पूजाविधिधान ॥
 सुफल फल निज भावसी, ह्वै मुफती सुखदान ॥३५॥
 जैसे गुन प्रभुके फहे, ते जिन मुद्रामाहि ।
 थिरसरूप रागादिधिन, रूपन आयुध नाहि ॥३६॥
 जद्यपि सिल्पीकृत कृतम, जिनकरविम्व्य अचेत ।
 तदपि सही अंतरविषय, मुनभावनकों हेत ॥३७॥
 और एक दिष्टांत^३ अथ, सुन अवनोपति^४ सोय ।
 जियके उर दृष्टांतसों, समे रहै न कोय ॥३८॥

बोपट ।

गनिका^५ धरी चितामे जाय । विसनी पुरुष देखि पद्यताय ॥
 जो जीवत मुझ मिलती जोग । तो मैं करतो वाञ्छित भोग ॥
 स्वान^६ कहै उर क्यों यह दही^७ । मैं निज भञ्छन करती सही ॥
 पुनि तिहि देख कहै मुनिराय । क्यों न कियो तप यह तन पाय ॥
 इहिविध देखि अचेतन अंग । उपजं भाव पाय परसग^८ ॥
 तिन ही भावनके अनुसार । लाग्यो फल तिनकी तिहि वार ॥

१ याद २ निर्मल ३ दृष्टांत ४ राजा ५ वेण्या ६ कुसा ७ जली

८ निर्मल ।

दोहा ।

व्यसवी नर नरकहिं गयो, लह्यौ भूखदुख स्थान ॥

साधु सुरग पहुँचे सही, भावनको फल जान ॥४२॥

चौपई ।

यो जिनबिब अचेतनरूप । सुखदायक तुम जानो नूप ॥

कारनसम कारज संपज^१ । यामै^२ बुध^३ ससै नहिं भजै ॥४३॥

दोहा ।

जैसै चितामनि रतन, मनवांछितदातार ।

तथा अचेतन बिब यह, वाछापूरनहार ॥४४॥

ज्यो जांचत सुख कलपतरु, दानो जनको देय ॥

त्यो अचेत यह देत है, पूजकको सुख श्रेय ॥४५॥

मनिमत्रादिक औषधी, हैं प्रतच्छ जडरूप ।

विषरोगादिकको हरें, त्यो यह अघहर नूप ॥४६॥

जडसरूपको पूज पद, प्रगट देखिये लोय^४ ॥

राजपत्र^५ सिर धारिये, मुद्रा^६ अकित होय ॥४७॥

राजपत्र सिर धारिये, राजाको भय मानि ।

जिनवरमुद्रा पूजिये, पातकको^७ डर जानि ॥४८॥

प्रतिमापूजन चितवन, दरसनआदि विधान ।

हैं प्रमान तिहुँ कालमै, तीन लोकमै जान ॥४९॥

जे प्रतिमा पूजे नहीं निदा करे अजान ।

तीन लोक तिहुकालमै, तिनमम अघम^८ न आन^९ ॥५०॥

१ बने २ बुद्धिमान ३ लोक ४ राजा का प्रमाण ५ म्हीर लकी हुई ६ पाप
७ नीच ८ दूतरा ।

जे प्रतिमा पूजें सदा, भावभगति-विधि-सुद्धि ।
 तिनकी जनम सराहिधे, धन तिनकी सद्बुद्धि ॥५१॥
 हत्यादिक उपदेस सुनि, आई उर परतीत^१ ।
 जिनप्रतिमापूजनविधि, धरी राय विद प्रीत ॥५२॥

गी०ई ।

तिस श्रीसर^२ मुनि धरनं ताम । शीनभवनवरती जिनधाम ॥
 भानुविमानविधिं जिनगेह । सो पहले धरनं धरि नेह ॥५३॥
 रतनमई प्रतिमा जगमगे । कोटभानुछाव^३ छीनी^४ लगं ॥
 निरुपम रचना विविध विसाल । सूरजदेय नमं तिहुं काल ॥५४॥
 सुन श्रानंदो^५ श्रानंदराय । विकसत श्राननं श्रग न माय ॥
 जब सदेहसत्य निरबरे^६ । तब अवस्य उर सुख विस्तरं ॥५५॥
 प्रात साभ मंदिर चढि सोय । अर्घं देय रविसम्मुख होय ॥
 करि जिनविबनकी मन ध्यान । अस्तुति करं राग मन श्रान ॥
 रविविमान मनिकचनमई । निरमापो अद्भुत छवि छई ॥
 जैनभवनकरि मडित सोय । देवत जनमन अवरज होय ॥५७॥
 पूजा तहां करं नित राय । महा महोच्छ्रव हर्षं बढ़ाय ॥
 प्रतिदिन देय दया उर श्रान । दीन दुखित जनको बहु दान ॥५८॥
 यह नितनेम करं भूपाल । चली नगरमं सोई चाल ॥
 सब सूरजको करं प्रनाम । देखादेखि चलयो मत ताम ॥५९॥

१ विग्रहाम २ समय ३ करौड़ मूय की नामा ४ कीली ५ प्रमत्त हुषा ६ मुख
 । नष्ट होव ।

समझें नही मूढ परनये । भानुउपासक तवसौं भये ॥
 जो महत्^१ नर कारज करै । ताकी रीत जगत आचरं ॥६०॥
 यो बहु पुन्य करै भूपाल । सुखमें जात न जान्यौ काल ॥
 एक दिना निजसभा नरेस । निवसे^२ मानों सुरगसुरेस ॥६१॥
 धवल^३ केस देख्यौ निज सीस । मन कप्यो सोचै नरईस ॥
 जाहि देखि मनउत्सव घटै । कामी जीवनकौ उर फटै ॥६२॥
 सो लखि सेत^४ बाल भूपाल । भोगउदास भये ततकाल ॥
 जगतरीति सब अथिर असार । चित्तं चित्तमें मोह निवार ॥६३॥
 बाल अवस्था भई वितीत । तरुनाई आई निज रीत ॥
 सो अब बीती जरा^५ बसाय । मरन दिवस यो पहुचै आय ॥६४॥
 बालक काया कूपल सोय । पत्ररूप जीवनमें होय ॥
 पाको पात^६ जरा तन करै । काल बयारि^७ चलत भर^८ परै ॥
 कोई गर्भमाहि खिर जाय । कोई जनमत छोडै काय ॥
 कोई बाल दसा धरि मरै । तरुन अवस्था तन परिहरै ॥६६॥
 मरन दिवसकौ नेम न कोय । याते कछु सुधि परै न लोय ॥
 एक नेम यह तो परमान । जन्म धरै सो मरै निदान^९ ॥६७॥
 महापुरुष उपजे बडभागि । सब परलोक गये तन त्यागि ॥
 ससारी जन अपनी बार । पूरबउदै करै अनुसार ॥६८॥
 परवत्^{१०} पतित नदीके न्याय^{११} छिनही छिन थिति^{१२} बीतो जाय ।
 रागअधप्रानी जगमाहि । भोगमगन कछु सोचै नाहि ॥६९॥

१ बडे २ बसे ३ सफेद ४ सफेद ५ बुढापा ६ पत्ता ७ हुवा ८ झडपडे ९ आखिर

१० पहाड मे गिरने वाली ११ तरह १२ स्थिति ।

अतकाल जब पहुँच आय । कहा होय जो तब पद्यताय ॥
 पानी पहले बंध जो पाल । वही काम आवे जल-काल ॥७०॥
 यही जान आतमहितहेत । करे बिलब' न संत सुचेत ।
 आज काल जे करत रहार्हाह । ते अजान पीछे पद्यताहि ॥७१॥
 रात दिवस घटमाल' सुभाव । मरि मरि जलजीवनकी प्राय ॥
 सूरज चाद बेल ये दोय । काल रहट नित फेरं सोय ॥७२॥

दोहा ।

राजा राना छत्रपति, हाथिन के घसवार ।
 मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी वार ॥७३॥
 दलबल' देई देवता, मात पिता परिवार ।
 मरती विरिया' जीवकी, कोउ न राखतहार ॥७४॥
 दामबिना निर्धन दुखी, तिसनावस धनवान ।
 कहू न सुख ससारमें, सब जग देख्यो छान ॥७५॥
 आप अकेला अवतरै', मरं अकेला होय ।
 यो कबही इस जीवका, साथी सगा न कोय ॥७६॥
 जहा देह अपनी नहीं, तहा न अपनी कोय ।
 परमम्पति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ॥७७॥
 दिव' चाम'-चादर-मढी, हाड पींजरा देह ।
 भीतर या सम जगतमें, और नहीं धिनगेह' । ७८॥

१ देर २ अरहट के पक्षी को माला ३, मना की शक्ति ४ समय ५ पैदा
 हा ६ अमर्क ७ अमरा ८ धृगा का स्थान ।

सोरठा

मीहनीद के जोर, जगवासी घूम सदा ।
कर्मचोर चहुँ ओर, सरबस लूटे सुधि नहीं ॥७६॥
सतगुरु देहि जगाय, मीहनीद जब उपसमे^१ ।
तब कछु बनै उपाय, कर्मचोर आवत रुक ॥८०॥

दोहा ।

ग्यान दीप तप तेल भरि, घर सौधे^२ भ्रम छोर ।
याविध बिन निकसे नहीं, पैठे^३ पूरब चोर ॥८१॥
पंचमहाव्रत-सचरन, समिति पंच परकार ।
प्रबलपच इंद्रीविजय, धार निर्जरा सार ॥८२॥
चौदह राजु^४ उतग^५ नभ, लोक पुरुषसठान^६ ।
तामै जीव अनादिमो, भरमन है बिन ग्यान ॥८३॥
जाचे^७ सुरतरु^८ देहि सुख, चितत चितारन ।
बिन जाचे बिन चितवे, धर्म सकल सुख-दान ॥८४॥
घन-रुन-कचन-राजसुख, सब सुलभ करि जान ।
दुर्लभ है ससारमें, एक जथारथ^९ ग्यान ॥८५॥

चौपड़ी ।

छहिविध भूप भावना भाय । हित उद्यम चित्यो मन लाय ॥
बबमो मोह ममत निरवारि । उठ्यो धीर धीरज उर धारि ८६
जेठे^{१०} मुतको दीनों राज । आप चलयो सिवसाधनकाज ॥

१. शान्त हो २ लोके ३ घुमे ४ एक नाप ५ ऊँचा ६ पुरुष के प्राकार
७ मागन पर ८ रूपवृत्त ९ यथाय-मन्थक १० दहे ।

सागरदत्त मुनीसुरपास । संजम लियो तजो जगग्रास ॥८७॥
 घनें भूप भूपतिके संग । घरे महाव्रत निर्भय अंग ॥
 अब आनन्द महामुनि घोर । वननिवास विचरें वन बोर ॥८८॥
 दुद्धर^१ तप बारह विध करे । दुविध सग-भमता परिहरै ॥
 तिनके नाम कहू कछु धार । जिनसासन जिनको विस्तार ॥८९॥
 प्रथम महातप अनसन^२ नाम । दूजो ऊनोदर^३ गुणधाम ।
 तीजो है व्रतपरिसरयान । रसपरित्याग चतुर्थम मान ॥९०॥
 पंचम भिन-सयनासन सार । कायकलेस छठी अविकार ॥
 यह षटविध बाहज तप जान । अब अन्तर तप सुनी सुजान ॥९१॥
 पहले प्राद्धित^४ विनय दुतीय । वैयायत तीजो गन लीय ॥
 चौथो अन्तरग सिञ्जाय^५ । पंचम तप व्युत्सर्ग बताय ॥९२॥
 षष्ठम ध्यान हरै सब खेद । ये अन्तरतप के सब भेद ॥
 अब इनको संक्षेप सरूप । सुनी सत तजि भाव विरूप ॥९३॥
 जिनके मुनत बंध सुभष्यान । सेवत पद लहिये निरवान ॥
 तप बिन तीनकाल तिहुं लीय । कर्मनास कवही नाह होय ॥९४॥
 दिनसो लेय वरस लगि करे । चार प्रकार असन परिहरै ॥
 राग-रोग-निर्दलन उपाय । सो अनसन भाख्यो जिनराय ॥९५॥
 पौन अर्ध चौथाई टेक । एक ग्रास अथवा कन एक ॥
 ऐसी विध जो भोजन लेत । ऊनोदर आलस हर लेत ॥९६॥
 जैसी प्रथम प्रतिग्या करे । ताही विध भोजन आदरै ॥

१ घोर २ उपवास ३ भूख से कम जाना ४ प्रायश्चित्त ५ स्वाध्याय ।

मो कहिये व्रतपरिसख्यान । आसाव्याधि-विनासन जान । ६७।
 लवनादिक रस छारि उपाध । नीरसभोजन भुजै साध ॥
 रसपरित्याग कहावै एम । इन्द्रियमदनासन यह नेम ॥ ६८ ॥
 सून्यगेह गिरि गुफा मसान । नारि-नपु मक-वर्जित थान ॥
 वसै भिन्न-सयनासन सोय । यासौ सिद्धि ध्यानकी होय । ६९।
 ग्रीषमकाल वसै गिरि-सीस । पावसमै तरुवरतल दीस ॥
 सीतसमय तटिनीतट^१ रहै । काय कलेस कहावै यहै ॥ ६० ॥

दोहा ।

या तपके आचरनसौ, सहनसील मुनि होय ।

अब अन्तर-तप-भेद छह, कहू जिनागम जोय ॥ १०१ ॥

चौपई ।

जो प्रमादवस लागै दोष । सोधै ताहि छोरि छल रोष ॥

आचारजवानी अनुसार । यही प्रथम प्राच्छित तप सार । १०२।

जे गुनजेठे^२ साधु महत । दरसन ग्यानी चारितवत ॥

तिनकी विनय करै मनलाय । विनय नाम तपसो सुखदाय १०३

रोगादिक पीडित अविलोय^३ । बाल बिरध मुनिवर जो होय

सेव करै निजसंजम राखि । सो वैयाव्रत आगमसाखि । १०४।

सकतिसमान सकल गुन ठाठ । करै साधु परमागमपाठ ॥

परमोत्तम तप सो सिद्धभाय । जासौ सब ससय मिटजाय १०५

निजसरीरममता परिहरै । काउसग्गमुद्रा दिढ धरै ॥

अन्तर बाहर परिग्रह छार । सोई तप व्युत्सर्ग उदार ॥ १०६ ॥

भारत रीति निवारं शोभ । धर्मं सकल ध्याये धिर होय ॥
जहा सकल चिन्ता मिट जाहि । यही ध्यानतप जिनमतमार्हि १०७
दाहा ।

यह बारह विध तप धियम^१, तपं महामुनि धीर ॥
सहै परीणह बोम गो, ते धव धरनी धीर ॥१०८॥

दाहा

दुष्ठा तृष्ठा हिम उत्तन, दृष्ट मंतक^२ दुष्प्रभारी ।
निरावरन तन शरति, त्वेद उपजावन नारी ॥
चरिया आसन नयन, वृष्ट वायक^३ घघ वपन ।
जाचे नहीं फलाभ रोग, तिन-फरस निबंधन^४ ॥
मलजनित भान-सनमानयम, प्रग्या^५ धीर श्रग्यान कर ।
दरसन मलीन दाईम सच, साधुपरीणह जान मर ॥१०९॥

दाहा

सूत्रपाठ अनुमार ये, कहे परीणह नाम ॥
इनके दुष्प्र जे मुनि सहै, तिनप्रति मदा प्रनाम ॥११०॥

श्रीश्यामनी छन्द

अनसन ऊनोदर तप पोषत, पाखमास दिन द्योत गये हैं ।
जोग न वर्न जोग भिच्छाविधि, सूप अंग सय सिथिल भये हैं ।
तब वह दुसह भूखकी वेदन, सहत साधु नाहि नेक नये हैं ।
तिनके धरनफमल प्रति दिन दिन, हाथ जोरि हम सीस उये हैं ।
पराधीन मुनिवरकी भिच्छा, परधर लेहि कहै कसु नाहीं ।

१. बहम बडिम २. मण्डर ३. बषग ४. कारण ५. बुद्धि ।

प्रकृति-विरोधि पारना भुंजत, बढत प्यासकी प्रास तहाहीं ।
 ग्रीषमकाल पित्त अति कोपे, लोचन दोय फिरे जब जाहीं ।
 नीर न चहै सहै ऐसे मुनि, जयवते वरतौ जगमाहीं ॥११२॥
 सीतकाल सबही जन कापे, खडे जहा बन विरछ^१ डहै हैं ।
 भ्रुम्भा वायु वहै वरसा रित, वरसत बादल भूमरहे हैं ॥
 तथा धीर तटिनोतट^२ चौबट, ताल-पालपै^३ कर्म दहै हैं ।
 सहै सँभाल सीतकी बाधा, ते मुनि तारनतरन कहे हैं ॥११३॥
 भूख प्यास पीडे^४ उर अतर, प्रजलै^५ आत देह सब दागै^६ ।
 अग्निमरूप घूप ग्रीषमकी, ताती बाल^७ भालसी^८ लागै ॥
 तपै पहार ताप तन उपजै, कोपै पित्त दाहजुर जागै ।
 इत्यादिक ग्रीषमकी बाधा, सहत साधु धीरज नहि त्यागै ॥
 डास मास माखी तन काटे, पीडे बनपछी बहुतेरे ।
 डसं व्याल^९ विषयाले बीछू, लगै खजूरे^{१०} आन घनेरे ॥
 सिंह स्याल सुंडाल^{११} सतावें, रोछ रोभ दुख देहि बडेरे ।
 ऐसे कष्ट सहै समभावन, ते मुनिराज हरी अघ मेरे ॥११५॥
 अतर विषय-वासना वरतें, बाहर लोकलाजभय भारी ।
 तातें परम दिगबरमुद्रा, धर नहि सकें दोन ससारी ॥
 ऐसी दुद्धर नगन परीषह, जीतै साधु सीलव्रतधारी ।
 निर्विकार बालकवत निर्भय, तिनके पायन ढोक हमारी ॥११६॥

१ वृक्ष २ नदी किनारे ३ तालाब के किनारे ४ दुःख दे ५ जल ६ कुलसे
 ७. गरम हवा ८. तीक्ष्ण ९ सर्प १० कछले ११ हाथी ।

देश कालकी कारन लहिक, होत अचन^१ अनेक प्रकार ।
 तब तहां खिल होहि जगवासी कलमलाय धिरतापव छारं ॥
 ऐसी भरति परीपह उपजत, तहा धीर धीरज उर धारं ।
 ऐसे साधनकी उर अंतर, बसों निरंतर नाम हमारं ॥११७॥
 जे प्रधान केहरिकी^२ पकरं, पन्नग^३ पकरि पावसों चपत^४ ।
 जिनकी तनक देखि भी बाकी, कोटिक सूर दीनता जंपत ॥
 ऐसी पुरुष-पहार-उडावन,—प्रलय-पवन तिय^५-वेद पयपत^६ ।
 धन्य-धन्य ते माधु साहसो, मनसुमेरु जिनकी नहि कंपत ॥११८॥
 चारहाथ परवान निरखि पय, चलत दिष्ट इत उत नहि तानं
 कोमल पांय कठिन धरती पर, धरत शीर बाधा नहि मानं ॥
 नाग^७ तुरंग^८ पासकी चढ़ते, ते सवाद^९ उर यादि न आनं ।
 यों मुनिराज भरं चर्यादुष, तब विषकर्म कुलाचल^{१०} भानं ॥
 गुफा मसान सैल^{११} तरु^{१२}-कोटर, निवसं जहा सुद्धि नू हेरं ।
 परिमित काल रहें निहचल तन, बारबार आसन नहि फेरं ॥
 मानुष देव अचेतन पसुकृत, बैसे विपत आन जब धेरं ।
 ठौर न तजं भजं धिरता पद, ते गुरु सदा बसो उर मेरं ॥१२०॥
 जे महान सोनेके महलन, सुन्दरसेज सोय सुख जोवं ।
 ते अब अचलअंग एकासन, कोमल कठिन भूमिपर सोवं ॥
 पाहन-खड कठोर कांकरी, गडत कोर कायर नहि होवं ।
 ऐसी सयन-परीपह जीतत, ते मुनि कर्मकालिमा धोवं ॥१२१॥

१. दुली २. सिंह ३. सांप ४. कुचसे ५. स्त्री वेद ६. प्रकपत=कंपित
 ७. हाथी ८. घोडा ९. आनन्द १०. बहाड ११. पर्वत १२. वृक्षका लोलला नाग

जगत जीव जावत^१ चराचर, सबके हित सबके सुखदानी ।
 तिनें देख दुबंचन कहें द्रुठ, पाखडी ठग यह अभिमानी ॥
 मारौं याहि पकरि पापीकौं, तपसी-भेष चोर है छानी^२ ।
 ऐसे वचनवाणकी वर्षा, छिमाढाल ओढे मुनिग्यानी ॥१२२॥
 निरपराध निबेंर महा मुनि, तिनकौं दुष्टलोग मिलि मारें ।
 केई खंच थभसीं बाघत, केई पावकमै^३ परजारें ॥
 तहा कोप नहिं करहिं कदाचित, पूरबकर्मविपाक^४ विचारें ।
 समरथ होय सहै बध बधन, ते गुरु सदा सहाय हमारें ।१२३॥
 घोर वीर तप करत तपोधन, भयौ खीन सूखो गल बाहीं ।
 अस्थि^५ चाम अवसेस रह्यो तन, नसाजाल भलक्यौ जिसमाहीं ।
 ओषधि असन^६ पान इत्यादिक, प्रान जाय पर जाचत नाहीं ।
 दुद्धर अजाचीक^७ व्रत धारें, करहिं न मलिन घरमपरछाहीं ॥
 एक वार भोजनकी विरियाँ, मौन साधि बसती^८ मै आवें ।
 जो नहिं बनै जोग भिच्छाबिधि, तौ महंत मन खेद न लावें ।
 ऐसे अमत बहुत दिन बीतें, तब तप विरद भावना भावें ।
 यो अलाभकी परम परोषह, सहै साधु सोई सिव पावें ॥१२५॥
 बात पित्त कफ सोनित^९ चारों, ये जब घटै बढें तनमाहें ।
 रोगसजोग सोग तन उपजत, जगत जीव कायर हो जाहें ॥
 ऐसी व्याधि वेदना दाखन^{१०}, सहै सूर उपचार न चाहें ।
 आतम-लीन देहसौं विरकत, जैन जती निज नेम निबाहै ।१२६॥

१ जितने २ छिग ह्रस्वा ३ अग्नि मे ४ फल ५ हड्डी ६ भोजन ७ नहीं
 मांगना ८ नगर-गाँव ९ खून १० कठोर ।

सूखे तिन अरु तोखन काटे, कठिन काकरी पाय बिदारें ।
 रज उड़ि आय परें लोचनमै, तीर फास तन पीर विथारें ॥
 तापर पर सहाय नहिं वाछत, अपने करसों काढ न डारें ।
 यों तिन-परस-परीषहविजई, ते गुरु भवभव सरन हमारें । १२७।
 जावजोव^१ जलन्हौन तज्यौ जिन, नगनरूप बनथान खरे है ।
 चलै पसेव धूपकी बिरिया, उड़त धूल सब अग भरे हैं ॥
 मलिन देहकों देखि महामुनि, मलिन भाव उर नाहिं करे हैं ।
 यों मलजनित परीषह जीतै, तिनै हाथ हम सीस धरे हैं । १२८।
 जे महान विद्यानिधि विजई, चिरतपसी^२ गुन अतुल भरे है ।
 तिनकी विनय चचनसों अथवा, उठि प्रनाम जन नाहिं करे हैं ॥
 तौ मुनि तहा खेद नहिं मानै, उर मलीनता भाव हरे है ॥
 ऐसे परमसाधुके अहनिशि^३, हाथ जोरि हम पाय परे हैं । १२९।
 तर्क छन्द व्याकरण कलानिधि, आगम अलंकार पढ जानै ।
 जाकी सुमति देखि परवादी, बिलखे हौंहिं लाज उर आनै ॥
 जैसें नाद^४ सुनत केहरिकी^५, बनगयन्द^६ भागत भय मानै ।
 ऐसी महाबुद्धिके भाजन, पै मुनीस मव रंच न ठानै ॥ १३० ॥
 सावधान बरतै निसिवासर, सजमसूर परमवैरागी ।
 पालत गुपति गये दीरघ दिन, सकल संग-ममतापरित्यागी ॥
 अवधिग्यान अथवा मनपरजय, केवलकिरन अजों नहिं जागी ।
 यों विकल्प नहिं करीह तपोधन, सो अग्यानविजई बड़भागी ।

१ यावज्जीव २ चिरकाल के साधु ३ रात दिन ४. आवाज ५. सिंहकी ६. बन का हाथी ।

चौपाई ।

बिनादोष दुर्जन दुख देय । समरथ होय सकल सह लेय ॥
 क्रोध कषाय न उपजं जहा । उत्तम छिमा कहावै तहां ॥१३६॥
 ग्राठ महामद पाय अनूप । निरभिमान बरतै मृदु^१रूप ॥
 मानकषाय जहा नहि होय । मार्दव^२ नाम धरम है सोय ॥१३७॥
 जो मनचित्तै सो मुख कहै । करै कायसौं कारज वहै ॥
 मायाचार न उर पाइये । आर्जव^३ धर्म यही गाइये ॥१३८॥
 बोलै वचन स्वपरहितकार । सत्यस्वरूप सुधा-उनहार ॥
 मिथ्यावचन कहै नहि भूल । सोई सत्य धर्मतरुमूल ॥१३९॥
 पर-कामिनि पर-दरबमभार । जो विरक्त बरतै छल छार ॥
 अतर सुद्ध होय सरवग । सोई सौच^४ धर्मकी अग ॥१४०॥
 मन समेत जो इंद्रो पच । इनको सिधिल करै नहि रंच ॥
 अस थावरकी रच्छा जोय । सजम धर्म बखान्यो सोय ॥१४१॥
 ख्याति लाभ पूजा सब छड । पच करन^५को दीजै दड ॥
 सो तपधर्म कह्यो जगसार । अनसनादि बारह परकार ॥१४२॥
 सजमधारी व्रती प्रधान । दीजै चउविध उत्तम दान ॥
 तथा दुष्टविकल्प परिहार । त्यागधर्म बहु सुखदातार ॥१४३॥
 बाहिज परिग्रहकों परित्याग । अतर ममता रहै न लाग ॥
 आर्किंचन यह धर्म महान । सिवपददायक निहचै जान ॥१४४॥
 बड़ी नारि जननी सम जान । लघु पुत्री सम बहिन बखान ॥
 तजि विकार मन बरतै जेह । ब्रह्मचर्यं परिपूरन एह ॥१४५॥

१ कोमल २ मद न करना ३ निष्कपट ४ लोभ रहितपना ५ इन्द्रियां ।

साधुसमाधि कहावे सोय । यही भावना अष्टम होय ॥१५४॥
दसबिध साधु जिनागम कहे । पथ'पीडित रोगादिक गहे ॥
तिनकी जो सेवा सतकार । यही भावना नौमी सार ॥१५५॥
परमपूज्य आत्म अरहंत । अतुल अनंत चतुष्टयवंत ॥
तिनकी थुति नति^२ पूजा भाव । दसम भावना भवजल-नाव ।
जिनवरकथित अर्थ अवधार । रचना करे अनेक प्रकार ॥
आचारजकी भक्तिविधान । एकादसम भावना जान ॥१५७॥
विद्यादायक विद्यालीन । गुणगरिष्ठ पाठक^३ परवीन ॥
तिनके चरन सदा चित रहै । बहुश्रुतिभक्ति बारमी यहै ॥१५८॥
भगवतभाषित अर्थ अनूप । गनधरग्रंथित ग्रंथसरूप ॥
तहा भक्ति बरतै अमलान । प्रवचनभक्ति तेरमी जान ॥१५९॥
षट आवश्यक क्रिया विधान । तिनकी कबही करे न हान ॥
सावधान बरतै थिरचित्त । सो चौदहमी परमपवित्त ॥१६०॥
करि जप, तप पूजा व्रत भाव । प्रगट करे जिनधर्मप्रभाव ॥
सोई मारग परभावना । यहै पचदसमी भावना ॥१६१॥
चार प्रकार संघसौ प्रीति । राखै गाय-बच्छकी रोति ॥
यही सोलमी सबसुखदाय । प्रवचनवात्सल्य अभिधाय^४ ॥१६२॥

दोहा

सोलहकारन भावना, परम पुन्यकौ खेत ।

भिन्न भिन्न अरु सोलहो, तीर्थकरपद हेत ॥१६४॥

बधप्रकृति जिनमतविषे, कही एकसौ बीस ।

१ धके हुए २ नमस्कार ३. उपाध्याय ४ नाम ।

सौ सत्रह मिथ्यातमै, वाघत है निसदीस ॥१६४॥
 तीर्थकर आहार^१-दुक, तीन प्रकृति ये जान ॥
 इनको वध मिथ्यातमै, कह्यो नहीं भगवान ॥१६५॥
 तातं तीर्थकर प्रकृति, तीनों समकितमाहि ॥
 सोलह कारनसौ वध, सबकी निहचं नाहि । १६६॥
 सोरठा ।

पूज्यपाद मुनिराय, श्रीसरवारथसिद्धि मै ।
 कह्यौ कथन इहि भाय, देखि लीजियो सुबुधिन ॥१६७॥
 कुमुलता

सोलह कारन ये भवतारन, सुमरत पावन होय हियौ ।
 भावं श्रीआनन्दमहामुनि, तीर्थकरपदवध कियौ ॥१६८॥
 काय कषाय करी कृस^२ भृति ही, सत सजम गुण पोढ^३ कियौ ।
 तपबल नाना रिद्धि उपन्नी, राग विरोध निवार दियौ ॥
 जिस वन जोग धरं जोगेसर, तिस वनकी सब विपत टले ।
 पानी भरहि सरोवर सूखे, सब रितुके फलफूल फले ॥१७०॥
 सिहादिक जे जातविरोधी, ते सब बंरी वर तजै ।
 हस भुजगम मोर मजारी^४, आपसमें मिलि प्रीति भजै ॥१७१॥
 सौहें साधु चढे समतारथ, परमारथ पथ गमन करे ।
 सिवपुर पहुचनकी उर वाछा, और न कछु चित चाह धरे ॥
 देहविरक्त ममत्तबिना मुनि, सबसौं मंत्री भाव बहैं ।
 आतमलीन अदीन^५ अनाकुल, गुन चरनत नहि पार लहैं ॥

१ आहारक आहारक मिश्र २ दुबल ३ प्रीढ-मजदूत ४ विल्ली
 ५ दीनता के भाव बिना ।

एक दिना ते छीर बनांतर, ठाड़े मुनि वंराग भरे ।
 पौनपरीषहसौं नहिं कापे, मेरुसिखर ज्यो अचल खरे । १७४।
 सो मर नरक कमठचर पापी, नानाभाति विपत्ति भरी ।
 तिसही काननमै विकटानन^१, पचानन^२को देह धरी । १७५।
 देखि दिगबर केहरि^३ कोप्यौ पूर्वभवातर बंरदह्यौ ।
 धायौ दुष्ट दहाड ततच्छन, आन अचानक कंठ गह्यौ । १७६।
 तीखे नखन विदारै काया, हाथ कठोरन खड करै ।
 बाकी दाढनसौं तन सेदै, वदन^४ भयानक ग्रास भरै । १७७।
 यो पसुकृत परचड परीषह, समभावनसौं साधु सही ॥
 क्रोध विरोध हिये नहिं आन्यो, परमछिमा उरमांभ बही ।
 धनि धनि श्रीआनन्दमुनीसुर, धनि यह घोरजभाव भजे ॥
 ऐसे घोर उपद्रवमै जिन, जोगजुगतसौं प्राण तजे । १७८।
 अतसमयपरजत तपोधन, सुभभावनसौं नाहिं चये ।
 आनत नाम स्वर्गमै स्वामी, सुरगनपूजित इन्द्र भये । १८०।

दोहा ।

सुरगलोक बरनन लिखौ, जथासकति सुखरीत ।
 धर्म धर्म के फलविषे, ज्यो मन उपजं प्रीत ॥ १८१ ॥ -

चोपई ।

चदकाति सूंगामनिमई । नानाबरन भूमि बरनई ॥
 रातदिवसको भेद न जहा । रतनउद्योत निरंतर तथा । १८२।
 मनि कगुरे कचन प्राकार । औंड़ी परिखा^५ ऊचे द्वार ॥

१ मयकर मुख वामे २ सिंह ३ सिंह ४. मुख ५ खाई ।

तोरन तुंग रतनगृह लसै । ऐसे सुरगलोकपुर वसै ॥१८२॥
 चपक पारिजात मदार । फूलन फल रही महकार ॥
 चैतविरछतं बढयो सुहाग^१ । ऐसे सुरग रवाने^२ वाग ॥१८४॥
 विपुल^३ वापिका^४ राजें खरीं । निर्मल नीर सुधामय भरीं ॥
 कचनकमलछई छविवान । मानिकखडखचित सोपान ॥१८५॥
 कामधेनु सोहैं सब गाय । कलपवृच्छ सबही तरराय ॥
 रतनजाति चितामनि सबै । उपमा कौन सुरगकों फवै ॥१८६॥
 गान करं कहि सुरसुन्दरीं । वन-वीथिन^५ बंठी रसभरीं ॥
 कहीं देवगन वनितासग । लीलावन विचरै मतरग ॥१८७॥
 मद सुगधि बहै नित चाय । पहुपरैनुरजित^६ सुखदाय ॥
 आंधी मेह न कबहीं होय । ताप तुसार^७ न व्यापं कोय ॥१८८॥
 रितुकी रीति फिरै नहि कदा । सोमकाल सुखदायक सदा ।
 छत्रभग चोरी उतपात । सुपने नहीं उपद्रवजात ॥१८९॥
 ईति भीति भूचाल न होय । बंरो दुष्ट न दीसं कोय ॥
 रोगी दोखी दुखिया दोन । बिरधवंस^८ गुणसपतिहीन ॥१९०॥
 बढती अगविकलता कही । ये सब सुरगलोकमै नहीं ॥
 सहज सोम सुन्दर सरवग । सब आभरनअलकृत अग ॥१९१॥
 लच्छनलछित सुरभि सरीर । रिद्ध-सिद्धमदिर मनधीर ॥
 कामसरूपी आनदकद । कामिनिनेत्रकमलिनीचद ॥१९२॥
 बदन प्रसन्न प्रीतरस भरे । विनयबुद्धि विद्या आगरे ॥

१ सोन्दर्य २ सुन्दर ३ घनी ४ बावडी ५ गली ६ पुष्प पराग से
 अनुरजित ७. पाला ८ बुढापा ।

घों बटुगुरुमंडित स्वयमेव । ऐसे सुरगनिवासी देव ॥१६३॥
दोहा ।

सत्तितवचन सीलावती, मुभलच्छदन सुकुमाल ।
सहजसुगंध सुहावनी, जया मानती माल ॥१६४॥
सीलरूप लावत्यनिधि, हायभावरसलीन ।
गोमा सुभगसिगारकी, सकलकलापरधीन ॥१६५॥
निरत गीत सगीत मुर, सब रसरीतमंभार ॥
कोविद' होंहि सुभावतं, सुरगलो'की नार ॥१६६॥
पंचइन्द्रिमनको मरा, जे जगमें सुगहेत ।
तिन सबहीकी जानियो, सुरगलो'कमकेत ॥१६७॥
चोपई ।

स्त्यादिक बहुसपतिथान । देवलोकमहिमा असमान' ॥
आनतवर' विमान है जहा । घरची जनम सुरपतिने तहां ॥
दोहा ।

उपज्यो सपुट' गर्भतं, तेज पु ज प्रति चढ ।
मानों जलधरपटलतं, प्रगट्यो वामिनि"-दढ ॥१६८॥
एक महूरनमें तहा, संपूरन तन धार ।
किधों रतनकी सेज तजि, सोयत उठ्यो कुमार ॥२००॥
मनिकिरीट माथे दिपं, आनन अधिकसुरूप ।
फानन कुण्डल जगमगं, पानन कटक अनूप ॥२०१॥
भुजभूषनभूषित भुजा, हिये हार छबि देत ।

१ बुद्धिमान २ समानता रहित ३ तरहवां स्वर्ग ४ उल्लास चीमा ५ विजली

अग अंग इत्यादि बहु, सब आभरनसमेत ॥२०२॥

चौपई ।

सनै सनै देखै दिस सही । लोचनकोर कान लगि रही ॥
 विसमयवत होय मन ताम । कहै कौन आयौ किस धाम ॥
 अहो कौन यह उत्तम देस । सकलसपदाथान विसेस ॥
 कचनके मन्दिर मनिजरे । दीसै दिव्य अपछराभरे ॥२०४॥
 अति उत्तंग^१ अति ही दुति धरै । मध्य सभा मंडप मनहरै ॥
 सिंहासन अद्भुत इहि ठाम । मानौं मेरुसिखर अभिराम ॥
 अनुपम नाटक देखनजोग । श्रवणसुखद ये गीत मनोग ॥
 ये लावन्यवतीं वरनारि । रूपजलधिबेला^२ उनहारि ॥२०६॥
 ये उतग हाथी मदभरे । तेज तुरगनके गन खरे ॥
 कंचनरथ प्रायकदल^३ जेह । मो प्रति सिर नावै सब येह ॥२०७॥
 सब आनन्द भरे मुझ देख । सब विनीत सब सुन्दर भेख ॥
 जयजयकार करै विहँसाय । कारन कछु जान्यौ नहिं जाय ॥

दोहा ।

इन्द्रजाल अथवा सुपन, कै माया भ्रम कोय ।

यो सुरेस सोचै हिये, पै निरनय नहिं होय ॥२०९॥

चौपई ।

तब तिस थानक देव प्रधान । मनकी बात अवधिसौं जान ॥
 जोगवचन बोलै सिरनाय । ससयहरन स्रवनसुखदाय ॥२१०॥
 हम विनती सुनिये सुरराज । जीवन जनम सफल सब आज ॥

रागत्राग दुखदायक मदा । चारिनजन विन युक्तं न कदा ॥
 सो कारन मुग्गतिमें नाहि । घतकी उदय न या पदमाहि ॥
 ह्या सम्यक्दरसन अधिकार । मकादिक मलवरजित मार२२२
 कं जिनवरको भक्ति महाय । शीर न दीर्घ घमंडपाय ॥
 यह विचारि जिनपूजनहेत । उठ्यो इन्द्र परिवारममेत ।२२३।
 श्रमृतवापिकामें करि न्होन । गयो जहा मनिय जिनभोन ॥
 रतनविम्ब वन्दे विहनाय । भावभगतनों मीम नवाय ।२२४।
 पूजा करी दरव घरि आठ । पुनकितभग पढ्यो युनिपाठ^१ ।
 चंतविरछजिनप्रतिमा जहा । महामहोच्छ्रव कीनी तथा ।२२५।
 यों बहु पुन्य उपायो मही । फेरि आय निज सम्पति गही ॥
 दिव्यभोग भुजे बडभाग । लोकोत्तम जिम सहजमुहाग ।२२६।
 सोभनरूप^२ प्रथम सठान^३ । वमु^४ वैक्रियक मुलच्छनवान ॥
 कोमल सुरभि सचिक्कन देह । सातघातवरजित गुनगेह ।२२७।
 पलकपात लोचनमें नहीं । मलपसेव नख केस न कहीं ॥
 जरा कलेस न चिंता मोग । नाहीं अलप मृत्युभय रोग ।२२८।
 इत्यादिक दुखजोग अनेक । तिनमें नहीं अमरके एक ॥
 आठरिद्धि अनिमादि पसत्य^५ । तिसवल सकलकाज समरत्थ ।
 सुरग लोकके सुखकी कथा । कहें कहा लों बुधबल जया ॥
 वैठि मनोगत विमल विमान । विचरें नभपथ वाछितयान ॥
 कबही मेरु जिनालय गर्भ । कबही आन कुलाचल रम ॥
 दीप समुद्र असख अपार । करै सुरेंद्र सुछंद विहार ॥२३१॥

१. स्तुति २ सुन्दर ३ समचतुरस्र सत्पान ४ आठ ५ प्रशस्त=वत्तम ।

धर्म वर्षमे हर्ष वढाय । तीन वार नन्दीसुर जाय ॥
 पंचकल्याणक समयसुजोग । करै तीर्थपदनमन नियोग ॥२३२॥
 और केवली प्रभुके पाय । दीय कल्याणक पूजै आय ॥
 निज कोठे थिर होय सुग्यान । करै दिव्यवानोरसपान ॥२३३॥
 सभासिहासन वैठि सुरेस । देय सुरनप्रति हितउपदेस ॥
 करै तत्त्ववरनन विस्तार । अनेकांतवानी अनुसार ॥२३३॥
 जे सुर सम्यक्दरसनहीन । तपवल देव भये सुखलीन ॥
 तिनप्रति धर्मवचन उच्चरै । दरसनगुनकी प्रापति करै ॥२३५॥
 इहविध विविध करै सुभकाज । महापुण्य संच सुरराज ॥
 दरसनग्यान रतनभंडार । चारित गुनकी नहि अधिकार ॥२३६॥
 धर्मवासनावासित जोग । करै पुनीत^१ पुण्यफलभोग ॥
 कवहीं सुनै अपछरा-गान । निरखै नाटक निरुपम थान ॥२३७॥
 कवहीं सुभ सिंगाररसलीन । हाव भाव जोवै^२ परवीन ॥
 कवहीं हास्यकथा विस्तरै । वनक्रीड़ा देविन संग करै ॥२३८॥
 यों नानाविध करत विलास । प्रतिदिन सुखसागरमें वास ॥
 साढे तीन हाथ परवान । दिव्यसरीर अतुल दुतिवान ॥२३९॥
 सागर बीस परमथिति^३ जास । बीस पच्छ^४ पर लेय उसास ॥
 बीसहजार वर्ष अवसान^५ । मनसा भोजन करै महान ॥२४०॥
 पंचम पिरथी लों जिस सही । अवधिसकति जिनसासन कही ।
 तावत मान विक्रियाखेत । सकलकाज साधनसुख हैत ॥२४१॥

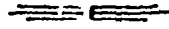
१ पवित्र २ देखे ३ उत्कृष्ट स्थिति ४ पक्षबाडे ५ मन्त ।

असत्यात सुर सेवन पाय । देवोनेत्रकमलदिनराय ॥
 यो पूरवकृत पुन्यसजोग । करे इन्द्र इन्द्रामन भोग ॥२४२॥
 दोहा ।

कहा इन्द्रअहमिन्द्र पद, जनम धरं फिर आय ॥
 जैनधम नृपकी धुजा, लोक-मिखर फहराय ॥२४३॥

इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषाया प्रानन्दरायइन्द्रपदप्राप्तिवर्णन
 नाम तृतीयोऽधिकारः ।

पाँचवाँ अधिकार ।



दोहा ।

बन्दी पारमपदकमल, अमलबुद्धि दातार ॥
 अथ चरनी जिनराजके, पच कल्याणक सार ॥१॥
 चौपई

प्रथम अनंत अन्लोकाकाम । दर्मी दिसा मरजाद न जास ॥
 दूजी दग्ध जहाँ नहि और । मुझ मरूप गगन सब ठौर ॥२॥
 तहा अनावि लोकचिति जान । छोटे' पाँच पुरुष-सठान' ॥
 कटिपे' हाथ सदा धिर रहे । यह मरूप जिनमासन कहै ॥३॥
 पीन' पिढ' बेरुघी मरयग । चौदह राजू गगन उतग ॥
 घनाशार राजू गन ईस । फहे तीन सौ तंतालीस ॥ ४ ॥

१ गीब देवादि हूय २ पुरुष के आकार ३ कमर पर ४ दृष्य ५, मण्डल ।

जोवादिक छह दरब सदीव । तिनसौं भरयो जथा घट घीव ।
 स्वयंसिद्ध रचना यह बनी । ना इस करता हरता घनी ॥५॥
 दरब दृष्टिसौं ध्रौव्यसरूप । परजयसौ उतपतछयरूप ॥
 जैसे समुद सदा थिर लसै । लहर न्याय उपजै अरु नसै ॥६॥
 लोक^१-नाडि तिस मध्य महान । चौदह राजू व्योम उचान ॥
 राजूमित^२ चौड़ी चहुंपास । यह त्रसखेत जिनागम भास ॥७॥
 याके बाहर जगम^३ जीव । समुदघात बिन नाहि सदीव ॥
 तामै तीनों लोक बिसाल । ऊरध मध्य और पाताल ॥८॥
 सोलह स्वर्ग पटल बावस । नव ग्रीवक नव जान रवस ॥
 अनुदिस और अनुत्तर येह । एक एक ही पटल गिनेह ॥९॥
 ये सब त्रेसठ पटल बखान । सिद्धखेत सोहैं सिर थान ॥
 ऊरध लोक बसै इहि भाय । उत्तम सुरथानक सुखदाय ॥१०॥
 अधोलोकमै बहु बिध भेव । सात नरक असुरादिक देष ॥
 मध्यलोक पुनि तीजौ तहां । असख्यात दीपोदधि जहां ॥११॥
 तिनमै सोभावंत सुहात । जबूदीप जगतविख्यात ॥
 लच्छ^४ महाजोजन विस्तार । सूरजमडलकी उवहार ॥१२॥
 वज्रकोट जिस ओट अभंग^५ । परिमित जोजन आठ उत्तंग ॥
 चारों दिस दरवाजे चार । तिनके नाम लिखौं अवघाट^६ ॥१३॥
 विजय नाम पूरबमें जान । वैजयंत दच्छिन दिस ठान ॥
 पच्छिम भाग जयंत दुवार । उत्तरमें अपराजित सार ॥१४॥

१. त्रस नाड़ी २ एक राजू प्रमाण ३ त्रस ४ एक लाख योजन ५ भेद
 रहित ६ धारण करो ।

लवन-समुद्र ग्रातिकारूप^१ । चहुदिम वेदची मजल मन्त्र ॥
 तथा सुदरमन मेरु महान । मध्य भाग मोभा श्रममान ॥१५॥
 अति उतग लख जोजन नोय । रिजुविमान जा ऊपर होय ।
 सब संननमें ऊचो यह । ग्रीव उठाय किचो इम कहै ॥१६॥
 करे कौन गिरि मेरी रीस^२ । जिनपति न्हान होय मुक्त मीन ।
 चारों दिम चारों गजदत । नील निपघसों लगे महंत ॥१७॥
 छह कुलपवंत बडे विचार^३ । पूरव पच्छिम दीरघ सार ॥
 आठ महागिरि दिग्गज नाम । मेरु निकट आठो दिम ठाम ॥१८॥
 कनक^४ वरन सोलह वच्छार । महाविदेहविषं छविमार ॥
 कचनगिरि दीसं परवान । सीता सीतोदा तट थान ॥१९॥
 कुरु भूमार्हि जनक गिरि चार । नील निपघके निकट निहार ।
 चार नाभिगिरि मिथ्या नाहि । मध्यम जघनभोगभूमार्हि ॥२०॥
 विजयारघ पर्वत चौतीस । इतने ही वृषभाचल दीस ॥
 ते मलेच्छमघिखडनविखं । चक्री जहां नांव निज लिखं ॥२१॥
 यो गिरि दीपविषं वरनये । ग्यारह अधिक एक सौ भये ॥
 भद्रसाल बन दोय सुवास । पूरव अपर^५ मेरुके पान ॥२२॥
 दो तरु जबू-संभलतनं । उत्तम भोगभूमिमें वनं ॥
 छह ब्रह्म बडे कुलाचलसीस । पदम महापदमादिक दीस ॥२३॥
 बौस सरोवर और चुनेह । सीता सीतोदामघि तेह ॥
 उत्तम मध्यम जघन विसैस । भोगभूमि छह कही जिनेस ॥२४॥
 महादेस चौतीस सुखेत । ऐरावत अरु भरत समेत ॥

१ छार्ई २ बरावरी ३ विन्तार ४ सोने जंवे रंग के ५ पश्चिम ।

इतनी ही नगरी परवान । आरजखंडमध्य थिर थान ॥२५॥
 उपसमुद्रकी सख्या यही । कछु विनासिक कछु थिर सही ॥
 पूरब दिस दो बाग महत । देवारन्य दीपके अत ॥ २६ ॥
 ऐसे ही पच्छिम दिस दोय । भूतारन्य नाम तिन होय ॥
 गंगादिक सरिता दसचार । चौसठ महा विदेहमभार ॥२७॥
 बारह विपुल विभंगा जेह । महानदी नव्वे सब येह ॥
 इतने ही सब कुंड महान । जहां तरगिनि^१ उतरें आन ॥२८॥
 सत्रह लाख सवन परिवार । सहस्रछानवै ऊपर धार ॥
 यह सब जब्बदीपसमास । आगममै विस्तार प्रकास ॥२९॥
 दोहा ।

यही कथन अगनविषै, वरन्यौ गनधर ईस ।

तीनलाख पदमै सही, ऊपर सहस्र पचीस ॥३०॥

चौपई ।

यो अनेक रचना आधार । दीपराज राजे अधिकार ॥
 तहां मेरुके दच्छिन भाग । किधौं भूमितिय सुभग सुहाग ॥३१॥
 भरतखड छहखड समेत । घनुषाकार विराजत खेत ।
 तामै सबसुखधर्मनिवास । कासीदेश कुसलजनवास ॥३२॥
 गाव खेट पुर पट्टन जहां । धन-कन भरे बसे बहु तहां ॥
 निवसे नागर जैनी लोय । दयाधर्म पाले सब कोय ॥३३॥
 जिनमंदिर ऊचे जिनमार्हि । नरनारो नित पूजन जाहि ॥
 पद पद पुरपकित^२ पेखिये । उदवसथान^३ न कर्हि देखिये ॥३४॥

१ दूसरी नदी २ नगरों की पक्ति ३ ऊजड भूमि ।

नीर अगाध नदी नित बहैं । जलचर जीव जहां नित रहैं ॥
 मुनिजनभूषित जिनके तीर । काउसग^१ धरि ठाड़े धीर ॥३५॥
 ऊचे परवत भरना भरें । मारग जात पथिक मन हरें ॥
 जिनमें सदा कंदराथान^२ । निहचल देह धरें मुनि ध्यान ॥३६॥
 जहां बडे निर्जनबनजाल । जिनमें बहुविध बिरछ विसाल ।
 केला करपट कटहल कर । कैथ करोदा कौंच कनैर ॥३७॥
 किरमाला कंकोल कल्हार । कमरख कंज कदम कचनार ॥
 खिरनी खारक पिंडखजूर । खैर खिरहटी खेजड़ भूर ॥३८॥
 अर्जुन अमली आम अनार । अंगर अंजीर असोक अपार ॥
 अरनी अौंगा अरलू भने । ऊबर अड अरीठा घने ॥३९॥
 पाकर पीपल पूग^३ प्रियग । पीलू पाटल^४ पाढ़ पतग ॥
 गौदी गुडहल गूलर जान । गांडर^५ गुंजा^६ गोरख पान ॥४०॥
 पचा चीढ़ चिरोजी फली । चदन चोल चमेली भली ॥
 जड जभीरी जामन कोट । नीम नारियल हीस हिगोट ॥४१॥
 सौना सीसम सेंभल साल । सालर सिरस सदा फलजाल ॥
 बास बबूल बकायन बेर । बेत बहेडा बड़हल पेर ॥४२॥
 महुआ मौलसिरी मचकुन्द । मरुवा मोखा करना कुन्द^७ ॥
 तूत तबोलनि तींदू ताल । तगर तिलक तालीस तमाल ॥४३॥
 इहि बिध रहे सरोवर छाया । सबही कहत कथा बढ़ जाय ।
 तहा साधु एकात विचार । करे पठनपाठनविधि सार ॥४४॥

बिबिध सरोवर सीतल ठाम । पंथी बैठि लेहि बिसराम ॥
 निर्मल नीर भरे मनहार । मानौं मुनिचित विगतविकार ॥४५॥
 सोहैं सफल सालके^१ खेत । भये नअर फलभारसमेत ॥
 सज्जनजन ज्यो सपति पाय । छोड़ गुमान चले सिर नाय ॥४६॥
 केवलग्यानी करत विहार । जहां सदा सबसुखदातार ॥
 आचारज चहुसंघसमेत । विहरमान भविजन हितहेत ॥४७॥
 केई जहां महाव्रत लेहि । भवदुखवास जलांजलि देहि ॥
 केई धीर उग्र तप करै । ते अहिमिंद्र जाय अवतरै ॥४८॥
 केई श्रावकके व्रत पाल । अच्युत स्वर्ग बसे चिरकाल ॥
 केई कर जिनजंग्य^२ विधान । पावै पुष्पी^३ अमरविमान ॥४९॥
 केई मुनिवरदानप्रभाष । भोगे भोगभूमिकी श्राव ॥
 अतिपुनीत सब ही बिध देस । जहां जनम चाहैं अमरेस ॥५०॥
 तहां बनारस नगरी बसे । देखत सुरनरमन उलहसे ॥
 है प्रसिद्ध घरनीपर सोय । तीरथराज कहैं सब कोय ॥५१॥
 सोभा जाकी कहो न जाय । नाम लेत रसना^४ सुचि थाय ।
 जहां सरोवर नाना भांति । जिनके तीर तरोवर पांति ॥५२॥
 निजजीवन^५ जीवन सुख देहि । कमलसुवास सिलोमुख^६ लेहि
 सोहैं सघन रवाने बाग । फले फूल फल बढ़ायो सुहाग ॥५३॥
 सजल खातिका^७ राजे खरी । उठे लहरि लोयन^८-गति-हरी
 कोट उतंग कांगुरे लसे । मानौं सुरगलोक दिस हंसे ॥५४॥

१ चावल २ जिनैन्द्र पूजन ३ पुष्पवान ४ जीम ५ पानी ६ मौरा
 ७ खाई ८ नेत्र ।

ऊचे महल मनोहर लगं । सुवरन कलस सिखर जगमगं ॥
 अति उन्नत जिनमदिर जहा । तिन महिमा वरनन बुध कहा ॥
 रतनबिंब राजे जिहि माहिं । सिखर सुरग धुजा फहराहिं ।
 कचनके उपकरन समाज । श्रावे भविजन पूजाकाज ॥५६॥
 जय जय सब्दसहित छवि छजे । किधो धर्म-रतनायर' गर्जे ।
 नगरनारि नित बदन जाहिं । जिनदरसनउच्छव उरमाहिं ॥५७॥
 भूषनभूषित सुन्दर देह । मानो सुभग अपछरा येह ॥
 सब गृहस्थ साधे षट कर्म । पाले प्रजा अहिंसा धर्म ॥५८॥
 दोष अठारहवर्जित देव । तिस प्रभुको पूजे बहु भेव ॥
 चाह-चिहन^२-वरजित जो धीर । सोई गुरु सेवे वरवीर ॥५९॥
 आदि अत जे विगत विरोध । तेई ग्रथ सुने मन सोध ॥
 सत्य सील गुन पाले सदा । ताते लोग सुखी सर्वदा ॥६०॥
 दोहा ।

प्रजा बनारस नगरकी, नागर नीत सुजान ॥
 चार रतनके पारखी, लहिये घर घर थान ॥६१॥
 देव धर्म गुरु ग्रथ ये, बडे रतन ससार ।
 इनको परखि प्रमानिये, यह नर-भव-फल सार ॥६२॥
 जे इनकी जाने परख, ते जग लोचनवान ।
 जिनको यह सुधि ना परी, ते नर अध अजान ॥६३॥
 लोचनहीने पुरुषको, अध न कहिये भूल ॥
 उर लोचन जिनके मुँदे, ते आधे निर्मूल ॥६४॥

चौपई ।

इहि बिध नगर बसै बहु भाय । सब सोभा बरनी नहि जाय ।
 अस्वसेन भूपति बडभाग । राज करै तथा अतुल सुहाग ।६५।
 कासिपगोत्र जगतपरसंस । बस-इखवाक-विमल-सर-हंस ॥
 तेजवत दिनपति^१ ज्यों दिपं । प्रभुता देखि सचीपति^२ छिपै।६६।
 कलपतरोवर सम दातार । रतिपति^३ लाजै रूप निहार ॥
 रयनायर^४ सम अति गभोर । पर्वतराज बराबर धोर ॥६७॥
 सोम समान सबनि सुखदाय । कीरति-किरन रही जग छाय ।
 तीन ग्यानसंजुगत सुजान । परम विवेकी दयानिधान ॥६७॥
 जिनपदभक्ति धर्म-धन-वास । गुरुसेवारति नीतिनिवास ॥
 कला-चातुरी-बुधि-विज्ञान । विद्या-विनय-सपदा-थान ॥६८।
 सकलसारगुणमानिककोष । उभयपच्छ निर्मल निर्दोष ॥
 जिनसूरजउदयाचल राय । तिस महिमा बरनी किमि जाय।७०।
 वामादेवी नाम पवित्त । तिनके घर रानी सुभ चित्त ॥
 निरुपम लावन सबगुनभरी । रूपजलधिबेला^५ अवतरी॥७१॥
 नखसिख सहज सुहागिनि नार । तीनलोकतियतिलक सिंगार
 सकल सुलच्छनमडित देह । भाषा मधुर भारती^६ येह ॥७२।
 रभा रति जिस आगे दीन । रोहिनिरूप लगै छबि छीन ।
 इन्द्रबधू^७ इमि दीसै सोय । रविदुति^८ आगे दीपकलोय ॥७३।
 जनमनहरषबढावन एम । कातिक-चद्र-चद्रिका^९ जेम ॥

१ सूर्य २ इन्द्र ३ कामदेव ४ रत्नाकर ५ सीमा ६ भारत की
 ७ इन्द्राणी ८ सूर्य का प्रकाश ९ चांदनी ।

सकल सार गुणमतिकी खानि । सीलसंपदाकी निधि जानि ॥७४॥
 सज्जनताकी अवधि अनूप । कला सुबुधिकी सीमारूप ॥
 नाम लेत अघ तर्ज समीप । महापुरुष-मुक्ताफल-सीप ॥७५॥
 त्रिभुवननाथ रत्नकी मही । बुधिवल महिमा जाय न कही ।
 बहुबिध दंपति सपतिजोग । करै पुनीत पुन्यफलभोग ॥७६॥

उक्त च पट्टपाहुडग्रन्थे—आर्या

तित्थयरा^१ तप्पियरा^२ हलहर^३ चक्राङ्क^४ वासदेवाङ्क^५ ।
 पडिवास^६ भोगभूमिय^७ आहारो^८ रात्थि^९ राीहारो^{१०} ॥७७॥

चौपई ।

जिनवर जिनमाता जिनतात । वासदेव बलदेव विख्यात ॥
 चक्रोराय जुगलिया जोय । इन सबके मल मूत्र न होय ॥७८॥
 दोहा ।

पूरब गाथाकौ अरथ, लिख्यौ चौपई लाय ॥
 षट् पाहुडटीकाविषै, देख लेहु इहि भाय ॥७९॥

चौपई ।

अब आगे भबिजन मन थभ । सुनो गर्भमगलआनन्द ॥
 एक दिना सौधर्म सुरेस । धनपति^१ प्रति दोनों उपदेस ॥८०॥

१ तीर्थङ्कर २ माता पिता ३ बलदेव ४ चक्रवर्ती ५ नारायण ६ प्रति-
 नारायण ७ भोगभूमियां ८ भोजन ९ नहीं होते १० मल मूत्र त्याग
 ११ कुबेर ।

आनन्दकी थितिमै सही । आयु छ मास शेष सब रही ॥
 तेबीसम अवतार महान । होसी नगर बनारस-थान ॥८१॥
 अश्वसेन भूपतिके धाम । पचाचरज^१ करौ अभिराम ॥
 यह सुरेन्द्रने आज्ञा करी । सौ कुवेर निज साथे धरी ॥८२॥
 चल्यो तुरत लाई नहिं बार । सोहै संग अमर-परिवार ॥
 हरषित अग पिता घर आय । करी रतन-वर्षा बहुभाय ॥८३॥
 जिनके तेज तिमिर नहिं रहै । नाना वरन प्रभा लहलहै ।
 ऐसे निर्मालक^२ नग^३ भूर^४ । बरसे नृपके आगन पूर ॥८४॥

दोहा ।

नभसों आवै भलकली, मनिधारा इहि माय ॥

सुरगलोक-लच्छमी किधों, सेवन उतरी माय ॥८५॥

चौपई ।

साढ़े तीन कोड़ परवान । यों नित बरसे रतन महान ॥
 सुरभि सुगंध कलपतरुफल । बरसावै सुर आनन्दमूल ॥८६॥
 गंधोदककी बरसा करे । मानों मुकताफल अवतरें ॥
 प्रतिदिन देव-दुन्दुभी बजै । किधों महासागर यह गजै ॥८७॥
 नंद वरद जय जय उच्चरै । मात पिता प्रति सुर यों करे ॥
 इहि विध पचाचरज विलोक । जंजी भये मिथ्याती लोक ॥८८॥

दोहा ।

देवन किये छ मास लीं, पचाचरज अनूप ॥

देखि देखि परजा-भई, आनन्द अचरजरूप ॥८९॥

१ पाँच आश्रय (मद सुगन्ध हवा, गंधोदक वृष्टि, पुष्पवृष्टि, दुन्दुभि बाजा जयघोष) २ अमूल्य ३ रतन ४, बहुत ।

चौपई ।

यो अतिश्रानदसौं दिन जाहि । माता मगन सुखोदधि^१माहि ।
मानिकजटित मनोहर धाम । रत्नपलक सेज अभिराम । ६० ।
मनिमय दीप जहा जगमगै । अति सुगन्ध आवत अलि पगै ।
करि चतुर्थ^२ श्रानन्द^३-सनानि । करै सयन जननी सुख मानि । ६१
पच्छिम^४ रैन रही जब आय । सोलह सुपनै देखे माय ॥
तिनके नाम लिखौं अवलोय । पढत सुनत पातक छय होय । ६२

पढडो

सुपनाबलि सोलह सुनहु मीत । जिनराजजनमसूचक पुनीत ।
ऐरावत हाथी प्रथम दीस । मदगोलो गड^५ विसाल सीस । ६३ ।
देख्यौ डक्कारत^६ वृषभराज^६ । अतिउज्जल मोतीबरन^७ भ्राज^७ ।
देख्यौ पचानन^८ धवलदेह^८ । निज नाद करै ज्यौ सरद-मेह । ६४
देख्यौ मनिश्रासनसोभमान । तहं हेमकलस कमला^९ -सनान ॥
देखी दो पावन पहूपमाल^{१०} । भ्रमरावलि-बेढो अतिविसाल ६५
रविमडल देख्यौ तम दलत । उदयाचल ऊपर उदयवंत ॥
सपूरन तारापति^{११} -विमान । तारावलि-मध्य विराजमान । ६६
जलतिरत मनोहर मीन^{१२} -जोट । देखे जिन-जननी पलकओट ।
देखे चामीकरकलस^{१३} द्योय । अति भलकै वारिजहके सोय ६७

१ सुख-समुद्र २ रजो दर्शन के चतुर्थ दिन का स्नान ३ रात्रि की अन्तिम प्रहर ४ गाल ५ उच्च स्वर से बोलता हुभा ६ बैल ७ सफेद ८ शोभा दे ९ सिंह १० सफेद शरीर वाला ११ लक्ष्मी १२ पुष्पमाला १३ चन्द्रमा १४ मछली का जोडा १५ स्वर्णकलश ।

देख्यौ कमलाकर कमलछत्र । बहु हंसी हसनसौं रवत्र ॥
 देख्यौ रयनायर^१ गर्जमान । पुनि सिंहपीठ^२मानिकनिधान।६८।
 फिर देख्यौ देव-विमान जोग । धुज घंटा भालरसौं मनोग ।
 प्रगट्यौ महि फोरि फनींद्रधाम^३ । मनि कचनमय नयनाभिराम^४
 पुनि रतनरासि देखी अनूप । इन्द्रायुधवरन^५ विचित्ररूप ॥
 निर्धूम^६ धनजय^७ दीपमान । ये देखे सोलह सुपन जान ।१००।
 दोहा ।

गजप्रवेश मुखकमलमै, सुपनअत अविलोय ॥
 सुखनिद्रा पूरी भई, भयो प्रात तम खोय ॥१०१॥
 पूर्व दिवाकर^८ ऊग्यौ, गयो तिमिर सुखदाय ॥
 जैसे जैनसिधांत सुनि, भरमभाव मिट जाय ॥१०२॥
 मद तेज तारे भये, कछु दीखं कछु नाहि ।
 ज्यो तीर्थंकरके उदय, पाखंडी छिप जाहि ॥१०३॥
 सूरजवसी जे कमल, खिले सरोवरमाहि ।
 ज्यो जिनबिब विलोकिकै, अविलोचन विकसाहि ।१०४।
 चदविकासी कमल जे, विकसत भये न सोय ।
 ज्यों अजान जिनवचन सुनि, मुदित मूल नहि होय।१०५।
 चक्रवाक^९ हरखित भये, ज्यो जिनमत-सजोग ।
 जीव सुमति पिध-नारिकौ, मिट्यौ अनादिवियोग ।१०६।
 घूघूगरा^{१०} भूतलविषै, आधे भये असूभ ।

१ समुद्र २ मिहासन ३ धरणेन्द्र विमान ४ सुन्दर ५ इन्द्र धनुष के रंग
 का ६ धूम रहित ७ अग्नि ८ सूर्य ९ चक्रवा १० उल्लू ।

जैनग्रन्थके रहस्यै, ज्यों परमती श्रवूभ ॥१०७॥
 कमलकोष मधुकर बधे, छुटे जग्यौ सिर-भाग ।
 जथा जीव जिनधर्मसौं, मुक्त होय भवत्याग ॥१०८॥
 पथिक लोग मारग चले, सूभे घाट कुघाट ।
 जिनधुनि सुनि सूभे जथा, सुरग मुकतिकी बाट^१ ॥१०९॥
 इहि बिध भयौ प्रभात सुभ, आनन्द भयौ अतीव ॥
 धर्मध्यान आराधना, करन लगे भवि जीव ॥११०॥
 जिनजननी रोमांच तन, जगो मुदित मुख जान ।
 किधौ^२ सकटक कमलिनी, विकसी निसि अवसान ॥१११॥
 मगलीक वाजिअ^३ धुनि, सुनि बंदीजन-गान ।
 उठी सेज तजि सुखभरी, धरचौ हिये सुभ ध्यान ॥११२॥
 सामायिकबिध आदरी, पच परमपदलीन ।
 और उचित आचार सब, स्नान-विलेपन कोन ॥११३॥
 पहरे सुभ आभरन तन, सुन्दर वसन^४ सुरग ।
 कलपबेल जगम^५ किधौ, चली सखीजन सग ॥११४॥
 राजसिंहासन भूप तब, बंठे सभा-सुथान ।
 देवी आवत देखकै, कियौ उचित सनमान ॥११५॥
 अर्घासन बंठनि दियौ, जोग वचन मुख भास ।
 यीं रानी विकसत वदन, बंठी भूपति पास ॥११६॥
 सभालोग तारे विबिध, भूपति चांद सरूप ।

श्रीवामादेवी तहां, दिपै चन्द्रिकारूप ॥११७॥
 स्वामी सोलह सुपन हम, देखे पच्छिम रैन ।
 श्रीमुखतै इनकौ सुफल, कहौ श्रवनसुखदेन ॥११८॥
 अस्वसेन भूपाल तब, बोले अविधि विचार ।
 एकचित्त करि देवि तुम, सुनो सुपनफल सार ॥११९॥
 चौफई ।

धुरि^१ गजेंद्रवरसनतै जान । होसी जगपति पुत्र प्रधान ॥
 महावृषभ पुनि देख्यौ सोय । जगजेठो^२ नंदन तुम होय । १२०
 सेत सिंह-दरसनफल भास । अतुल अनंती सकति-विवास ॥
 कमलामज्जनतै^३ सुरईस । करै न्हौन कनकाचलसीस ॥१२१॥
 पहुपदाम^४ दो देखी सार । तिसफल दुबिध धर्मदातार ।
 ससितै सकल लोकसुखदाय । तेजपुंज सूरजतै थाय । १२२।
 मीन जुगलतै सब सुखभाज । कुंभविलोकनतै निधिराज ॥
 सरवरतै सब लच्छनवान । सागरतै गंभीर महान ॥१२३॥
 सिंहपोठतै मृगलोचनी^५ । होय बाल तुम त्रिभुवनधनी ॥
 सुरविमान देख्यौ सुख पाय । सुरगलोकतै उपजै श्राय । १२४।
 नागराज^६-गृहकौ सुन हेत । जनमै मतिश्रुतिअवधिसमेत ।
 रतनरासिसै गुन-भनि-खान । कर्मदहन पावकतै जान । १२५॥
 गजप्रवेश जो वदनमभार^७ । सुपन-अंत देख्यौ वरनार^८ ॥
 श्रीपारसजिन जगतप्रधान । गर्भ तुम्हारे उत्तरे आन । १२६।

१. ध्रुव रूप से २ जगज्ज्येष्ठ ३. स्नान ४. माला ५. हरिणी से नेत्र वाली ६. घरणेन्द्र ७. सुख में ८. हे उत्तम स्त्री ।

शोभा ।

मुनि वामादे नृपनफल, रोमाञ्चिन तन भूर ।
मुवचन-जल मीचन क्रियो, उगे हृद्य अकूर ॥१२७॥

वीर्य

अब नौघर्म मुरेन विचार । स्वामिगर्भअवमर निरघार ॥
कुलगिरि' -कमलवामिनी जेह । श्रीआदिक देवी गुणगेह ॥२८॥
तिन्हें बुलाय कह्यौ नृभ भाव । अश्वमेन रूपति घर जाव ॥
वामादेवीके उरथान । तेवीमम जिन उतरे आन ॥१२९॥
तिनकी गर्भसौधना करो । निज नियोगमेवा मन धरो ॥
यह मुनि मत्र आनन्दित भई । इन्द्रआन माथे घर लई ॥१३०॥
सुरगलोक तजि आई तहा । वसै बनारनि नगरी जहां ॥
महाकांत तन लावनभरौ । मानौ नभदामिनी' अवतरौ ॥१३१॥
अंग अंग सब सजे निगार । रूपसंपदा अचरजकार ॥
चूडामनि माथे जगमगं । देखत चकार्चौघ नौ लगै ॥१३२॥
सुरतस्सुमनदाम^३ उर धरो । अति सुवास दसदिसि विन्तरी
अवनसुखद नेवर-भंकार । सोभा कहत न आवै पार ॥१३३॥
आय नृपतिके पायन नई । आयस^४ मागि महलमें गई ॥
सिंहासनथित माय निहार । करि प्रनाम कीनो जैकार ॥१३४॥
दोहा-जननीदेह सुभावसौं, अतिनिर्मल अविकार ॥
ताहि कुलाचलवासिनी, और करै सुचि सार ॥१३५॥

१ कुलाचलों पर स्थित सरोवरों के कमलों में रहने वाली देविया
२ आकाशकी विचली ३ कल्पवृक्ष के फूलों की माना ४ प्राज्ञा ।

कृष्णपाख वैशाख दिन, दुतिया निसि-श्रवसान ।
 विमल विशाखा नखतमै, बसे गर्भ जिन श्रान ॥१३३॥
 जथा सीप^१सपुटविषै, मोती उपजै श्रान ।
 त्योही निर्मल गर्भमै, निराबाध भगवान ॥१३७॥
 गर्भ बसै पर गर्भतै, बरतै भिन्न सदीव ।
 घटतै घटवरती^२ गगन^३, क्यो नहि भिन्न श्रतीव ॥१३८॥

चौपई ।

तब जिन पुन्यपवनसे हले । चउबिध सुरके श्रासन चले ॥
 चिह्न^४देख इन्द्रादिकदेव । जानो श्रवधिज्ञानबल भेव ॥१३९॥
 जिनवर आज गर्भ श्रवतरे । यह विचार उर श्रानन्द भरे ॥
 चढि विमान परिवारसमेत । चले गर्भकल्याणक हेत ॥१४०॥
 जयजयकार करत बहुभाय । उच्छ्वसहित पिताघर आय ॥
 मातपिता श्रासन पर ठये । कंचनकलस नहावत भये ॥१४१॥
 गर्भमध्यवरती भगवान । प्रनमै देव धरो मन ध्यान ॥
 गीत निरत बाजित्र बजाय । पूजा भेंट करी सिर नाय ॥१४२॥
 यो सुरगन सब साधि नियोग । गये गेह करि कारज जोग ।
 इन्द्रराजकौ आयस पाय । रुचकवासिनी देवी आय ॥१४३॥
 जथाजोग सब सेवा करे । छिन छिन जिनजननीमन हरे ॥
 रुचक दीप तेरहमो जहाँ । रुचकनाम पर्वत है तहाँ ॥१४४॥
 सो चौरासी सहस प्रमान । इतने जोजन उन्नत जान ॥

१ सीप के भीतर २ घड़े का ३. आकाश ४. चिह्न ।

इतनी ही विन्नीरन धार । दीप मध्यमी बलयाकार ॥१४५॥
ताके मित्रर हूट वहु लमं । दिमाकुमारी निन्मे वमं ॥
ते मद्र मेवन घ्रावं नाय । यह नियोग इनकी नृवदाय ॥१४६॥

कृतुमन्ना

घ्राडं भक्ति नियोगिनि देवी, जिन जननीको नेत्र भजे ।
कोई न्हाव-बिनेपन ठाने । कोई नार मिगार भजे ॥१४७॥
कोई नूपरग वमन ममप्यं, कोई भोजन मिट्ट करे ।
कोई देय तद्वोल^१ रवाने, कोई मुन्दर गान करे ॥१४८॥
कोई गनन मिहानन थापे, कोई डाले चमर बरो ।
कोई मुन्दर मेज विछावे, कोई चापे चरन करो^२ ॥१४९॥
कोई चन्दनमी घर मीचे, नारे महल नुवान करो ।
कोई आगन देय बुहारो, नारं फूल-पराग परी ॥१५०॥
कोई जलक्रीडा कर रंजे, कोई बहुविध भेष किये ।
कोई मनिदपन^३ कर धारे, कोई ठाडी खडग^४ लिये ॥१५१॥
कोई गुंथि मनोहर माला, आवे आन नुगध खरी ।
कोई कलपतरोवरसो ले, फल फूलनकी नेट धरी ॥१५२॥
कोई काव्य कथारसपीखं, कोई हास्य विलास ठवे ।
कोई गावे वीन बजावे, कोई नाचत मीन नवे ॥१५३॥

गोहा ।

इह विध सेवा करत नित, नवे मान नुभ श्रेय ।
प्रप्त करे सुरकामिनी, माता उत्तर देय ॥१५४॥

अतरलापि^१ पहेलिका, बहिरलापिका^२ एव ।

बिदुहीन^३ निरहोठपद^४, क्रियागुप्त बहुभेव ॥१५५॥

इत्यादिक आगमउक्त, अलंकारकी जात ।

अर्थगूढ़ गभीर सब, समभावे जिन-मात ॥१५६॥

चौपई ।

तुमसो त्रिया कौन जग आन । तीर्थकर सुत जन महान ॥

जगमें सुभट कौनसे माय । जे नर जीतै विषय कषाय ॥१५७॥

कौन कहावे कायर दीन । इन्द्रीमदमेटन बलहीन ॥

पंडित कौन सुमारग चलै । दुराचार दुर्मरिग दलै ॥१५८॥

माता मूरख कौन महत । विषयो जीव जगत जावंत ।

कौन सत्पुरुष नरभव धार । जो साधं पुरुषारथ चार ॥१५९॥

कौन कापुरुष^५ कहिये मर्म । जो सठ साध न जानै धर्म ॥

धन्य कौन नर इस संसार । जोवन समे धरै व्रतभार ॥१६०॥

धिक किनको कहिये सर्वंग । जे धरि करै प्रतिग्या भग ॥

कौन जीवके बैरी लोय । काम क्रोध हैं और न कोय ॥१६१॥

जननी जगमें कौन मलीन । पातकपंकमलिन मतिहीन ॥

कहो कौन नर नित्त पवित्त । ब्रह्मचर्यधारी दिढ़ चित्त ॥१६२॥

कौन पसू मानुष आकार । जिनके हिरदै नाहि विचार ॥

अंध कौन जो देव अदेव । कुगुरुसुगुरुकौ भेद न भेव ॥१६३॥

बधिर^६ कौनसे उत्तर देह । जैनसिधांत सुनै नाहि जेह ॥

१ वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो । २ जिसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों से बाहर हो । ३ बिन्दुरहितपद ४ ऐसा पद जिसके उच्चारण में ह्रोठो से व्रनि न निकलती हो । ५ कायर । ६ बहरा ।

मूकनाम नर कर्म लहे । जो हिन मान वचन नहि कहे ॥१६४॥
 लावो भुजा कीन करहीन । जिनपूजा मुनिदान न दीन ॥
 कीन पागले पावसमेत । जे तीरव्य परमे न अचेत ॥१६५॥
 कीन कुरूप जननि कहू एह । मीनामिगार विना नरजेह ॥
 वेग कहा करिये बडभाग । दिच्छागहन जगतकी त्याग ॥
 मित्र कीन हिनवचक होय । घमं दिटार्व आलस चोय ॥
 सत्रु कीन जो दिच्छालेत । विघन करं परभवदुसहेत ॥१६७॥
 जियकीं कीन सरन हे माय । पचपरमगुरु नदा सहाय ॥
 इहिविघ प्रसन करं सुरनारि । माता उत्तर देहि विचारि ॥१६८॥
 वामादेवी महज प्रवीन । सकल मरम^१ जानं गुननीन ॥
 पुरुपरतन उरअन्तर वहे । कयो नहि ग्यान अधिकता लहे ॥१६९॥
 दोहा ।

निवसै^२ निर्मल गर्भमे, तीन ग्यान-गुनदान ।
 फटिकमहलमे जगमगे, ज्यो मनि दीप महान ॥१७०॥
 उदयवान दिनकरसमय, पूर्व दिसा छवि जेम ।
 त्रिभुवनपति-सुत उर धरे, सोहत जननी एम ॥१७१॥
 गर्भभार व्याप नही, त्रिवली^३ भग न होय ।
 देह न दीखं पीतछवि, और विकार न कोय ॥१७२॥
 ज्यो दर्पन प्रतिबिबसौं, भारी कह्यौं न जाय ।
 त्यों जिनपतिके गर्भसौं, खेद न पावै माय ॥१७३॥
 कलपलतासी लसत अति, जननी छबिसयुक्त ।

१ रहस्य २ बसै ३ पेट के तीन सलघट भगवान के गर्भ में आने पर भी नष्ट नहीं हुए ।

मदहास कुसुमित भई, अब फलि है फल पुत्त^१ ॥१७४॥
 देवराजके वचनसौं, अहनिस^२ हरखत अंग ।
 अलखरूप सेवे सची^३, लिये अपछरा संग ॥१७५॥
 पूरबवत नवमास लो, पंचाचरज अनूप ॥
 अस्वसेन भूपालघर, किये धनद^४ सुखरूप ॥१७६॥
 यो सुखसौं निसदिन गये, खेद नामकाहि नाहि ॥
 यह सब पुन्य-प्रभाव है यही रहस इसमाहि ॥१७७॥
 इति श्रीपाश्र्वपुराणभाषाया गर्भवितारवर्णन नाम पञ्चमोऽधिकारः ।

छठा अधिकार ।



दोहा ।

रागादिक जलसौं भरघौ, तन तलाब बहु भाय ।
 पारस-रवि दरसत सुखै, अघ सारस उड़ि जाय ॥१॥
 गर्भ मास पूरन भये, नभ निर्मल आकार ।
 पौष मास एकादसी, स्याम पच्छ सुभ बार ॥२॥
 घामादेवी-पूर्व-दिसि, जनम्यौ जिनवर भान ।
 मुदित भयौ त्रिभुवनकमल, असुभतिमिर अवसान^५ ॥३॥
 अस्वसेन नृप उदयगिरि, उगयौ बाल दिनेस ।
 तीन^६ ग्यान-किरनावली, लिये जगत परमेस ॥४॥

१. पुत्र २. रातदिन ३. इन्द्राणी ४. कुबेर ५. अन्त ६ मति, भूत, अर्थ

पद्धति ।

जनम्यौ जब तीर्थकर कुमार । तिहुलोक बढ्यौ आनंदअपार
 दीखै नभनिर्मल दिसि असेस । कहि आधी मेह न धूलि लेस ।
 अति सीतल मद सुगधि वाय । सो बहन लगी सुखसातिदाय
 सब सुजनलोक हरषे विसेस । ज्यो कमल-खड प्रगटत दिनेस^१
 घटा घन गरजे देवलोक । ज्योतिषिघर केहरिनाद^२ थोक ॥
 भवनालय बाजे सहज संख । बिंतर-निवास भेरी असंख ॥७
 पे अनहद बाजे बजे जान । जिनराज-जनमअतिसय महान ।
 बहु कलपतरोवर पहुपवृष्टि । स्वयमेव करन लागे विसिष्ट ॥८
 इंद्रासन कांपे अकसमात । ये करन किधौ सारथ (?) सुजात
 जिनजनम भयौ भूलोकमार्हि । उच्चासन अब तुम जोग नाहि ।
 आनअ^३ भये मणिमुकुट एम । श्रीजिनप्रति करत प्रनाम जेम ।
 ये चिहन देखि इंद्रादिदेव । तब अवधिग्यानबल जान भेव^४ ॥
 निरधार बनारसि-नगर-थान । तीरथपति जनम्यौ आज आन ।
 प्रभुजन्मकल्याणककरनकाज । उद्यम आरंभ्यौ देवराज ॥११॥
 परिवारसहित सब इन्द्रनाम । आये मिलि प्रथमसुरेद्रधाम ॥
 नानाबिध बाहन चढे जेह । जिनभगतिसलिलसिंचतसुदेह
 सप्ताग सैन तब चली एम । यह महाजलधिकी लहर जेम ॥
 हाथी रथ पायक^५ वृषभ^६ बाज^७ । गायनि नर्तकि सेनासमाज
 एकैक सैनसै सात कच्छ । तिहिमार्हि प्रथम चउ असी लच्छ ।
 फिर दुगुन दुगुन सातम लो जान, इस भाति सात सेना महान
 सौ कोर और छंकोर जोरि । अठसठ्ठ लाख ऊपर बहोरि ॥

१ सूय २ सिहध्वनि ३ भुके ४ भेद ५ पंदल ६ वैल ७ घोडा ।

यह एकहस्ति सेनाप्रमान । ऐसी ही सब सार्तों समान ॥१५॥
 तहँ नागदंत^१ सुर आभियोग । सो करह विक्रिया निजनियोग॥
 ताप्रति आग्या दीनी सुरिंद । तिन कीनों ऐरावत गइन्द ॥१६॥
 लख जोजन मान मतंगईस । अतिउन्नत देह उतंग सीस ॥
 सुभसेतवरन^२ मनहरन काय । लीलागति धारें ललित पाय ॥१७॥
 मदजीवनकलित^३ कपोल स्याम । नख विद्रुमवरण^४ मनोभिराम
 सब लसत सुलच्छन अंगअंग । नहिं गिनीजाहिंसछबितरंग
 गंभीर घनाघनघोष जास । बहु सुन्दर सु ड सुगंध सास ॥
 हो कामसरूपी कामगौन । जादेखें मोहत तीन भौन ॥१६॥
 घनघोरत घंटा लवमान । मनि घू घुरमाला कठथान ॥
 सोवनपाखर^५ सो दिपें देह । संपाजुत^६ मानों सरद मेह ॥२०॥
 सी वदन विराजत सोभवत । एकेकवदनमें^७ आठ दंत ॥
 प्रतिदंत सरोवर एक दीस । सरसरहें कमलिनी सौपचोस^८ ॥२१॥
 एकेक कमलिनी प्रति महान । पञ्चीस मनोहर कमल ठान ॥
 प्रतिफमल एकसौ आठपत्र । सोभावरनी नहिं जाय तत्र ॥२२॥
 पत्रनपर नाचें देवनारि । जगमोहत जिनकी छबि निहारि ।
 नव नवरस पौषे करत गान । लावन्यजलधि-बेलासमान ॥२३॥
 तिस हाथी ऊपर सचोसग । सौधर्मसुरगपति मुदित अंग ॥
 आरूढ^९ भयो अति दिपत एम । उदयाचलमस्तक भानु जेम ।
 चद्रोपम चामर छत्रसीस । दसजाति कलपसुरसहित ईस ॥

१ आभियोग्य जाति के देव २ सफेद रंग ३ मदजल ४ मूंगा का रंग

५ स्वर्ण की मूल ६ विजली ७ मुख ८ एक सौ पञ्चीस ९ चढा ।

ईसानप्रमुख इमि देवराज । निज निज वाहनकी चले साज ॥
 परिजनसमेत उर हरपभाव । जिन जनमकल्याणक करन चाव
 वाजे सुरदु दुभि विविध नेव । जयकार करं मिलि सकलदेव२६
 उपज्यौ कोलाहल गगन थान । मत्र दिमि दीखं वाहन विमान ।
 आकाससरोवर अतिगंभीर । इद्रादि अमर तन तेज नीर ।२७।
 तथा विकसत मुख अपद्यरा एम । यह पिलयीकमलिनोवागजेम ।
 इहि विध देवागम भयी जान । अवतरे बनारम नगर थान ।२८
 चद्रादि जोतिषी पच जात । दस भेद भवनवासी विख्यात ॥
 पुनि आठ जातके वान देव । मत्र आये इन्द्र समेत एव ।२९।।
 निज निज वाहन चढि सपरिवार । जिन जन्म-महोच्छ्रवहियंघार
 तब पुरप्रदच्छिना सुरन दीन । अतिहरखत उर जयकार कीन ।
 बन वीथी^१ मारग गगन रोक । सब ठाडे देवी देव थोक ॥
 सब सक सची मिलि भूप गेह । आये घर आगन भरो तेह ।३१
 तब इद्रबध्न अति रजमान^२ । सो गई गुपत जिनजनमथान ॥
 देखी जिनमात सपुत्त^३ताम । परदच्छिन दं कोनीं प्रनाम ।३२
 सुत-रागरंगी सुखसेजमाभ । ज्यो बालक-भानुसमेत साभ ॥
 कर जोरि जुगल सिर नाय नाय । युति कीनी बहु जानं न माय
 सुखनीद रची तब सची तास । मायामय राख्यौ पुत्र पास ॥
 करकमलन बालक-रतन लीन । जिन कीटिभानुछबि छीन कीन
 सुख उपजं जो प्रभु परस देह । कवि-वानोगोचर नाहि तेह ।
 प्रभुकौ मुखवारिज^४देख देख । हरखं सुररानी उर वितेख ३५

१ गली २ आनन्दित होकर ३ पुत्रसहित ४ कमल ।

वसु मंगलदरव विभूति सार ॥ दिसदिव्यकुमारी अग्रचार ॥
 इहिबिध सौधर्मसुरेसनार । आन्यो सिवकन्या'वर कुमार । ३६
 देह्यौ हरि बालकचंद्र जाम । आनंदजलधि उर बढ्यौ ताम ॥
 सिर नाय इंद्र निज वार बार । थुति कीनो कर जुग सौस धार ॥
 छवि देखि तृपति नहि होय लेस । तव सहस आंख कीनी सुरेस
 करि नमस्कार निजगोद लीन्ह । ईसान इंद्र सिर छत्र दीन्ह ॥
 तहां सनतकुमार महेंद्र सोय । ए चामर ढाले इंद्र द्योय ॥
 ब्रह्मादि सुरगवासी सुरेस । जय नंद वर्ध बौले विसेत ॥ ३६ ॥
 नाचें सुर-रमनी रूपखान । गंधर्व करे जिनसुजसगान ॥
 सुरवाजे बाजे बहुप्रकार । कर धरहि किलरी बीन सार ॥ ४०
 केई सुर श्रोजिनसुभगभेष । देखे भरि लोचन निर्निमेष^२ ॥
 केई यौ भार्ये सुरममाज । हम देवजन्मफल लह्यौ आज ४१
 केई सरधायुत भये देव । मिथ्यात महाविष वम्यौ एव ॥
 इस भाति चतुरविध देवसंध । सब चले जोतिषीपटल लघ^३ ॥

दोहा ।

जोजन सहस निन्यामवै, सुरगिरि-सिखर उतंग ।

गये सकल सुरगन तहां, भूषनभूषित अग ॥ ४३ ॥

चौपई ।

महामेरुके मस्तकभाग । पाडुकबन बहु धरे सुहाग^४ ॥

जोजन सहस जासु बिस्तार । सुर चारन खग करे बिहार ॥ ४४

चहुंदिसि चार जिनालय तहां । सघन सासते तरुवर जहा ।

१. भुक्तिरूपी कन्या २ अपलक ३ उल्लसत करके ४ सौंदर्य ।

मध्यचूलिका मुकट सरीस । सो उतग जोजन चालीस ॥४५॥
 वारह जोजन जड़ विस्तार । आठमध्य अर ऊपर चार ॥
 जाके ऊपर रजकविमान । रोमातर^१नरछेत्रप्रमान ॥४६॥
 तिस ईसानदिसा सुभ थान । मनिमय सिला सासती जान
 पाडुकनाम फटिक उनहार । आकृति अर्ध चंद्रमाकार ॥४७॥
 सौ जोजन आयाम^२ अभाग । विस्नर^३आधो आठ उतंग ॥
 सुरविद्याधर पूजत नित्त । भरतखंड-जिन-न्हौन-पवित्त ॥
 तथा हेम-सिंहासन सार । रत्नजडित सो बलयाकार ॥
 धनुष पाचसौ उन्नत जोय । भूमिभाग विस्तोरन सोय ॥४८॥
 ऊपर जास अर्ध विस्तार । जाके तेज मिटं अंधियार ॥
 तिसहीपर पदमासन साज । पूरवमुख थापे जिनराज ॥५०॥
 इस औसर सोहें इमि ईस । मानों मेघ रतनगिरि सीस ॥
 धुजा कलस दर्पन भृ गार^४ । चमर छत्र सुप्रतिष्ठक^५तार^६ ॥५१॥
 मगल दर्ब मनोहर जहा । धरे अनादि-निधन ये तथा ॥
 आसन दोय उभय दिस और । जुगलइद्र ठाड़े तिहि ठौर ॥५२॥
 चारों दिस चारों दिगपाल । जथाजोग जिनमज्जनकाल^७ ॥
 सची सुरेंद्र अपछरा-थोक^८ । सब ठाड़े पाडुकवन रोक ॥५३॥
 चौबिध^९देव खड़े चहुंपास । जनम-न्हौन देखन हुल्लास ।
 कियौ महामडप हरि तथा । तीनलोक जन निवसे जहा ॥५४॥
 कल्पकुसुममाला मनहार । लटकं मधुप करै भंकार ॥

१ एक बाल का अन्तर २ लम्बाई ३ चौडाई ४ कलश ५ साधिया ६ पत्ता
 ७ अमियेक ८ समूह ९ चार प्रकार के देव (मन्वन्वामी, वयनर, ज्योतिषी,
 कल्पवासी)

सुर वाजिन्न बजे बहुभाय । सुरभि^१ सुगंध रही महकाय ॥५५॥
मंगल मिल गावें सब सखी । नाचें सुर-वनिता रस-रची ॥
तब मञ्जन आरभ विसेस । उद्यम कियो प्रथम अमरेस^२ ॥५६॥

दोहा ।

तहा कुबेर रतन खची^३, रची पंडका पत^४ ।
मेरु सिखरसौं सोहिये, छीरोदधिपरजत^५ ॥५७॥
सुर-श्रेणी सोपान-पथ, पचम सागर जाय ।
भर लाई कंचन-कलस, चदन-चरचित काय ॥५८॥
जोजन एक प्रमान मुख, वसु^६ जोजन गभीर ।
यह मरजादा कलसकी, जिनशासनमें बीर ॥५९॥
मुकतमालमडित लसै, कचन-कलस महंत ।
नभवनिताके^७ उरज^८ ये, यों अति सोभावत ॥६०॥

चौपई

सहस^१ भुजा सुरपति तब करी । मूषनभूषित सोभा भरी ।
इस औसर हरि सोहै एम । मूषणाक सुरतरुधर जेम ॥६१॥
कलस हाथ हरि लीनें जाम । भाजनाग^२ सम सोभा ताम ।
तीन वार कीनौ जयकार । कलसोद्धारन मंत्र उचार ॥६२॥
इहिविध श्रीसौधर्माधोस । ढाले कलस स्वामिके सीस ॥
तब सब इंद्र कियो जिनन्हौन । अतुल उछाव बढ्यो जगभौन ।

१. मनोरम २. सोधर्म स्वर्ग का इंद्र ३. रत्न जटित ४. पति ५. पंचम
समुद्र तक ६. घाट ७. घाकाण रूपो रूपो ८. स्तन ९. हजार १०. भाजन देने
वाला मत्स्य वृक्ष ।

महा धार जिनमस्तक ढरी । सानो नभगंगा अवतरी ॥
 मुदित असंख अमरगन तबै । जै जैकार कियौ मिलि सबै ६४।
 उपज्यौ अति कोलाहल सार । दसदिस बधिर^१ भई तिहिबार ।
 भयो असम^२ औसर इहि भाय । वचनद्वार बरन्यौ नहि जाय ।

दोहा ।

जा धारासौं गिरिसिखर, खड खड हो जाय ।
 सौ धारा जिनदेहपै, फूल-कली सम थाय ॥६६॥
 अप्रमान वीरजधनी, तीर्थकर प्रभु होय ।
 तातं तिनकी सकतिकौं, उपमा लगै न कोय ॥६७॥
 नीलबरन प्रभु देहपर, कलस-नीरछबि एम ।
 नीलाचलसिर हेमके, बादल बरसै जेम ॥६८॥
 चली न्हौनके नीरको, उछल छटा नभमाहि ।
 स्वामिसंग अघबिन^३ भई, कयो नहि ऊरघ जाहि ॥६९॥
 न्हौनछटा तिरछीभई, तिन यह उपमा धार ।
 दिगवनिता^४-मुख सोहियै, करनफूल उनहार ॥७०॥

नीरठा ।

जिनतनपरस पवित्र, भई सकल जगसुचिकरन ।
 सो धारा मम नित्त, पाप हरो पावन^५ करो ॥७१॥
 त्रौगई ।

यो नुरेद्र मज्जनविधि ठान । फिर कीनों गधोदकन्हान ॥
 सो जल लेय विनय विस्तरी । सातिपाठ पढि पूजा करी ॥७२॥

१ बहरी २ जिसकी ममानता नहीं की जा सकती ३ निष्पाप ४ दिना

सक्र सची सुर आनन्द भरे । यथाजोग सब कारज करे ।
परदच्छिन^१ दीनी बहु-भाय । बारंबार नये सिरनाय ॥७३॥

हरिगीत ।

सौधर्मपति अभिषेक कारक, न्हौनपीठ^२ सुदंसनो^३ ।
गधर्व गायक निरतकारक, अपछरा-जन संसनो^४ ॥
पंचम पयोनिध न्हौन-कुंड, असंख सुर सेवक जहां ।
तिस जन्ममगलकी बडाई, कहन समरथ बुध कहा ॥७४॥

चोपई ।

जन्महौनबिधि पूरन भई । सकल सुरासुर देवनि ठई ॥
अब इंद्रानी जिनवर अग । निर्जल^५ कियो वसन^६-सुचिसंग ॥७५॥
कुंकुमादि लेपन बहु लिये । प्रभुके देह विलेपन किये ॥
इहि सोभा इह औसरमाभ । किधौ नीलगिरि फूली साभ ॥७६॥
और सिंगार सकल सह कियो । तिलक त्रिलोकनाथके दियो ।
मनिमय मुकुट सची सिर धरचौ । चूडामनि माथे विस्तरचौ ॥७७॥
लोचन अजन दियो अन्नूप । सहज स्वामिदृग अंजितरूप ॥
मनि कु डल कानन विस्तरे । किधौ चन्द्र सूरज अवतरे ॥७८॥
कठ कठिका^७ मोतीहार । मुक्तिरमनि भूला उनहार ॥
भुजभूषनभूषित भुज करी । कटक मुद्रिका सोभित खरी ॥७९॥
कटिभूषन कीनी कटि-थान । मनिमयबुद्रघटिकावान ॥
पग नेवर पहराये मार । जिनमै रतन भलक भकार ॥८०॥

१ परिक्रमा २, स्नान का विहासन ३ सुदर्शन मेरु ४, प्रशसा ५ शरीर
की सुखाया ६ वस्त्र ७ कठी ।

दीहा ।

अंगअग आभरनजुत^१, यह उपमा तिहि काल ॥

नुरतन्मम प्रभु सोहिये, नूपननूपित-डाल^२ ॥८१॥

चौपई ।

सब इन्द्रादि लगे ध्रुति करन । जय जिनवर सब आरत^३-हर
त्रिभुवनभवन दीप उनहार । घन्य देव तेरो अवतार ॥८२॥

जय श्रीअम्बसेनकुलचद । वामानंदन जोति अमद^४ ॥

सुखनागरके वधनहार । सब जग श्रेय^५-मांति दातार ॥८३॥

तुम जग अमनामन अवतरे । हममे दान महासुख भरे ॥

बिन रविउदय तिमिर^६ क्यो जाय । कंमे कमलवाग विकसा

मिथ्यामत रजनी^७ अतिघोर । मूम^८ धमं कुलिगी^९ चोर ॥

जो प्रभुजन्मप्रभात न थाय । तो किमि प्रजा वसे सुखपाया^{१०}

ये अनादि संसारी जीव । बिलखं भव-नाद^{११}-प्रसे अतात्र ॥

सो दुखमैटन दयानिधान । राजवंद जनमै भगवान ॥८४॥

भरमकूपवरती बहु लोय^{१२} । काढनहार निन्है नहि कोय ॥

श्रीमुखवचननेज^{१३}-वलधार । अब उद्धार लहै निरधार ॥८५॥

आप परमपावन परमेश । औरन तौ नुचि करहु विशेष ॥

ज्यो मरि^{१४} सेत^{१५} प्रभा तन धरं । सेत मरुप सबनकी करैद

बिन सनान तुम निमंल नित्त । अंतर वाहज सहज पवित्त ॥

हम मज्जनद्विधि कीनी आज । निजपवित्रकारन जिनराज^{१६}

१ आधूपण २ दहनी ३ दुख ४ सदा जगने वाली ५ कल्याण ६ अष
कार ७ गड ८ चौर ९ चोटे भेषधारी १० रोग ११ लोग १२ रस्मी
१३ सरोवर १४ सफेद ।

तुम जगपति देवनके देव । तुम जिन स्वयबुद्ध स्वयमेव ॥
 तुम जगरच्छक तुम जगतात । तुम बिनकारन-बन्धु विख्यात ॥
 तुम गुनसागर अगम अपार । श्रुतिकर^१ कौन जाय जन पार ॥
 सूच्छम ग्यानी मुनि नहिं तरै । हमसे मंद कहा बल धरै । ६१।
 नमो देव असरन-आधार । नमो सर्वश्रतिसयभंडार ॥
 नमो सकलसिवसपतिकरन । नमो नमो जिनतारनतरन । ६२।
 दोहा ।

इहि बिध इन्द्रादिक अमर, सुरपदवीफल लेय ।
 जन्म-न्हौन-विधि कर चले, मानों निज शुभ श्रेय ॥ ६३ ॥
 जन्ममहोच्छव देख कर, सुरपतिकी परतीत^२ ।
 बहु सुर सरधानी भये, तजि सरधा विपरीत ॥ ६४ ॥
 चौपई ।

तब सब देव जनमपुरथान । पूरवली बिधि कियौ पयान^३ ॥
 चढ़्यौ इन्द्र ऐरावत शीश । गोद लिये त्रिभुवनपतिईस । ६५।
 पूरबवत दुंदभि धुनिगाज । वे ही गीत निरत सब साज ॥
 आये जय जय करत असेस । पिताभवन कीनों परवेस । ६६।
 मनिमय आंगनमै हरि आप । हेम-सिंहासन पर प्रभु थाप ॥
 अस्वसेनभूपति तिहिं बार । देख्यौ नदन^४ नयन पसार । ६७।
 तेजपुंज निरूपम छवि देह । रोमांचित तन बढ़्यौ सनेह ॥
 माया नौद सची तब हरी । जिनजननी^५ जागी सुखभरी । ६८।
 भूषनभूषित कांति विसाल । भर लोयन निरख्यौ जिनवाल ॥

१ स्तुति करके, २ विश्वास ३ गमन, ४ पुत्र, ५ जिनमाता ।

अति प्रमोद उर उमग्यौ तबै । पूरन भये मनोरथ सबै । १६६।
 तब सुरेस रोमाचितकाय । मात पिता पूजे मन लाय ॥
 भूषन वसन भेंट बहु धरी । हाथ जोरि जुग थुति^१ विस्तरौ १००
 तुम जगमै उदयाचल भूप । पूरबदिसि देवी सुचिरूप ॥
 उदय भये त्रिभुवनरवि जहां । तुम महिमा वरनन बुधि कहा
 धनि धनि अस्वसेन भूपाल । जिनके जगगुरु^२ जनम्यौ बाल ॥
 कीरतबेल अधिक तुम बढ़ी । तीनलोकमडप सिर चढी । १०२
 धनि वामादेवी जगमाध । जिन जायौ नदन जगराय ॥
 तीनलोकतिय-^३ सृष्टिसिगार । धनि जननी तेरो अवतार । १०३
 तुम सम जगमै और न आन । जिनदेवल^४ सम पूज्य प्रधान ॥
 यो थुतिकरि हरि^५ हिये प्रमोद^६ । बाल दिवाकर दीनों गोद
 कही सकल पूरबली कथा । मेरु महोच्छव कीनों जथा ॥
 तब निज नगरविषे भूपाल । जन्म उछाह कियौ तिहिकाल ।
 हरषत सब पुरजन परिवार । घर घर भये मगलाचार ॥
 घर घर कामिनि^७ गावै गीत । घर घर होय निरत-सगीत १०६
 मगलोक बाजे बहु भेव । बाजन लगे सकल सुखदेव ॥
 श्रीजिनभवन न्हौन विस्तार । किये सकल मगल आचार ॥
 छिरक्यौ चदन नगरमंभार । रतन साथिया धरे सवार ॥
 जाचक-दान सुजन-सनमान । जथाजोग सब रीति-विधान ॥
 इहि विध अस्वसेन नरनाह । कीनों पुत्र-जनमउच्छाह ॥
 पूरनआस भये सब लोय । दुखी दीन दीखै नहि कोय । १०६।

१. स्तुति २ ससार का गुरु ३ स्त्री ४ जिन मंदिर ५ इन्द्र, ६ आनंद ७. स्त्री

दोहा ।

उदय भयौ जिनचन्द्रमा, कुलनभतिलक^१ महत ॥
 सुखसमुद्रबेला^२ तजी, बढचौ लोक-परजंत ॥११०॥
 चौपई ।

तव बहु देवनसंग विसेस । आनन्द-नाटक ठयो सुरेस ॥
 करे गान गधर्व-समाज^३ । समयजोग सब बाजे साज ॥१११॥
 देखे अस्वसेन नरनाथ । पुत्रसहित सब परिजन साथ ॥
 प्रथमरूप नव भव दरसाय । पुहपाजुलि^४ खेपी सुरराय ॥११२॥
 ताडव नाम निरत आरंभ । कियौ जगतजन करन अचंभ ॥
 नट सरूप धारचौ अमरेस । रगभूमि कीनीं परवेस ॥११३॥
 मगलोक सिंगार, सवार । सब सगीत वेद अनुसार ॥
 ताल मान विधिसहित सुभाय । रग-धरा पर फेरै पाय ॥११४॥
 करे कुसुमवरसा नभ देव । देखि इद्रकी भक्ति सुभेव ॥
 बीना मुरज^५ वासली^६ ताल । बाजे गेह गीतकी चाल ॥११५॥
 करे किल्लरी मंगलपाठ । बिरियां^७ जोग बन्यौ सब ठाठ ॥
 नाचै इन्द्र भमै बहु भाय । मोरै^८ हाथ कंठ कटि पाय ॥११६॥
 अद्भुत तांडवरस तिहिं बार । दरसावै जन अचरजकार ॥
 सहस भुजा हरि कीनी तबैं । सूषनभूषित सोहैं सब ॥११७॥
 धारत चरन चपल अति चलै । पहुमी^९ कापै गिरिवर हलै ।
 भमै मुकुट चकफेरी लेत । ताकी रतनप्रभा छबि-देत ॥११८॥

१. आकाश कुल का तिलक २. सीमा ३. समूह ४. पुष्पाञ्जलि ५. मृदंग
 ६. बांसुरी ७. काल ८. मोह ९. पृथ्वी ।

वलयाकृति^१ ह्वं भलकं सोय । चक्राकार अग्नि जिमि होय ।
 छिनमै एक छिनक बहुरूप । छिन सूच्छम छिन थूलसहपा ॥११६॥
 छिनमै निकट दिखाई देय । छिनमै दूर देह धर लेय ॥
 छिनआकासमार्हि सचरै । छिनमै निरत भूमि पर करै ॥१२०॥
 छिन छुवै तारावलि जाय । छिनरु चंदसौं परसं काय ॥
 इद्रजालवत^२ यो अमरेस । दरसाई निज रिद्विविसेस ॥१२१॥
 हाथ अगुलिनपै अपछरा । नाचै रूप रतनकी धरा ॥
 अग अग भूषन भलकार्हि । विकसत लोचन मुख मुसकार्हि ।
 निरत-भेदविधि धारै पाव । करै कटाच्छ दिखावै भाव ॥
 बहुविधकला प्रकासे सार । सुरकामिनि^३ दामिनि^४ उनहार ॥१२३॥
 तिनसजुत^५ हरि सुरतरु एम । कलपलतागनबेढचौ^६ जेम ॥
 यो नाटकविधि ठान अनूप । तिहुजग सक्र^७ किये सुखरूप ॥१२४॥
 स्वामिजनम-अतिसयपरताप । जिनवरपिता सभापति आप ।
 इन्द्र महानट नाचै जहा । तिस अवसर-बरनन बुधि कहा ॥
 तब तहां मातपिताकी साख । पारस नाम सकल सुर भाख ।
 राखि सुरासुर सेवा-जोग । चले देव सब साधि नियोग ॥१२६॥

दोहा ।

इहिविध इन्द्रादिक अमर, जन्मकल्याणक ठान ।

बहुविध पुन्य उपायकं, पहुँचे निज निज थान ॥१२७॥

१ गोल २ जादू ३ देवाङ्गना ४ विजली की तरह ५ उन सहित ६ कल्प
 वेलि से लिपटा हुआ ७ इन्द्र ।

हृग्गीति ।

इन्द्रादि जन्मसनान जिनकौ, करन कनकाचल^१ चढे ।
 गधवं देवन सुजस गायौ, अपछरा मगल पढे ॥
 इहबिध सुरासुर निज नियोग, सकल सेवाबिधि ठई ।
 ते पासप्रभु मुभ आस पुरवो, सरन सेवकने लई ॥१२८॥

इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषाया जिनेन्द्रजन्मात्सववर्णन
 नाम षष्ठमाधिकारः ।

सातवां अधिकार

— — —

दोहा ।

पारस प्रभु तजि औरकौ, जे नर पूजन जाहि ।
 कलपबिरछकौ छांडिकं, बंठे थूहर^२ छाहि ॥१॥
 चोपई ।

अब जिन बालचन्द्रमा बढे । कोमल हास-किरण मुख कढ़े ॥
 छिन छिन तात-मात-मन हरें । मुखसमुद्र दिन दिन विस्तरें ॥२॥
 अमृत इन्द्र अगूठे देय । वही पोष^३ पयपान^४ न लेय ॥
 देवी घाय^५ हरष मन धरें । मज्जनमडन^६ बिधि सब करें ॥३॥
 केई मनिभूषन पहराय । करें अलंकृत प्रभुकी काय ॥
 केई कामिनि करें सिंगार । श्रीमुखचन्द्र निहार निहार ॥४॥

१. सुनेह पबंत २ घोर=काटेदार भाइ ३ पोषण पोष ४. दूष पीना
 ५. बच्चे को पासने वाली माता ६ भृङ्गार ।

निरुपम काति कला विग्यान । लावन रूप अतुलगुनथाना १४।
 मति-श्रुति-अवधि-ग्यानवल देव । जानें सकल चराचर भेव ।
 सोमसुभाव^१ सहज उपसत । निर्मल छायाकदरसनवंत ॥१५॥
 इहिविध आठवरत्तके भये । तव प्रभु आप अनुव्रत लये ॥
 देवकुमार रहें सग नित्त । ते छिन छिन रंजें जिन-चित्त ॥१६॥
 कबहीं गज तुरंग^२ तन धरें । तिनपै चढि प्रभु जनमन हरें ॥
 कबहीं हम मोर वन जाहि । तिनसीं जगपति केलि कराहि ॥१७॥
 कबहीं जलक्रीड़ाथल गर्में । कबहीं वनविहारभू रमै ॥
 कबहीं करे किनरो गान । सो प्रभु सुजस सुनें निज कान ॥१८॥
 कबहीं निरत ठवें^३ सुर-नार । देखें जिन लोचनमुखकार ॥
 कबहीं काव्यकथारस ठान । करे गोठ^४ जिन बुधि बलवाना ॥१९॥
 बिना सिखाये विन अस्याम । सब विद्या सब कलानिवास ।
 यो सुखअनुभव करत महान । भये पास जिन जोवनवाना ॥२०॥
 दोहा ।

संपूरन जीवन समय, प्रभुतन सोहै एम ॥

सहजमनोहर चादकी, सरदसमय छवि जेम ॥२१॥

चीपई ।

प्रभुके अंग पसेव न होय । सहज सवा मलवरजित^५ सोय ॥
 उज्जलवरन रुधिर जिमि खीर^६ । सुसमचतुरसठान^७ सरीर ॥२२॥
 प्रथम सारसंहननसरूप^८ । इन्द्र-चन्द्र-मनहरन अतूप ॥

१. सोम्य स्वभाव २ घोडा ३ करे ४. गोष्ठी ५ शरीर मल रहित ६ दूध
 ७ सर्वांग मुन्दर ८. बज्रवृषमनाराच सहनन ।

पर पासप्रभुकी सुजसमाला, पहिरि दास कहावना ॥२८॥

दोहा ।

सहस अठोतर लछन ये, सोभित जिनवरदेह ।

किधौ कल्पतरुआके, कुसुम विराजत येह ॥२९॥

चोपई ।

शुभ परमानूमय जिन अग । नीलवरन नौ हाथ उतंग ॥
छवि वरनत नहि पावें ओर । त्रिभुवनजनमनमानिकचोर ॥३०॥
सतसवत्सर^१ आव^२ प्रमान । अतुल असाधारन गुनथान ॥
सत्रुभिन्नऊपर समभाव । दयासरोवर सोमसुभाव ॥३१॥
सागरसौं प्रभु अति गंभीर । मेरुसिखरसौं अधिक धीर ॥
कांति देखि लाजें मिरगांक^३ । तेज बिलोकि छियें रवि राक^४ ॥
कल्पविरछसौं अधिक उदार । तिहुँजगआसापूरनहार ॥
यौं जिनगुनकौं उपमा कहौं । तीनकाल त्रिभुवनमै नहीं ॥३३॥

दोहा ।

यो सुख निवसत पास जिन, सेवत कमला पाय ।

सोलह बरस प्रमान प्रभु, भये जगतसुखदाय ॥३४॥

सभासिहासन एक दिन, बैठे सहज जिनेन्द्र ।

सुरनरमै प्रभु यौं दिपें, ज्यो उडगनमै^५ चन्द्र ॥३५॥

अस्वसेन भूपाल तब, बोले अवसर पाय ।

नेहसलिल^६ भीजे वचन, सुनो कुमर जगराय ॥३६॥

एक राजकन्या धरो, करो उचित व्यवहार ।

१ सो षष २ आयु ३ चन्द्रमा ४ गरीब ५ तारो मे ६ प्रेमबल ।

बंमबेल आगे चलै, मुख पावै परिवार ॥३७॥
 नाभिराजकी आस ज्यौ, भरी प्रथम अवतार ।
 तथा हमारी कामना, पूरन करो कुमार ॥३८॥
 पितावचन मुनि प्रभु दियो, प्रतिउत्तर तिहि वार ।
 रिषभदेव सम में नहीं, देखौ हिये विचार ॥३९॥
 मेरी मव नौ वर्ष थिति, मोलह भये बिलीत ।
 तीम वर्ष मजम समय, फिर मत कहो पुनीत ॥४०॥
 अल्पकालथिति अल्प मुख, अल्प प्रयोजनकाज ।
 कौन उपद्रव संग्रहै समुक्ति देखै नरराज ॥४१॥
 सुन नरेंद्र लोचन भरे, रहे बदन^१ बिलखाय^२ ।
 पुत्रव्याहवर्जनवचन^३, किसे नहीं दुखदाय ॥४२॥
 चौपई ।

इहिविध मंदराग जिनराय । निवसै सबजीवनसुखदाय ॥
 पूरवकथित कमठचर मोह । पाप करत मानो नहिं चीह ॥४३॥
 मुनिहत्यावस दुर्गति गयो । पंचमनरकवास सो लयो ॥
 मत्रहजलधि^४ तहां दुख सहे । वचन द्वार जो जाहि न कहे ॥४४॥
 थिति पूरन कर छोडी ठौर । मागर तीन भम्प्यो फिर और ।
 पसुगतिमाहिं त्रिपत बहु भरो । त्रमयावरकी काया धरो ॥४५॥
 इहिविध भयो पाप अवसान^५ । काहू जन्मक्रिया मुभ ठान ।
 महोपालपुर मोहै जहां । महोपालनृप उपज्यौ तथा ॥४६॥
 पारमप्रभुकी वामा माय । इनकौ पिता भयो यह राय ॥

१ मुख २ रोना ३ पुत्र के विवाहका मना कर देना ४ मत्रह सागर ५ अत

पटरानीके प्रानवियोग । उपज्यौ विरह बढ्यौ चित सोग।४७।
 तपसी भेष धर्यौ दुख मान । पचागनि सार्ध बनथान ॥
 सीस जटा मृगछाला संग । भसम पीस लाई सब अंग ॥४८॥
 भ्रमत बनारसिके उद्यान । आयौ कष्ट करत बिनग्यान ॥
 इहि अवसर श्रीपाश्र्वकुमार । गये सहज बन करन बिहार।४९।
 राजपुत्र बहु सुरगन साथ । गज आरूढ दिपे जिननाथ ॥
 कर सुछन्द बनकेलि^१ अनूप । चलै नगरको आनन्दरूप ।५०।
 देख्यौ मगमै जननी-तात^२ । तपे पत्रपात्रक^३-तप गात ॥
 सो समीप-प्रभुको अविर्लौय । चितै चित रोषातुर^४ होया।५१।
 मै तपसी कुलवत महत । जननी-पिता पूज सब भत ॥
 अहो कुमरके यह अभिमान । विनय प्रनाम करै नहि आन ।
 इतने ई धन कारन जान । लकडी चीरन लग्यौ अयान^५ ॥
 हाथ कुल्हाडी लीनी जबै । हितमितवचन चये प्रभु तबै ।५३।
 भो तपसी यह काठ न चीर । यामै जुगल^६ नाग हैं बीर ॥
 सुनि कठोर बोल्यौ रिस^७ आन । भो बालक तुम ऐसो ग्यान
 हरिहर ब्रह्मा तुम ही भये । सकलचराचरग्याता ठये ॥
 मन करत उद्धत अविचार । चीर्यौ काठ न लाई बार ।५५।
 ततखिन खड भये जुगजीव । जैनी बिन सब अदय^८ अतीव ।
 दयासरोवर जिन तब कहै । तपसी वृथा गरब तू बहै ॥५६॥
 ग्यान बिना नित काया कसे । करुना तेरे उर नहि बसे ॥

१ बन क्रीडा २ माता का पिता (नाना) ३ पचागनि ४ कोषयुक्त
 ५ अज्ञानी ६ दो का जोडा ७ गुस्सा ८ तत्काल ९ दया रहित ।

तब सठ^१ रोषवचन फिर चयी । जननी जनकर तपसी भयी ।
 करै न मदवस विनयविधान । और उलट खडै मुझ ग्रान ॥
 पंच अगनि साधूं तन-दाह । रहूं एकपद ऊरधवांह ॥५८॥
 भूख प्यास बाधा सब सहू । सूखे पत्र पारनै^२ गहूं ॥
 ग्यानहीन तप क्यो उच्चरै । क्यो कुमार मुझ निदा करै ॥५९॥
 तब प्रभुवचन कहे हितकार । तुझ तपमै हिसाअग्रधार ॥
 छहो कायके जीव अनेक । नास होहि नित नाहि विवेक ॥६०॥
 जहां जीवबध होय लगार । तहा पाप उपजै निरधार ॥
 पाप सही दुर्गति दुख देह । यातै दयाहीन तप येह ॥६१॥
 ग्यान बिना सब कायकलेस । उत्तम फलदायक नहि लेस ॥
 जैसे तुस^३ खडन^४ कन छार । यो अजान तप अफल असार ॥६२॥
 अधपुरुष बन^५-दौमै दहै । दौर^६ मरै मारग नहि लहै ॥
 त्यो अजान उद्यम करि पचै । भवदावानलसौं नहि बचै ॥६३॥
 ऐसे ही किरिया बिन ग्यान । सो भी फलदायक नहि जान ।
 जथा पगु लोचनबल धरै । उद्यमबिन^७ दावानल जरै ॥६४॥
 तातै ग्यानसहित आचार । निहचै वाछितफलदातार ॥
 इहिबिध जिनमतके अनुसार । करि उत्तम तप यह हठछार ॥६५॥
 मै तुझ वचन कहे हितकार । तू अपने उर देखि विचार ॥
 भली लगै सोई करि मित्त^८ । वृथा मलीन करै मति चित्त ॥६६॥

१ सूख २ उपवास के पश्चात् का भोजन ३ भूमा ४ टुकड़े ५ बन की प्राय
 ६ दौटना ७ बिना पुरुषार्थ ८ मित्र ।

दोहा ।

नाग जुगल सुनि जिनबचन, क्रूरजीव अति निंद ।
 देह त्यागि ततखिन भये, पदमावति धरनिंद ॥६७॥
 नाग जुगल^१के भागकी, महिमा कही न जाय ।
 जिनदरसन प्रापति भई, मरन समय सुखदाय ॥६८॥

चौपई ।

घर आये श्री पार्सजिनन्द । सुरनरनेत्रकमलिनीचन्द ॥
 समय पाय तपसी तजि देह । भयी जोतिषी संवर तेह ॥६९॥
 देखो जगमै तपपरभाव । ग्यान बिना बांधी सुरआव^२ ॥
 जे नर करे जैनतप सार । तिन्हें कहा दुर्लभ संसार ॥७०॥
 स्वामी मगन सुखोदधिमाहिं । हर्ष विनोद करत दिन जाहिं ।
 प्रभुके इष्ट-वियोग न होय । सोगसंजोग न कबही कोय ॥७१॥
 धायपित्तकफजनित विकार । सुपनं होय न सोच विचार ॥
 जरा न ब्यापै तेज न जाय । ना मुखकमल कभी कुम्हलाय ७२
 होहि नहीं दुखकारन आन । पुन्यउदधिबेला भगवान ॥
 यो सुखभोग करत दिन गये । तब जिन तीस वर्षके भये ७३ ।
 नृप जयसेन अजुध्याधनी । भक्ति प्रीत प्रभुसौं अति घनी ।
 तुरगादिक बहु वस्तु अनूप । पठई^३ विनय वचन कहि भूप ७४
 राजदूत चलि आयौ तहां । सभा थान जिन बंठे जहां ॥
 हेमासन पर सोहैं एम । हिमगिरिसिखर स्यामघन जेम ७५ ।
 देखि दूत रोमाचित भयौ । बहुबिध चरन कमलकों नयौ ।

मान्यो मफलजन्म निजमार । त्रिभुवनपति परतच्छं निहार ॥
 घरी भेद जो राजा दई । विनय प्रनाम वीनती चई ॥
 तब पूछे तहा त्रिभुवनधनी । मंथनि नगर अजोघ्यातनी ॥७७॥
 कहै दूत कर जुगं सिर धार । वरने तोर्यकर अचतार ॥
 मोख गये वरने तिहिठाम । मुनि स्वामा चित्त उर ताम ॥७८॥

केनो जान ।

मुनि दूत बचन बंरागे । निज मन प्रभु मोचन लागे ॥
 मैं इन्द्रामन मुख कीर्न । लोकोत्तम भोग नवीने ॥७९॥
 तब नृपति भई तहां नाहीं । क्या होय मनुष्यपदमाहीं ॥
 जो सागरके जलसेती । न बुझी तिम्ना तिस एती ॥८०॥
 मो डाभ-अनीके पानी । पीवन अब कैसे जानी ॥
 ईधनसौं आगि न घापै । नदियों नहि ममूद ममापै ॥८१॥
 यों भोगविषै अतिभारो । तृपते न कभी तनघारी ॥
 जो अधिक उदय ये आवै । तो अधिकी चाह बड़ावै ॥८२॥
 जो इनसौं तृपति विचारै । मो बमानर घृत डारै ॥
 इन येवन जो मुञ्ज पावै । मो आको आवै उम्हावै ॥८३॥
 ये भीम भुजंग मरीखे । भ्रम-भाव-उदय मुभ दीखे ॥
 चाखतहीके मुख मोठे । परिपाक ममय कहु दीठे ॥८४॥
 ज्यों लाय घतुरा कोई । देखे सब कचन मोई ॥
 धिक् ये इन्द्री-मुख ऐमे । विषबेल लगे फल जेसे ॥८५॥

१ अन्यत्र ० कदा ३ कोनों हाथ ४. प्यास ५. दान का करी हिस्सा
 ६. नर ७. जरीन्धारी ८. अग्नि ९. आकहे का पीवा १०. अन्न ११. उदयमान

इनही बस जीव अनादी । भव भाँवर^१ भ्रमत सवादी^२ ॥
 इन ही बस सीख न मानै । नानाबिध पातक^३ ठानै ॥८६॥
 थिर जगम^४ जीव संघारै । इनके बस भूठ उचारै ॥
 पर चोरीसों चित लावै । परतिय संग सील गमावै ॥८७॥
 परिग्रह-तिसना^५ विस्तारै^६ । आरंभ उपाधि विचारै^७ ॥
 इत्यावि अनर्थ अलेखै^८ । करि घोर नरकदुख देखै ॥८८॥
 ये ही सुखपर्वतकेरे । जग फोरन वज्र बड़ेरे ॥
 ये ही सब दोषभडारे । धन-धर्म-चुरानवहारे ॥८९॥
 मोही जन मोहैं योहीं । ये आदरजोग न क्यो हीं ॥
 इनसों ममता तज दीजै । पर त्यागत ढील न कीजै ॥९०॥
 सामान पुरुष जग जैसे । हम खोये ये दिन ऐसे ॥
 सजम बिन काल गमायो । कछु लेखेमै नहि लायो ॥९१॥
 ममताबस तप नहि लीनों । यह कारज जोग न कीनों ॥
 अब खाली ढील न कीजै । चारित-चिंतामनि लीजै ॥९२॥
 दोहा ।
 भोगविमुख^९ जिनराज इमि, सुधि कीनी. सिवस्थान^{१०} ।
 भावै बारह भावना, उदासीन हितदान ॥९३॥
 चौपई ।
 द्रव्य सुभाव बिना जगमाहिं । परजै^{११} रूप कछु थिर नाहिं ॥
 तनधन आदिक दीखत जेह । कालअगनि सब ई धन तेह ॥९४॥

१ ससार परिभ्रमण २ स्वाद लेनेवाला ३ पाप ४ प्रस ५ साजच
 ६ फेलावै ७ रोग-चिंता ८ बेहिसाब ९ उदास १० मुक्तिस्थान ११ पर्याय

भववन भ्रमत निरतर जीव । याहि न कोई सरन सदीव ॥
 व्योहारं परमेठी-जाप । निहचै सरन आपकौ आप ॥६५॥
 सूर^१ कहावै जो सिर^२ देय । खेत^३ तजै सौ अपजस लेय ॥
 इस अनुसार जगतकी रीति । सब असार सब ही विपरीत ॥६६॥
 तीनकाल इस त्रिभुवनमाहिं । जीव-सगाती^४ कोई नाहिं ॥
 एकाकी सुख दुख सब सहै । पाप पुन्य करनीफल लहै ॥६७॥
 जितने जग सजोगो^५ भाव । ते सब जियसौं भिन्न सुभाव ॥
 नितसंगी^६ तन ही पर सोय । पुत्र सुजन पर क्यो नहिं होय
 असुचि^७ अस्थि^८-पिंजर तन येह । चामवसनबेढयो^९ घिनगेह^{१०} ।
 चेतनचिरा^{११} तहां नित रहै । सो बिन ग्यान गिलानि न गहै
 मिथ्या अविरत जोग कषाय । ये आस्रवकारन समुदाय ॥
 आस्रव कर्मबन्धकौ हेत । बन्ध चतुरगतिके दुख देत ॥१००॥
 समिति गुपति अनुपेहा^{१२} धर्म । सहन परीषह संजम पर्म ।
 ये सवरकारन निरदोख । संवर करे जीवकौ मोख ॥१०१॥
 तपबल पूर्वकरम खिर जाहिं । नये ग्यानबल आवे नाहिं ।
 यही निर्जरा सुखदातार । भवकारन-तारन निरधार ॥१०२॥
 स्वयसिद्ध त्रिभुवनस्थित जान । कटिकर^{१३} धरे पुरुषसठान^{१४} ।
 भ्रमत अनादि आतमा जहाँ । समकित बिन सिव होय न तहाँ ॥

१ शूरवीर २ मस्तक कटावे ३ युद्ध क्षेत्र ४ साथी ५ सयोगी ६ सदा
 साथ रहने वाला ७ अपवित्र ८ हड्डियोका पीत्ररा ९ चमड़े का कपडा लिपटा
 हुआ १० घृणा का स्थान ११ चेतन रूपी पक्षी १२ अनुप्रेक्षा (बार बार
 चिन्तन) १३ काँटियो पर हाथ १४ पुरुष के आकार जैसा ।

दुर्लभ धर्म दमांगे पधित्त । सुखदायक सहगामी नित्त ॥
 दुर्गति परत गही कर गहें । देय सुरग सिवचानक यहें ॥१०४॥
 सुतभ जीवकी सब गुण सदा । नौघीवक तार्द संपवा ॥
 बोधरतन दुर्लभ सत्तार । भयदरिद्रदुष्पमेहनहार ॥१०५॥
 ये दस-टांघ भावना भाय । दिद्व बंरागि भये जिनराय ॥
 देहभोग संसार सरूप । मत्र असार जान्यो जगभूप ॥१०६॥
 इतने नोकार्तक सुर धाय । पुहपोजलि दे पूजे पाय ॥
 बह्यलोकवासो गुनधाम । देव रिपीश्वर जिनकी नाम ॥१०७॥
 मत्र पूरवपाटी वृधवंत । सहज गोमसूरति उपसंत ॥
 वनिताराग^१ हिये नहि यहें । एकजनम धरि सिवपद लहें ॥१०८॥
 तीर्थकर जय विरक्त^२ होय । हर्षवत तय आवें सोय ॥
 और कल्याणक करे प्रनाम । सदा सुखी निवसं निजधाम ॥१०९॥
 हाय जोरि बोले गुनकूप^३ । युतिवायक^४ अर सिच्छारूप ।
 धनिविवेक यह धन्य सयान^५ । धनि यह श्रीसर वयानिधान ॥
 जान्यो प्रभु संमार असार । अथिर अपायन^६ देह निहार ॥
 इन्द्रिय सुख सुपने सम दीस । सो याही विध हैं जगईश १११
 उदासीन असि^७ तुम करे धरी । आज मोहसेना थरहरी ।
 बढयो आज विवरमनि सुहाग । आज जगे भविजन सिरभाग
 जग प्रमादनिद्रावस होय । सोवत है सुधि नार्ही कोय ॥
 प्रभु धुनिकिरन पयासै^८ जर्ब । होय सचेत जगे जन तर्ब ॥११३

१. दस प्रयोग २. स्त्री प्रेम ३. विरक्त ४. कुषा ५. स्तुतिरूप वचन
 ६. मगभदार ७. धनविभ्र ८. तनवार ९. हाय १०. प्रकानित हो ।

यह भव दुस्तर^१ पारावार^२ । दुखजतपूरित वार न पार ॥
 प्रभु उपदेश पोत^३ चढि धोर । अब सुखमों जंहे जन तोर ॥११४॥
 सिवपुरि पौर^४ भरमपट^५ जहा । मोह मुहर दिढ कोनी तथा ॥
 तुम वानी कूची कर धार । अब भवि जाँव लहेँ पयसार^६ ॥११५॥
 स्वयबुद्ध बोधन-समरत्य । तुम पर प्रतिबुध^७ वचन अकत्य ॥
 ज्यो सूरज आगे जिनराज । दोष दिखावन है वेकाज ॥११६॥
 हम नियोग औसर यह भाय । तातं करे वोनती आय ॥
 धरिये देव महाव्रत भार । करिये कर्मसत्रुसधार ॥११७॥
 हरिये भरम तिमिर सर्वथा । सूभेँ सुरगमुकतिपथ जथा ॥
 यो थुति करि बहुभाव दिढाय । वारवार चरनन सिर नाय ॥११८॥
 साधि नियोग^{१०} गये निजथान । लोकातिक सुर बडे सयान ॥
 अब चौविध इन्द्रादिक देव । चढि निज निज वाहन बहुभेव^{११} ॥
 हषित उर परिवारसमेत । आये तृतीय-कल्याणक^{१२} हेत ॥
 सुर वनिता नाचें रस भरौं । गावें मधुरगीत किन्नरौं ॥११९॥
 बाजे विविध बजें तिस वार । करे अमरगन जय जय कार ।
 सोवन^{१३}-कलस भरे सुरराय । विमल छीरसागर-जल लाय ॥१२०॥
 हेमासन^{१३} थापे जिनराय । उच्छ्रवसहित न्हीन-बिधि ठाय ॥
 भूषन वसन सकल पहिराय । चदनर्चाचत कोनी काय ॥१२१॥
 इस औसर प्रभु सोहैं एम । मोखबधूवर डूलह जेम ॥

१ कठिनता से तरनेयोग्य २ समुद्र ३ जहाज ४ पोल ५ किवाड़ ६ म्होर-सी
 ७ प्रवेश ८ उपदेश योग्य ९ वेकार १० नियम से होनेवाला काय ११ तप
 कल्याण १२ सोने के १३ स्वर्ण सिंहासन ।

कहि वंराग वचन जिन तब । प्रतिबोधे^१ परिजन जन सब ॥
 अति हठसौ समझाई माय । लोचन भरे वदन विलखाय ॥
 विमला नाम पालकी साज । आनी इन्द्र चढे जिनराज ॥१२४॥
 पहले भूमिगोचरी^२ राघ^३ । सात पैड़ लीनी सुखदाय ॥
 फिर विद्याधर राजा रले । पैड़ सात ही ते ले चले ॥१२५॥
 पोछे इन्द्रादिक सुरसघ । काधे धरी चले पुर लघ ॥
 ना अति निकट न दीसै दूर । नभ मारग देखें जन भूर ॥१२६॥

दोहा ।

जिस साहबकी^४ पालकी, इन्द्र उठावनहार ॥

तिस गुनमहिमा-कथन अब, पूरन होउ अपार ॥१२७॥

चौपई ।

यो सुर नर हरषित भये । अस्व नाम वनमै चलि गये ॥
 बड़तरुतले सिला सुभ जहां । कीनों सत्री^५ साथिया तथा ॥
 उतरे प्रभु अति उत्तम ठाम । सात भयो कोलाहल ताम ॥
 सत्रुमिश्र ऊपर समभाव । तिन-कचन गिन एकसुभाव ॥१२८॥
 सोमभाव^६ स्वामी उर धार । पटभूषण^७ सब दीने डार ॥
 उदासीन उत्तरमुख भये । हाथ जोर सिद्धन प्रति नये ॥१३०॥
 दुबिध परिग्रह तजि परमेस । पच^८-मुष्टि लोचे^९ सिरकेस ॥
 सिवकामिनिकी दूती जोय । धरी दिगंबरमुद्रा सोय ॥१३१॥

१ समझाये २ पृथ्वी पर चलने वाले ३, राजा ४ पदवीधारी पुरुष
 ५ इन्द्राणी ६ शौम्यसाध (रागद्वेष रहित) ७ वस्त्राभूषण ८ पांच मुट्टी
 ९ उच्चाडे ।

आठवाँ अधिकार

मोरटा ।

जाप्रभुकी जसहंस^१, तीनलोक विजरं बसै ॥
सो मम पाप घिघंस, करी पास परमेस नित ॥१॥
चोपई ।

श्रद्धा जिन उठे जोग-अवसान । देहहेत उद्यम उर आन ॥
परमउदास अधोगत^२ दीठ^३ । महजसातमुद्रा मनईठ^४ ॥२॥
दया-नीर-निमंल-परवाह । गुलर-खेटपुर पहुचे नाह^५ ॥
लाभ अलाभ बराबर धार । निर्धन धनकी नाहि विचार ॥३॥
ब्रह्मदत्त नूपति बड़भाग । प्रभुकी देखि बढची उरराग ॥
उत्तमपात्र सकलगुणधाम । करि प्रनाम पड़िगाहे ताम ॥४॥
हेमासन थाप्यो नरराय । प्रासुक जल परछाले^६ पाय ॥
आठभांति पूजा विस्तरी । हाथ जोर अजुलि सिर धरी ॥५॥
मन-तन-वायक^७ सुद्धसरूप । नी दातागुनसंजुत भूप ॥
सुद्ध अन्न दीनी परधीन । प्रासुक मधुर दोषदुखहीन ॥६॥
उत्तमपात्र दानविधि करी । तीनभवन कीरति विस्तरी ॥
पंचाचरज भये नृपधाम । फिर स्वामी आये वन-ठाम ॥७॥
करे घोर तप सार्धे जोग । दरसन करत मिटे सब सोग ॥
अवल अंग मुख सोही मीन । एकचित्त निजपद चितौन^८ ॥८॥

१. कीर्ति रूपी हम २. नीचे देखना ३. दृष्टि ४. मन को माने वाली ५. नाथ
६. पीये ७. बचन ८. चिदान ।

दोहा ।

यों दुद्धर तप करत अति, धर्मध्यानपदलीन ॥

चार मास छदमस्त^१ जिन, रहे रागमलहीन ॥१५॥

चौपई ।

एक दिवस दीच्छाबन जहा । जोगलीन प्रभु निवसें तहां ॥

काउसग^२ तन विगतविरोध । ठाड़े जिनवर जोगनिरोध ॥१६

संवर नाम जोतिषी देव । पूरवकथित कमठचर एव ॥

अटक्यौ अबर^३ जात विमान । प्रभु पर रह्यौ छत्रवत आन ॥१७

ततखिन^४ अवधिग्यानबल तबै । पूरव बंर संभालो सबै ॥

कोप्यौ अधिक न थाभ्यौ जाय । राते^५ लोयन^६ प्रजुली^७ काय^८ ॥

आरंभ्यौ उपसर्ग महान । कायर देखि भजे भयमान ॥

अधकार छाया चहुंओर । गरज गरज बरखें घन घोर ॥१८॥

भरै नीर मुसलोपम धार । वक्र^९ बीज^{१०} भूलके भयकार ॥

बूड़े गिरि तरुवर बनजाल । भ्रूभा वायु बही विकराल ॥२०॥

जल थल भयो महोदधि^{११} एम । प्रभु निवसें कनकाचल^{१२} जेम ॥

दुष्ट विक्रियावल अविवेक । और उपद्रव करे अनेक ॥२१॥

छप्पय ।

किलकिलंत बेताल^{१३}, काल कज्जल^{१४} छबि सज्जहि ।

भौ कराल विकराल, भाल मदगज जिमि गज्जहि ॥

१ केशलजान के पूर्व की दशा, २ कायोत्सर्ग ३. आकाश ४ इसी समय
५ सात ६. आखें ७ जली ८. शरीर ९. टेढ़ी १०. विजली ११. समुद्र
१२. सुमेरु १३. व्यतरदेव १४. काजल के समानकाले ।

मु डमाल^१ गल धरहि, लाल लोयननि डरहि जन ।
 मुख फुलिग^२ फुंकरहि, करहि निर्दय धुनि हन हन ॥
 इहि बिध अनेक दुर्भेष^३ धरि, कमठजीव उपसर्ग किय ।
 तिहुंलोकबद जिनचद्रप्रति, धूलि डाल निज सीस लिय ॥२२॥
 दोहा ।

इत्यादिक उतपात सब, वृथा भये अति घोर ।
 जैसे मानिक दीपकों, लगै न पौन भकोर ॥२३॥
 प्रभु चित्त चलयौ न तन हल्यौ, टलयौ न धीरज ध्यान ।
 इन अपराधी क्रोधवस, करी वृथा निज हान ॥ २४ ॥
 पावक^४ पकरै हाथसौं, अवसि^५ हाथ जलि जाय ।
 परके तन लागै नहीं वाके पुन्यसहाय ॥ २५ ॥
 प्राणी विषयकषायवस, कौन कौन विपरीत ।
 करत हरत कल्याण निज, जलौ जलौ यह रीत ॥ २६ ॥
 प्रभु अचित्य^६-महिमा-धनी, त्रिभुवनपूजित-पाय ।
 तिनके यह क्यो सभवे, सुर उपसर्ग कराय ॥ २७ ॥
 इहि बिध जो कोई पुरुष, पूछै संसय राखि ।
 ताके समुभावन निमित्त, लिखूं जिनागम साखि ॥२८॥
 चौपई ।

अवसर्पनि उतसर्पनि काल । होहि अनतानत विसाल ॥
 भरत तथा ऐरावतमाहि । रेंहटघटोवत आवै जाहि ॥३१॥

१ कटे गिरो की माला २ भाग ३ छोटे भेष ४ अग्नि ५ अवस्य
 ६ चित्त मे न माने योग्य ।

चौपई ।

इहिबिध त्रैसठ प्रकृति निवार । घाते कर्म घातिया चार ॥
 चतस्रंधेरी चौदस जान । उपज्यौ प्रभु के पंचम^१ ग्यान ॥५०॥
 लोकालोक चराचर भाव । बहुबिध परजयवंत सुभाव ॥
 ते सब ग्यान एक ही वार । भूलके केवलमुकुर^२ संभार ॥५१॥
 भये अनंत चतुष्टयवंत । प्रगटी महिमा अतुल अनंत ॥
 दिव्य परम श्रौदारिक देह । कोटि भानुदुति जीती जेह ॥५२॥
 अलीकौक अद्भुत संपदा । मडित भये जिनेसुर तदा ॥
 बचनअगोचर महिमा सार । बरनन करत न पइये पार ॥५३॥

दोहा ।

पाच हजार प्रमान धनु^३, उपजत केवलग्यान ॥
 अंतरिच्छ^४ प्रभु तन भयो, ज्यों सति अबरथान *॥५४॥

चौपई ।

प्रकटी केवल रविकिरन जाम । परिफूल्यौ त्रिभुवन कमल ताम
 आकास अमल दीसे अनूप । दिसि-विदिसि भई सब विमलरूप
 सुरलोक बजै घंटागरिष्ट । तरु करन लगे तहां पुहपविष्ट ॥
 इद्रासन कापे अतिगरीस । आनस्र^५ भये मनिमुकुट सीस ॥५६॥
 इत्यादिक बहुबिध चिह्न चार । प्रभु केवलसूचक भये सार ॥

* उक्त च गाथा—

जादे केवलगाणे परमोदार जिगाण सध्वाण ।
 गच्छदि उदरे चावा पचसहस्राणि वसुहाओ ।

१ केवलज्ञान २ काप ३ धनुष ४ आकाश ५ झुके ।

नथ अरुधि जोति जान्यो मुनेस । उर रने कर्म पाणमस्तिंमरु-
 मिहामन तजि निज सोमनाथ । प्रनमो परीस मुद्र उर न मरु
 उद्रानो पृष्ठे कह्ये रन । कयो ग्रामन तजि उरने तुम्न ॥५॥
 किन जारन न्यासो नयो सोम । याकी प्रतिउत्तर देह ईम ॥
 तव दोने विरुमिन देवराज । प्रभु उपज्यो केवल्लयान अत्र ॥
 ऐरावनगज मजि मपन्धियार । प्रथमेद्र चन्वो आनद अयार ।
 वाजे वृष्ट पट्ट पयान-भेन । मय अरुनन करन लग्न अवेर ॥६॥
 ईमानप्रभुप्र मय स्वर्गनाथ । निजवाहन चटि चटि चने नाथ ।
 हरिनाद मुन्यो जोनिषी देव । अत्रादि चने तद पत्र नेव ॥७॥
 भावन-धर वाजे मत्र नृनि । दमविद्य मुन निजने हरप पूरि ॥
 वमु विनर-धर गरजे निमान । यो परिजन मय कीनी पयान ॥८॥
 यो चलो चतुरविध सुरममाज । जिन-केवल्लपूजा करन काज ।
 अवर तजि आये अवनिमाहि । जहँ ममोवरन धृज फरहराहि
 जो मुरपतिकी उपदेश पाय । धनपतिने कीनी प्रथम आय ॥
 वर पचवरन मनिमय अनूप । जगलश्रीकी कुलगृह मरुप ॥९॥

दाहा ।

ममोवरनकी नपदा, लोकोत्तर तिहू भीन ।

वचनद्वार वरुन तिम, सो बुध ममरय कीन ॥६५॥

नोरडा ।

पं धन अवनर पाय, धर्मद्वयानकारन निरचि ॥

निरयो लेन मन लाय, पढन मुनत आनंद बड़ ॥६६॥

१ स्वामी के नरुणा = गनन ना बाजा के निहू का ध्वनि १ श्रे
 ६ प्रणु ७ प्रठ = कुच ।

चापई ।

पहले गोलपीठिका ^१ ठई । इद्रनोलमनिमय निर्मई ॥
 पांच कोस चौड़ी परवान । तीनलोक उपमा नहिं आन ॥
 जाके चहुदिस गिरदाकार^२ । बनी पैड़िका^३ बीसहजार ॥
 हाथ हाथपर ऊचो लसैं । नभपरजंत देखि दुख नसैं ॥६७॥
 तापर धूलीसाल उतग । पंचरतनरजमय सरवंग ॥
 विबिध बरनसों बलयाकार^४ । भलकै इन्द्रधनुष उनहार ॥६८॥
 कहीं स्याम कहि कंचनरूप । कहि विद्रुम कहि हरित श्रुतप ॥
 समोसरन लछमीकौ एम । दिपै जड़ाऊ कु डल जेम ॥६९॥
 चारों दिसि तोरन बन रहे । कनक थभ ऊपर लहलहे ॥
 आगे मानभूमि है जहा । मानथभ^५ चारोदिसि तहां ॥७०॥
 तिनकी प्रथम पीठिका बनी । सोलह पैड़ी संजुत ठनी ॥
 चार चार दरवाजे ठान । तीन तीन तहा कोट महान ॥७१॥
 तिनमै और त्रिमेखलपोठ^६ । तिनपै मानथभ थिर दीठ ॥
 अति उतग कचनके ठये । छत्रधुजादिकसों छबि छये ॥७२॥
 जिनै देखि मानी मद-बढे । उतरे मान-महागिरि-चढे ॥
 मूलभाग प्रतिमा मनहरै । इद्रादिक पूजा विसतरै ॥७३॥
 एक एक दिसि चहुं दिसि ठई । सहज वापिका^७ वारिज-छई
 नदादिक सुभ जिनके नाम । चारों दिसि सोलह सुखधाम ॥
 आगे खाई सोभित खरी । आँडी अधिक विमलजलभरी ॥
 रतन-तीर राजै चहुंओर । हसकलाप^८ करै जहं सोर ॥७५॥

१ चवूतरा २ गोलाकार ३ सीढिया ४ गाल ५ मानस्वम् ६ तीन मेखला वाला चवूतरा ७. बावडी ८ हसी का समूह ।

दोहा ।

बलयाकृति^१ खाई बनी, निर्मल जल लहरेय ।

किधौ विमल गंगानदी, प्रभु परदछना देय ॥७६॥

चौपई

आगे पुहपवेल^२-वन सार । महासुगध^३ मधुपमुखकार ॥
 सघन छाह सब रितुके फूल । फूले जहां सकल सुखमूल ॥७७॥
 याकं कछु अतर दुति धरै । कचन कोट प्रथम मनहरै ॥
 बलयाकृति अति उन्नत जेह । मानौ मानुषोत्र गिरि येह ॥७८॥
 चहुँदिसि सोहैं चार दुवार । रूपमई तिखने मनहार ॥
 रतनकूट ऊपर जगमगै । लाल बरन अतिसुन्दर लगै ॥७९॥
 किधौ अरुन-छवि हाथ उठाय । जगलछमो नाचं विहसाय ।
 नौनिधि जहा रहैं अभिराम । पिगलादि हैं जिनके नाम ॥८०॥
 प्रभुअजोग^४ गिन दीनी छार^५ । वे मचली^६ सेवैं दरवार ॥
 मंगल दरब एकसौ आठ । धरे प्रतेक मनोहर ठाठ ॥८१॥
 गावैं जिनगुन देवकुमार । और विविध सोभा तह सार ॥
 वितरदेव खड़े दरवान । दिनयहीनको देहि न जान ॥८२॥
 यह पहले गढ़की बिधि कही । आगे और सुनौ अब सही ॥
 गोपुर^७ तजि चारौ दिसि गली । गमनहेत भीतरकौ चली ॥८३॥
 तहां निरतसाला दुहैं पास । सब दिसिमै जानौ सुखवास ॥
 सुवरनथभ फटिकमय भीत । तिखनी^८ मनिमय सिखर पुनीत

१ गोल २ पुष्प वेल ३ मीरे ४ अयोग्य ५ राख ६ गिरीपत्नी
 ७ दरवाजे ८ तीन खन का ।

सुरवनिता नाचै तहँ एम । लावन-तोय तरंगनि^१ जेम ॥
मदहास मुख सोहँ खरीं । जिनमगल गावँ सुखभरीं ॥८५॥
बाजँ बोन बासली ताल । महा मुरजधुनि होय रसाल ॥
प्रागे बीथी अतर धरे । दोनों दिसा धूपघट भरे ॥८६॥

सोरठा ।

स्याम वरन यह जानि, धूप धुआं नभकों चलयौ ।
किधौं पुन्य-डर मानि, धुआं मिस पातक^२ भज्यौ ॥८७॥

चोपई ।

प्रागे चार बाग चहुँ ओर । प्रथम असोक नाम चितचोर ॥
सप्तपरन चंपक सहकार । ये इनकी संग्या^३ अविधार ॥८८॥
सब रितुके फल-फूलन-भरे । बिरछ बेलसौ सोहत खरे ॥
धापीमडप महल मनोग । राजँ जहां जथाबिध जोग ॥८९॥
चैत-बिरछ चारों बनमाहि । मध्यभागसुन्दर छवि छाहि ॥
जिनमुद्रामडित मन हरे । सुर नर नित पूजा विस्तरें ॥९०॥
बाग ओट बेदी चहुँओर । चार द्वारमडित छवि-जोर ॥
अब इस बन-बेदीतँ सही । गढपरजत गली जे रही ॥९१॥
तिनमें धुजापाति फहराहि । कचनथभ लगी लहराहि ॥
दसप्रकार आकार समेत । तिनके भेद सुनौ सुखहेत ॥९२॥
माला बसन^४ मोर अरविद^५ । हंस गरुड हरि वृषभ गरुद^६
चक्रसहित दस चिहन मनोग । धुजा दुकूलनि^७ सोहँ जोग ॥

१ जहर २ पाप ३ नाम ४ बस्त्र ५ कमल ६ हाथी ७ कपड़ा ।

ये दस एक जातकी खान । एक एकमी आठ प्रमान ।
 दममं श्रमी मवं मिल भई । एक द्विमासं मब वरनई ॥६४॥
 चारों दिमिकी जोट मरीम । चान हजान तीनमें बीम ॥
 यह परमित जिनमाननमाहि । अर्निविचित्र मोभा अधिकाहि ।
 हालं धुजा पवन-वम येह । जिनपूजन भवि आये जेह ॥
 पयखेद तिनकी मन श्रान । करत किर्षी मनकार-विधान ॥६५॥
 मानयभ धुजयभ अनूप । चंतविरछ वेदी गटनप ॥
 इत्यादिक ऊंचे इकमार । जिन-तनतं वारह गुन धार ॥६७॥
 आगे रजतमयी निरमान^१ । तु ग^२ कोट अति धवल महान ।
 किर्षी सेत प्रभु-मुजस-प्रदान । फेरी देय फिरशौ चहुपान ॥६८॥
 पूरववत दरवाजे चार । रतनमई अनुपमछवि-धार ॥
 नौनिधि मगलदरव नमाज । तोरनप्रमुख और मव साज ॥६९॥
 प्रथमकोटवर्गननसम जान । ठाडे भवन देव दरवान ॥
 यासों लगी और अब गली । चारों तरफ एक नो चली ॥१००॥
 कलपविरछ-वन राजें तथा । दस विध कलपतरोवर जहा ॥
 भूपन वमन लगे जिन डार । मोभा कहत न लहिये पार ॥
 मध्यभाग जिनविवसमेत । सिद्धारथ^३ तत्वर छवि देत ॥
 चहुँदिमि वेदी चहुँ दिमि द्वार । रचना और अनेक प्रकार ॥
 डम वेदीके बाहर भाग । आगे फटिक कोट लों लाग ॥
 अति विचित्र महलनकी पाति । जिन सिर रतनकूट बहुभाति

^१ बनाई ० ऊँची ३ एक वृक्ष विशेष ।

चंद्रकांतिमनि-भासुर^१ भीत । सुवरनमय तहा थभ पुनीत ॥
 सुरनरनाग रमै जितमाहिं । किन्नरगन बहु केलि करारहिं ॥१०४
 वीथी^२ मध्यदेस सुभरूप । पञ्चराग-मनिमय नव तूप ॥
 घुजा छत्र घंटा छवि देहिं । जिनमुद्रासौं मन हर लेहिं ॥१०५
 आगं तृतीय कोट बन एम । फटिकमई निर्मल नभ जेम ॥
 अति उत्तम सो वलयाकार । लालवरन मनिनिमित्त द्वार ॥
 और कथन पूरववत जान । ठाढ़े सुरगदेव दरवान ॥
 महामनोहर लोचनहारि । अनुपमसोभा अचरजकारि ॥१०७॥
 अब मुनि मध्य भूमिकी कथा । फटिककोटभीतर विधि जथा ॥
 गढसौं प्रथमपीठ लग लगी । फटिकभीत सोलह जगमगी ॥१०८
 तिनपे रतनथभ छवि देहिं । प्रभा-^३जालसौं तम हर लेहिं ॥
 तिनहीपे श्रीमडप छयी । फटिकमई नभमै निरमयी ॥१०९॥

सोरठा ।

या श्रीमंडपमाहिं, निरावाघ^४ तिहुं जग वसैं ।
 भोर^५ होय तहां नाहिं, त्रिभुवनपति अतिसय अतुल ॥११०॥

चीपई ।

भीतन बीच गली जे रहीं । बारहसभा तहां जिन कहीं ॥
 बंठे मुनि अपछर अज्जिया^६ । जोतिष-वान-असुर-सुर-तिया ।
 भावन वितर जोतिषि देव । कल्पनिवासी नर-पसु एव ॥
 तिनमें प्रथम पीठिका ठई । अनुपम बेंडूरज-मनिमई ॥११२॥

१ चमकदार २ गली ३ चमक ४ वाघारहित ५ भीड़ ६ आर्थिका ।

मोरकठवत आभा जाम । मोनह पंड माल चहुं पाम ॥
 वारह सभा महा दिमि चार । निनकी यह पथ मातह मार ।
 मगलदरव जहा मत्र धरे । जचदेव मेवक तथा गरे ॥
 धमचक्र तिनके सिर दिपे । जिनरी देगि दिवाकर त्रिपे १११
 तापर दुतिय पोठिका बनी । चामोक^२मय राजत घनी ॥
 मेरुशृङ्गवत^३ उन्नत एम । जगमगाय मडल रवि जेम १११५
 आठधुजा आठी दिमि जहा । तिन मोभा वरनन बुधि कहा ।
 तिनमें आठ चिहन चित्राम । चक्र गयद वृषभ अभिराम ११
 वारिज वसन केहरीरूप । गरुड माल आकार अनूप ॥
 मदपवनवस हार्ले जेह । किधौ पापरज भारत येह ॥ ११७ ॥
 तापर तृतिय पोठिका और । तीन मेखला-मडित ठौर ॥
 सर्वरतनमय भलकत खरी । फिरन जास दस दिसि विस्तीर ॥
 गधकुटी तथा बनी अनूप । पचरतनमय जडित सरूप ॥
 जाके चार द्वार चहुंओर । भलकं मानिक होरा-होर १११६
 तीनपोठ सिर सोहत खरी । किधौ^३ त्रिजगछवि नीची करी
 परम सुगध न बरनी जाय । सुन्दर सिखर धुजा फहराय ॥
 तहां हेम-सिंहासन सार । तेजसरूप तिमिर छयकार ॥
 नानारतन प्रभामय लसे । जगलछमी प्रति किरनन हसे ॥
 वचनगम्य नहिं सोभा जहा । अतरीच्छ^५ प्रभु राजें तथा ॥
 त्रिभुवनपूजित पासजिनेस । ज्यो जगसिखर सिद्धपरमेस ॥

दोहा ।

समवसरन रचना अतुल, ताकौ अति विस्तार ।
संपति श्रीभगवानकी, कहत लहत को पार ॥१२३॥
सोरठा ।

जिन-बरनन-नभमाहि, मुनि विहग उद्यम करे ।
पै उड़ि पार न जाहि, कौन कथा नर दीनकी ॥१२४॥
गीता

राजत उम्रंग असोक तरुवर, पवनप्रेरित थरहरै ॥
प्रभु निकट पाय प्रमोद नाटक, करत मानौ मनहरै ॥
तिस फूलगुच्छन भ्रमर गुंजत, यही तान सुहावनी ।
सो जयौ पासजिनेन्द्र, पातकहरन जगजूडामनी' ॥१२५॥
निज मरन देखि अनग डरप्यौ, सरन हूँढत जग फिरचौ ।
कोऊ न राखै चोर प्रभुकौ, आय पुनि पायन गिरचौ ॥
यो हार निज हथियार डारे, पुहप-बरसा मिस भनी ।
सो जयौ पासजिनेन्द्र, पातकहरन जगजूडामनी ॥१२६॥
प्रभु अग नील उतग नगतै^२, वानि^३ सुचि सीता ढली^४ ।
सो भेदि भ्रम गजदत पर्वत, ग्यानसागरमै रली ॥
नय सप्तभगतरंगमडित, पापतापविधसनी ।
सो जयौ पासजिनेन्द्र, पातकहरन जगजूडामनी ॥१२७॥
चद्रार्चिचय^५ छबि चारु चचल, चमरवृंद सुहावने ।
ढोलै निरतर जच्छनायक, कहत क्यों उपमा वने ॥

१. शिखामणी २. पहाड ३. वाणी ४. बयी ५. चन्द्रिका ।

यह नीलगिरिके मिंगर मानी, मेघकर लागी घनी ।
 सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१२८॥
 हीराजवाहरगघित^१ वहविध, हेमग्रामन राजग ।
 तह जगतजनमनहरन प्रभुतन, नीलघरन विरागए ।
 यह जटित चारिज मध्य मानी, नीलमनिरुत्तिका^२ बनी ।
 सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१२९॥
 जगजीत मोह महान जोधा, जगतमें पटहा डियो ।
 सो सुकलघ्यान कृपानवल, जिन विकट वंरो बम कियो ॥
 ये वजत विजय निमान दु दुभि, जोत सूचं प्रभुतनी ।
 सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३०॥
 छदमस्त पदमें प्रथम दरसन, ग्यान चारित आदरे ।
 श्रव तीन तेई छत्र छलसों, करत छाया छवि-भरे ॥
 श्रति धवलरूप अनूप उन्नत, सोमविवप्रभा^३ हनी ।
 सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३१॥
 दुति देखि जाकी चाव सरमै^४, तेजसों रवि लाजए^५ ।
 भव प्रभामडलजोग जगमै, कौन उपमा छाजए ॥
 इत्यादि श्रतुल विभूतिमडित, सोहिए त्रिभुवनघनी ।
 सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३२॥
 यो असम^६ महिमासिंधु साहब, सक्र^७पार न पावही ।
 तजि हासभय तुम दास 'भूधर', भगतिवस जस गावही ॥

१ जडित २ कमल ३ कली ४ चन्द्रविव ५-६ सज्जितहो ७ उपमारहि
 न इन्द्र ।

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहूँ ।
कर जोर यह वरदान मागों मोखपद जावत' लहूँ । १३३।

चोपई ।

इह विध समोसरनमडान । कियौ कुबेर जथाविध थान ॥
आये सुर वरसावत फूल । जयजयकार करत सुखमूल । १३४।
अति प्रसन्नता सब विध भई । हरसत तीन प्रदछिना दई ॥
धूलसालिमे कियौ प्रवेश । चकितभयौ छवि देखि सुरेस । १३५।
मुदित महार्धक^२ देवन साथ । जिनसनमुख आयी सुरनाथ ।
हस्तकमल जोरे अमरेस^३ । देखे दृग भरि पासजिनेस । १३६।
मनि उतग आसन पर ईस । मानौं मेघ^४ रतनगिरि-सीस ॥
फैल रही तनकिरनकलाप^५ । कोटभानुसौं^६ अधिक प्रताप । १३७।
विकसत चित्त रोमांचित काय । प्रनम्यौ चरन सोस भुविलाय ॥
मनिभारी भरि तीरथतोय । पूजे मघवा^७ जिनपद दोय । १३८।
सुरग-सुगन्धनि भक्ति बढ़ाय । अरचे^८ इन्द्र जिनेसुरपाय ॥
मुक्ताफलमय^९ अच्छत^{१०} लिये । पु ज^{११} परमगुरु आगे दिये १३९।
पारिजात मंदार मनोग । पुहप चढ़ाये जिनवर जोग ॥
सुधापिंड चरु लेय पवित्त । पूजा करी सक्र धरि चित्त । १४०।
रतनप्रदीप रवाने खरे । श्रीपति पांय सचीपति धरे ॥
देवलोककी अगार अनूप । पासचरन खेई सुरभूप ॥ १४१ ॥

१ जबतक २ महा ऋद्धिधारी ३. इन्द्र ४. बादल ५. समूह ६. करोड़ों सूर्यो
से ७. इन्द्र ८. पूजे ९. मोती समान १०. चाबल ११. समूह ।

क्रोधमहानलमेघ प्रचड । मानमहीधरदामिनिदंड ॥
 मायाबेलघनजयदाह । लोभसलिलसोषक दिननाह^१ ॥१५१॥
 तुम गुनसागर अगम अपार । ग्यानजिहाज न पहुँचें पार ॥
 तट ही तट पर डोलत सोय । स्वारथ सिद्ध तहांही होय ॥१५२॥
 प्रभु तुम कीर्तिबेल बहु बढी । जतनबिना जगमडप चढी ॥
 और अदेव सुजस नित चहैं । ये अपने घरही जस लहै ॥१५३॥
 जगतजीव धूमैं बिनग्यान । कीनें मोहमहाविषपान ॥
 तुमसेवा विषवासन जरी । यह मुनिजन मिलि निहचें करी ।
 जन्मलता मिथ्यामतमूल । जामनमरन लगें जिहि फूल ॥
 सो कबही बिन भगतिकुठार । कटें नहीं दुखफलदातार ॥१५५॥
 कलपतरोवर चित्राबेल^२ । काम-पोरसा^३ नौनिधि मेल ॥
 चितामनि पारस पाषान । पुन्यपदारथ और महान ॥१५६॥
 ये सब एकजनमसंजोग । किंचित सुखदातारनियोग ॥
 त्रिभुवननाथ तुमारी सेव । जनमजनम सुखदायक देव ॥१५७॥
 तुम जगबाधव तुम जगतात । असरनसरन-विरद-विख्यात ॥
 तुम जगजीवनके रक्षपाल । तुम दाता तुम परमदयाल ॥१५८॥
 तुम पुनीत तुम पुरुष-पुरान^४ । तुम समदरसी तुम सबजान ।
 तुम जिन जग्यपुरुष परमेस । तुम ब्रह्मा तुम विष्णु महेस ॥१५९॥
 तुमही जगभरता जगजान । स्वामि स्वयंभू तुम अमलान ।
 तुम बिन तीनकाल तिहुलोय । नहिं नहिं सरन जीवकों कोय ॥

१ अग्नि २. सूर्य ३. मदभुत बेल ४. इच्छापूर्ण करने वाली ५. वीराणिक पुरुष

तिस कारन करुनानिधि नाथ । प्रभु सनमुख जोरे हम हाथ ।
जबलौ निकट होय निरवान । जगनिवास छूटै दुखदान ॥१६१॥
तब लौं तुम चरनाबुज-वास । हम उर होहु यही अरदास^१ ।
और न कछु बाछा भगवान । यह दयाल दीजे वरदान ॥१६॥
दोहा ।

इहिबिध इन्द्रादिक अमर, करि बहु भगति विधान ।
निज कोठे बंठे सकल, प्रभु सम्मुख सुखमान ॥१६३॥
जीति कर्मरिपु जे भये, केवललब्धि-निवास ।
ते श्रीपारसप्रभु सदा, करो विघन-घन^२ नास ॥१६४॥
इति श्रीपार्श्वपुराणभाषाया भगवत्तुजानकल्याणकवर्णन
नाम अष्टमोधिकार ।

नौवाँ अधिकार

—•—•—•—

सोरठा ।

पारसप्रभुकौ नाउँ, सार सुधारस जगतमें ।
मै याकी बलि जाउँ, अजर-अमर-पदमूल यह ॥१॥
दोहा ।
बारह सभा सुथानमधि, यो प्रभु आनन्दहेत ।
जथा कमलिनी^३खंडकौ, ससिमंडल सुख देत ॥२॥
विकसितमुख सुरनर सकल, जिनसन्मुख करजोर ।
निवसे प्यासे अमृतधुनि, ज्यौं चातक घनओर ॥३॥

१ प्रथमा २ बादल-समूह ३ कुमोदिनी ।

- चौपई ।

तब-गनराज स्वयभू नाम । चार ग्यानधारी गुनधाम ॥
 करि प्रनाम पारसप्रभुघोर । विनती करी करांजुलि जोर ॥४॥
 भो स्वामी त्रिभुवनधर येह । मिथ्यातिमिर छयौ अति जेह ।
 भूले जीव भमै तामाहिं । हितअनहित कछु सूझै नाहिं ॥५॥
 श्रीजिनधानी दीपक-लोय । ता बिन तहां उदोत' न होय ।
 तातें करुनानिधि स्वयमेव । करि उपदेश अनुग्रह^२ देव ॥६॥
 जाननजोग कहा है ईस । गहनजोग सो कह जगदीस ॥
 त्यागनजोग कहो भगवान । तुम सबदरसी पुरुष प्रमान ॥७॥
 कैसे जीव नरकमै परे । क्यो पसुजौनि पाय दुख भरे ॥
 काहेसौं उपजं सुरलोय । कौन कर्मते मानुष होय ॥८॥
 कौन पापफल जनमै अघ । बहरा कौन क्रियासम्बन्ध ॥
 किस अघ उदय होय नर पग । गू गा किस पातक-परसंग ॥९॥
 कौन पुण्यते दरव अतीव । क्यो यह होय दरिद्री जीव ॥
 पुरुष-वेद^३ किस कर्म उदोत । नारि नपु सक किस विध होत ।
 किम आचरन बडो थिति धरे । क्यो करि अल्प आयु धरि मरे ।
 भोगहीन अरु भोगसमेत । सुखी दुखी दीखै किस हेत ॥११॥
 किस कारन मूरख मतिहीन । क्यो उपजं पडित परवीन ॥
 किस करनीते होय सरोग । किस अधर्मते पुत्रवियोग ॥१२॥
 विकल सरौर पाय दुख सहै । नीच ऊंचकुल कैसे लहै ॥
 किनभावनि भवथिति विस्तरै । भवथितिभेद कहाकरि करै ॥

षयोकर होय सुरगमै इन्द्र । कंसं पद पावे अहमिद्र ॥
 चक्रीपद किस पुन्यउदोत । किमि वार्ध तीर्थकरगोत ॥१५॥
 इत्यादिक यह प्रस्न समाज । इनकी उत्तर कह जिनराज ॥
 तुम सब संसयहरन जिनेस । जैसे भवतमदलन दिनेस ॥१५॥

दोहा ।

तब श्रीमुखवानी विमल, बिन अच्छर गम्भीर ॥
 महामेघकी गरज सम, खिरी हरन जगपीर' ॥१६॥
 तालु होठ सपरस बिना, मुखविकार बिन सोय ।
 सब भाषामय मधुरतर, श्रीजिनकी धुनि होय ॥१७॥
 जथा मेघजल परिनमै, निवादिक रसरूप^२ ।
 तथा सर्वभाषामई, श्रीजिनवचन अतूप ॥१८॥

चौपई ।

छहौं दरब पंचासतिकाय । सात तत्त^३ नौ पद समुदाय ॥
 जाननजोग जगतमै येह । जिनसौं जाहि सकल सदेह ॥१९॥
 सब बिध उत्तम मोखनिवास । आवागमन मिटै जिहि वास ॥
 ताते जे सिवकारन भाव । तेई गहनजोग मन लाव ॥२०॥
 यह जगवास महादुखरूप । ताते भ्रमत दुखी चिद्रूप ॥
 जिनभावन उपजै संसार । ते सब त्यागजोग निरधार ॥२१॥
 नरकादिक जग-दुख जावत । पापकर्मबसते बहुभंत ॥
 सुरगादिक सुखसर्पात जेह । पुन्य तरोवरकी फल तेह ॥२२॥

दोहा ।

इहि बिध प्रस्नसमाजकौ, यह उत्तर सामान ।
 अब विसेस इनकौ लिखौं, जथासकति कछु जान ॥२३॥
 जीव अजीव विसेस बिन, मूल दरब ये दोय ।
 इनहीकौ फैलाव सब, तीनकाल तिहुं लोय ॥२४॥
 चेतन जीव अजीव जड़, यह सामान्यसरूप ।
 अनेकांत जिनमतविषै, कह्यौ जथारथरूप ॥२६॥
 दरब अनेक नयात्मक^१, एक एक नय साधि ।
 भयो विविध मतभेद यौं, जगमै बढी उपाधि ॥२६॥
 जन्मअध गजरूप^२ ज्यौ, नहि जानै सरवंग ।
 त्यो जगमै एकात मत, गहै एक ही अंग ॥२७॥
 ता विरोधके हरनकौं, स्यादवाद जिनवेन ।
 सब ससयमेटन विमल, सत्यारथ सुखदेन ॥२८॥
 सात भगसौं साधिये, दरबजात जामाहि ।
 सधे वस्तु निरविघन तब, सब दूषन मिट जाहि ॥२९॥

धनाक्षरी ।

अपने—चतुष्टैकी^३ अपेच्छा दवं 'अस्ति' रूप,
 परकी अपेच्छा षही 'नासति' वखानिये ।
 एकही समे सो 'अस्ति नासति' सुभाव धरे,
 ज्यो है त्यो न कहा जाय 'अवक्तव्य' मानिये ॥
 अस्ति कहै नासति अभाव 'अस्ति अवक्तव्य',

१ नयात्मक २ हाथी का स्वरूप ३. स्व चतुष्टय (द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव)

त्यों ही नास्ति कहैं 'नास्ति अवक्तव्य' जानिये ॥
 एकै वार अस्ति नास्ति कह्यौ जाय कैसे तातै,
 'अस्तिनास्तिअवक्तव्य' ऐसै परवानिये ॥ ३० ॥

दोहा ।

इहि विष ये एकातसौं, सात भंग भ्रमखेत ।
 स्यादवाद पौरुष घरे, सब भ्रमनासन हेत ॥३१॥
 स्यादसब्दकौ अर्थ जिन, कह्यौ कथचित जान ।
 नागरूप^१ नयविषहरन, यह जग मंत्र महान ॥३२॥
 ज्यों रससिद्ध कुधातु^२ जग, कंचन होय अन्नूप ।
 स्यादवाद-संजोगतै, सब नय सत्यसरूप ॥३३॥

चौपई ।

दरवदिष्टि जिय नित्सरूप । परजयन्याय अथिर चिद्रूप ॥
 नित्यानित्य कथचित होय । कह्यौ न जाय कथचित सोय ॥
 नित्य अवाचि^३ कथचित वही । अथिर अवाचि कथचित सही ॥
 नित्यानित्यअवाचक जान । कहत कथचित सब परवान ॥३५॥
 इहिविष म्यादवाट नयद्याहि । साध्यौ जीव जैनमतमाहि ॥
 और भाति विकल्प जे करे । तिनके मत हूपन विमतरै ॥३६॥
 जीव नाम उपयोगी जान । करता भुगता देहप्रमान^४ ॥
 जगतरूप मिवरूप अरूप । ऊरधगमन मुभावसरूप ॥३७॥

१ मय २ नाग ३ अवक्तव्य ४ इह वरावर ।

सोरठा ।

ये सब नौ अधिकार, जीवसिद्धिकारन कहे ।

इनको कछु विस्तार, लिखौ जिनागम देखिकं ॥३८॥

चौपई ।

चार भेद व्योहारी प्रान । निहचं एक चेतना जान ॥

जो इनसौं नित जीवित रहै । सोई जीव जैनमत कहै ॥३९॥

सोरठा । *अणुप्राण*

प्रथम ^{आयु} आवे अवधार^१, इन्द्री सांस उसांस बल ।

मूल प्रान ये चार, इनके उत्तरभेद दस ॥४०॥

दोहा ।

पांच प्रान इन्द्रीजनित, तीनभेद बलप्रान ।

एक सास उस्वास गनि, ^{आयु} आविसहित दस जान ॥४१॥

चौपई ।

संनो जीव जगतमें जेह । दसौं प्रानसौं जीवें तेह ॥

मनसौं रहित असंनो जात । ते नौप्रान धरें दिनरात ॥४२॥

कान बिना चौइन्द्री जिते । आठ प्रानके धारक तिते ॥

तेइन्द्रीके आख न भनी । तातें सात प्रानके धनी ॥४३॥

नासा^२ बिन वेइन्द्री^३ जीव । तिन सबके षट प्रान सदीव ॥

जीभ-वचनवर्जित तन तास । एकेंद्रो चउ प्राननिवास ॥४४॥

दोहा ।

इहिबिध जीव अजीव सब, तीनकाल जगथान ।

सत्तासुख अवबोध चित, मुक्तजीव के प्रान ॥४५॥

१ अवधारण करना २ नाक ३ दो इन्द्रिय ।

बोद्धे ।

दोषप्रकार उपयोग ब्रह्मान । दरसन चार घाठ विष ग्यान ॥
 चच्छु अचच्छु अवधि अवधार । केवल ये सब दरसन चार ॥४६॥
 अथ नून वनुं दिद्यग्यान-विधान । मनि-नून अविशियानअज्ञान
 मनपजय केवल निरुद्धे । इनके भेद प्रतच्छ परोड ॥४७॥
 मनिश्रुतिग्यान आदिके दोष । ये परोड जाने नव बोध ॥
 अविधि और मनपरजयग्यान । एकवेत्त परतच्छ ग्यान ॥४८॥
 केवलग्यान नकल परतच्छ । लोकालोक-विनोक्त वच्छ ॥
 जहा अनंत दरदपरजाय । एक बार नव भनके आय ॥४९॥
 दरसन चार घाठ विष ग्यान । ये व्यवहार विहन जो जान
 निहर्षरूप विदातम येह । नूद्ध ग्यान दरसन गुनगेह ॥५०॥
 कल्पित मनवभूत व्यवहार । तिन नय घटपटादि कर्तार ॥
 अनुपचरित अजयारयल्प । कर्मपिडकरना विदुल्प ॥५१॥
 जब अनुद्धनिहर्षवल धरै । तब यह रागदोषकी हरै ॥
 यही नूद्ध निहर्ष कर जीव । नूद्ध भावकारनार नहीव ॥५२॥

बोद्धे ।

प्रानी मुख दुख आप, भुगतै पुद्गलकर्मफल ।
 यह व्यवहारी छाप, निहर्ष निजनुद्धभोगता ॥५३॥

बोद्धे ।

देहमात्र व्यवहार कर, कह्यौ इह भगवान ।
 दरबित नयकी दिष्टियों. लोकप्रदेनत्तमान ॥५४॥

१. घाठ उकार २. बोद्धे इत्यत्र ३. मनसं ४ इव्य इष्टि ।

अखिल छद ।

लघुगुरु देहप्रमान, जीव यह जानिये ।

सो विथार^१-संकोच^२-सकतिसौं मानिये ॥

ज्यो भाजन^३परवान, दीपदुति विस्तरें ।

समुदघात विन राम^४, यही उपमा धरें ॥५५॥

चौपई ।

तंजस कारमानजुत भेस । बाहर निकसं जीवप्रदेस ॥

छांडें नहीं मूल तन ठाम । समुदघातविधि याकौ नाम ॥५६॥

सातभेद सब ताके कहे । गोमटसार देखि सरदहे ॥

प्रथम वेदना नाम बखान । दुतिय कषाय नाम उर आन ॥५७॥

तन-विकुर्वना^५ तीजो येह । चौथो मारनात^६ सुनि लेह ॥

पंचम तंजस संग्या जान । छट्टम आहारक अभिधान^७ ॥५८॥

केवल समुदघात सातमा । ऐसी सकति धरें आतमा ॥५९॥

दुसह वेदनाके वस जहां । जीवप्रदेस कढत हैं तहां ॥

किसी जीवकं हो परवान । पहला समुदघात यह जान ॥६०॥

जब नाहू रिपु करन विधंस । बाहर जाहि जीवके अस ॥

अतिकषायसौं हो है तेह । दूजो समुदघात है येह ॥६१॥

माना जात विक्रियाहेत । निकसं ब्रह्मप्रदेस सचेत ॥

देवनारकीके यह होय । तीजो समुदघात है सोय ॥६२॥

किसी जीवकं मरते समं । हसं अंस तन बाहर गमै ॥

१ विस्तार २ सिकुटना ३. वर्तन ४ जीव ५ विक्रिया ६ मरिणास्तिक
७ नाम ८ आत्मा ९ निकले ।

बाधो गतिके परसन^१ काज । चौथो भेद कह्यौ जिनराज । ६३।
 जो मुनिकं कछु कारन पाय । उपजै क्रोध न थाभ्यौ जाय ॥
 तंजस तनकौ औसर यही । वाम^२ कधसौं प्रगटं सही ॥ ६४ ॥
 ज्वालामई काहलाकार^३ । अर सिदूरपु ज उनहार ॥
 बारह जोजन दीरघ सोय । नौ जोजन विस्तीरन होय ॥ ६५ ॥
 दंडकपुर वत प्रलय करेय । साधुसमेत भस्म कर देय ॥
 असुभकषाय यही विख्यात । अब सुनि सुभ तंजसकी बात ॥
 दुर्भिक्षादिक दुख अविलोय^४ । दयाभाव मुनिवरकं होय ॥
 सुभआकृतिसौ निकसै ताम । दच्छिन काधेसौं अभिराम । ६७।
 पूरवकथित देह-विस्तार । रोगसोग सब दोष निवार ॥
 फिर निज थान करै पंसार । पचम समुदघात यह धार । ६८।
 करत साधु पदअर्थ-विचार । मन ससय उपजै तिह बार ॥
 तहा तपोधन^५ चिंता करै । कैसे यह विकल्प निरवरै ॥ ६९ ॥
 भरतखेत आदिक भूमाहिं । अब ह्या निकट केवली नाहिं ॥
 ताते करिये कौन उपाय । बिनभगवान भरम नहिं जाय । ७०।
 तब मुनि-मस्तकसौ गुनगेह । प्रगट होय आहारक देह ॥
 एक हाथ तिस परमित कही । श्रीजिनसासनसौं सरदही । ७१।
 फटिक वरन मनहरन अनूप । तहा जाय जह केवलसूप ॥
 दरसनकरि सदेह मिटाय । फेरि आनि निजथान समाय । ७२।
 अष्टम समुदघात यह मान । मुनिके होहि छठे गुनथान ॥
 जब सजोगि जिनकं परदेस । बाहर निकसै अलख अभेसा । ७३।

१ छूने २ वाये कधे से ३ बजाने का वाक्या ४ देखना ५ साधु ।

दड-कपाटादिक-विधि ठान । क्रमसौं ह्रींहे लोकपरवान ॥
सप्तम समुदघात यह भाय । सरधा करो भविक मनलाय।७४।
मरनातक आहारक जेह । एक दिसागत जानौ येह ॥
बाकी पाच रहे जे श्रान । ते सब दसौ दिसागत जान ॥७५॥
दुबिध रास संसारी जीव । थावर जगमरूप सदोव ॥
तहा पांच बिध थावरकाय । सू जल तेज वनस्पति वाय।७६।
चार जातके जगम जंत । चलत फिरत दीखै बहुभंत ॥
सख सीप कौडी कृमि^१ जोक । इत्यादिक बेइन्द्री-थोक।।७७।।
चंटी दीम कुंथ पुनिआदि । ये तेइन्द्री जीव अनादि ॥
माखी माछर भृंगीदेह^२ । भ्रमरप्रमुख चौइन्द्री येह ॥७८॥
देव नारकी नर विख्यात । केतक पसू पचेंद्री जात ॥
ये सब अस थावरके भेव । इनकौ विषयछेत्र सुन लेव ॥७९॥

छप्पय ।

फरस चारसै पाच, जीभ चौसठ सौ नासा^३ ।
दृग जोजन उनतीस, सतक चौवन क्रम भासा ॥
दुगुन असैनी अत, श्रवन वसु सहस धनुष सुनि ।
सैनी सपरस विषै, कह्यौ नौ जोजन श्रीमुनि ॥
नौ रसन^४ घ्राण^५ नो चच्छुप्रति, सैतालीस हजार गिन
दोसै त्रेसठि बारह स्रवनविषै-छेत्रपरवान भन ॥८६॥

१ लट २ मोरी ३ नाक ४ जीम ५ नाक ।

दोहा

अथिर अर्थपरयाय^१ जो, हानिवृद्धमय रूप ।
 तिसमै सिद्ध बखानिये, उतपति नाससरूप ॥८७॥
 ग्येय^२ त्रिबिध परनति धरै, ग्यान तदाकृत भास ।
 यो भी सिद्धपदमै सधै, थित उतपत्ति विनास ॥८८॥
 अथवा सब परनति नसे, भई सिद्धपर्याय ।
 सुद्धजीव निहचल सदा, यों तीनों ठहराय ॥८९॥

अडिल्ल ।

वरन पाच रस पांच, गंध दो लोजिए ।
 आठ फरस गुन जोर^३, बीस सब कीजिए ॥
 जीवविषे इनमाहिं, एक नाहिं पाइए ।
 यातं मूरतिहीन, चिदात्म गाइए ॥९०॥
 जगमै जीव अनादि, बध-सजोगतै ।
 छूट्यौ कबही नाहिं, कर्मफलभोगतै ॥
 असदभूत व्यवहार, पच्छ जो ठानिए ।
 तो यह मूरतिवंत^४, कथंचित मानिए ॥९१॥

दोहा ।

प्रकृतिबंध थितिबंध पुनि, अरु अनुभाग प्रवेस ॥
 चारभेद यह बधके, कहे पास परमेस ॥९२॥
 बन्धविर्वाजित आतमा, ऊरधगमन करेय ।
 एकसमयकरि सरलगति, लोकअंत निवसेय ॥९३॥

१. सूक्ष्म पर्याय २ जानने योग्य पदार्थ ३ जोड़ ४ मूर्तरूप ।

ये परमान्न पंचगुन, सात बन्धमै जान ।
 वरनादिक जे बीस हैं, ते गुन जात बखान ॥१०४॥
 आगे पुद्गल बन्धके, सुनो भेद खट^१ सोय ।
 सरधा करतै समभक्तै, ससय रहै न कोय ॥१०५॥
 चौपई ।

प्रथम भेद अतिथूल^२ बखान । दुतिय थूल^३ संग्या उर आन ॥
 तृतिय थूल^४-सूच्छम सरदहो । सूच्छम^५-थूल चतुर्थम गहो १०६
 पंचम सूच्छम^६ नाम गिनेह । छट्टम अतिसूच्छम^७ खट येह ॥
 अब इनको बरनन विरतंत । सुनो एक मनसौं मतिवत ॥१०६॥
 खंडखंड कीने जे बन्ध । फेर न मिलै आपसौं सध ॥
 माटो ईंट काठ पाखान । इत्यादिक अतिथूल बखान ॥१०८॥
 छिन्न भिन्न हो फिर मिल जाहिं । ऐसे पुद्गल जे जगमाहिं ।
 घृत अरु तेल जलादिक जान । ये सब थूल कहे भगवान ॥१०९॥
 देखत लगै दिष्टिसौं थूल । करमै^८ गहे जाहिं नहिं मूल ॥
 धूप चांदनी आदि समस्त । जान थूल ते सूच्छम वस्त ॥११०॥
 आंखनसौं दीखै नहिं जेह । चारौं इन्द्रोचर तेह ॥
 विविध सपसं सब्द रस गंध । सूच्छमथूल जान ते बंध ॥१११॥
 नाना भांति वर्गना भिड । कारमान परमान्न पिंड ॥
 काहू इन्द्रोचर नाहिं । ते सूच्छम जिनसासनमाहिं ॥११२॥
 कर्मवर्गना सो ही कहा । जो अति ही सूच्छम सरदहा ॥

१. छ^२ २ स्थूल स्थूल ३ स्थूल ४ स्थूल-सूक्ष्म ५. सूक्ष्म-स्थूल ६. सूक्ष्म
 ७. सूक्ष्म-सूक्ष्म ८ हाथ मे ।

ताते पचअथिकाय^१ है, काय काल बिन मान ॥१२३॥

सवेय्या छन्द ।

जीवरुधर्म अधर्म दरब ये, तीनों कहे लोक-परवान ।

असंख्यात परदेसी राजे, नभ अनंतपरदेसी जान ॥

सख असख अनतप्रदेसी, त्रिविधरूप पुद्गल पहिचान ॥

एकप्रदेस धरे कालानू, ताते काल कायबिन मान ॥१२४॥

दोहा ।

काल काय बिन तुम कह्यौ, एकप्रदेसी जोय ।

पुद्गल परमानू तथा, सो सकाय^२ क्यों होय ॥१२५॥

सवेया

अलख असंख्य दरब कालानू, भिन्नभिन्न जगमाहि बसाहि ।

आपसमाहि मिले नाहि कबहीं, ताते कायवंत सो नाहि ॥

रूप सचिक्कनते परमानू, ततखिन बंधरूप हो जाहि ।

यो पुद्गलकों कायकल्पना, कही जिनेसुरके मतमाहि ॥१२६॥

जितने मान एक अविभागी, परमानू रोकें आकास ।

ताकों नाव प्रदेस कहावे, देय सर्व दरवनकों बास ॥

तहां एक कालानू निवसे, धर्म अधर्म प्रदेस निवास ।

रहें अनंत प्रदेस जीवके, पुद्गल बन्ध लहें अवकास ॥१२७॥

पोमावती

धर्म अधर्म कालअरु चेतन, चारो दरब अरूपी गाये ।

ताते एक अकास-देसमै, प्रभु सबके परदेस समाये ॥

पद्धती ।

आस्रव अविरोधनहेत भाव । सो जान भावसंवर सुभाव ॥
जो दर्वित आस्रव सुद्धरूप । सो होय दरव संवरसरूप । १३६।
व्रत पंच समिति पांचों सुकर्म । वर तीन गुप्ति दस भेद धर्म ॥
बारह बिध अनुप्रेच्छाविचार । बाईस परीषहविजय सार १३७
पुनि पाच जात चारित असेस । ये सर्व भावसंवर विसेस ॥
इनसों कर्मास्रव रुकें एम । परनालीके^१ मुख डाट जेम । १३८।
दोहा ।

सुभ उपयोगी जीवके, ज्ञत आदिक आचार ।
पापास्रव अवरोधकों^२, कारन हैं निर्धार ॥ १३९॥
सुध उपयोगी साध^३ जे, तिनकें ये आचार ।
पुन्यपाप दोऊनकों, संवरहेत विचार ॥ १४०॥
चौपई ।

तपबल कर्म तथा थिति पात । जिन भावो रस^४ दे खिर जात ॥
तेई भाव भावनिर्जरा । संवरपूरव है सिक्करा ॥ १४१ ॥
बंधे कर्म छूटै जिसबार । दरब^५निर्जरा सो निर्धार ॥
इहिविध जिनसासनमै कह्यौ । समकितवत सांच सरदह्यौ ॥
जो अमेद रतनत्रय भाव । सोई भावमोख ठहराव ॥
जीव कर्मसों न्यारा होय । दरवमोच्छ्र अविनासी सोय । १४३।
ये सब सात तत्त्व बरनये । पुन्यपाप मिलि नौपद^६ भये ॥
आस्रवतत्त्वविषं ये दोय । गर्भित जान लोजिये सोय । १४४।

१ नाली २ रुकावट ३ साधु ४ फल ५ द्रव्य ६ नौ पदाय ।

गा।।

जोय जयान्यदिष्टिमी^१, मरघं तन्मन्य ।
 मो सम्पक्दरमन मही, महिमा जाम ग्रन्प ॥१४५॥
 नयप्रमान निच्छेप करि, भेदाभेद विमान ।
 जो तत्त्वनकी जाननो, मोई सम्पकन्यान ॥१४६॥
 सो सामान्य त्रिलोकिये, दरमन कहिये जोय ।
 जो विसेम कर जानिये, ग्यान कहाव मोय ॥१४७॥
 चारित करियाम्प है, मो पुनि द्रुविघ पवित्त ।
 एक सकल चारित्र है, द्रुतिय देमचारित्त ॥१४८॥

प्रा-त

जहां सकल सावद्य^२, सर्वया परिहर^३ ।
 सो पूरन चारिष, महा मुनिवर धरं ॥
 लेश^४-त्याग जह होय, देशचारित वही ।
 सो गृहस्थकी धर्म, गृही^५ पालं सही ॥१४९॥
 दोहा ।

तीर्थकर निरग्रन्थपद, धर साधो सिवपथ ।
 सोई पभु उपदेसियो, मोखपथ निरग्रन्थ ॥१५०॥
 दसविध बाहिज^६ ग्रन्थमै^७, राखै तिल^८-तुस भान ।
 तौ मुनिपद कहिये नहीं, मुनि विन नहि निवान ॥१५१॥
 जे जन परिग्रहवतकौ, मानै मुक्तिनिवास ।

१ यथाय दृष्टि से २ सवोप ३ छोड़े ४ एक देश त्याग ५ गृहस्थ ६ बाह्य
 ७ परिग्रह ८ थोडासा भी ।

टाल

श्रीगुरु सिच्छा माभली^१, (ग्यानी) सात व्यसन परित्यागौरे ॥
 ये जगमें पातक बडे, (ग्यानी) इन मारग मत लागौरे ॥१६८॥
 जूवा खेल न माडिये, (ग्यानी) जो धन घर्म गवाँवरे ॥
 सब विसननकौ बीज है, (ग्यानी) देखता दुख पावरे ॥१६९॥
 रजवीरजसै नोपजै, (ग्यानी) मो तन मान कहावरे ॥
 जीव हते विन होय ना, (ग्यानी) नाव लिया धिन आवरे ॥
 सडि उपजै कीड़ा भरी, (ग्यानी) मद दुगन्ध निवासरे^२ ॥
 छीयासौं^३ सुचिता^४ मिटै, (ग्यानी) पीया बुद्ध विनासरे ॥१६३॥
 धिक वेस्या बाजारनी, (ग्यानी) रमती नोचन सायरे ॥
 घनकारन तन पापिनी, (ग्यानी) ब्रेचै विसनी हायरे ॥१६४॥
 अतिकायर सबसौं डरै, (ग्यानी) दीन मिरग वनचारीरे ॥
 तिनपै आयुष^५ साधते, (ग्यानी) हा अतिकूर सिकारीरे ॥१६५॥
 प्रगट जगतमें देखिये, (ग्यानी) प्रानन धनतै प्यारीरे ॥
 जे पापी परधन हरै, (ग्यानी) तिनसम कौन हत्यारीरे^६ ॥१६६॥
 परतिय^७ व्यसन महा बुरो, (ग्यानी) यामें दोष बडेरोरे ॥
 इहि भव तनघनजम हरै, (ग्यानी) परभव नरकबसेरोरे ॥१६७॥
 पांडवआदि दुखो भये, (ग्यानी) एक व्यसन रति मानौरे ॥
 सातनसौं जे सठ रचे, (ग्यानी) तिनकी कौन कहानीरे ॥१६८॥

१ समझो २ म्यान ३ स्पृश मात्र से ४ पवित्रता ५ अस्त्र ६ पापी
 ७ पर-स्त्री-नेवन ८ बड ।

दोहा ।

पंच उदंबर फल कहे, मघु^१ मव^२ मास मफार ।

इनके रूपन परिहरो, पहली प्रतिमा धार ॥१६६॥

गोर्द ।

पांच अनुघत गुनघत तीन । सिद्धाघत चारों मलहीन ॥

बारहघत धारं निदोष । यह दूजी प्रतिमा घतपोष ॥१७०॥

दोहा ।

घब इन बारह घतनकी, लिपी नेन धिरतंत ।

जिनकी फल जिनमत पछी, अचुतस्यगं^३ परजंत ॥१७१॥

शान ।

जो नित मनवचनपायसीं, कृतपादिकसीं जेहो जी ॥

प्रसको ग्राम न दीजिये, प्रथम अनुघत एहो जी ॥

बारहघत-विघ वरनऊं ॥१७२॥

भूठवचन नहि बोसिये, राघ ही दोष निवासो जी ।

दूजो घन मो जानिये, हितमित वचन सभासो^४ जी ॥

बारहघत विघ वरनऊ ॥१७३॥

नूलो विमरो नूपरो^५, जो परधन बहु भायो जी ॥

बिन दीयं लोज नहीं, जनम जनम दुषदायो जी ॥

बारहघत विघ वरनऊं ॥१७४॥

व्याही वनिता^६ होय जो, तासीं कर सतोषो जी ॥

परिहरिये परकामिनी^७, यासम श्रीर न दोषो जी ।

१ माह २ जगद ३ मोनहर्वे स्वग तक ४ समापण करना ५ जमीन पर गिरा ६ स्त्री ७ पर स्त्री ।

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७५॥

धन-कन-कंचन आदि दे, परिग्रह सख्या ठानो जी ॥

तिसना' नागिनि वस करो यह व्रत मत्र महानो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७६॥

अवधि दसो दिसि खेतकी, कीजं सवर जानो जी ॥

बाहर पाव न दीजिये, जब लग घटमै प्रानो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७७॥

कर मरजादा कालकी, करिये देस-प्रमानो जी ॥

वन-पुर^२-सरिता^३ आदि दे, नित्त गमनको थानो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७८॥

जहां स्वारथ नहि सपज^४, उपज^५ पाप अपारो जी ॥

अनरथदड वही कह्यौ, त्यागौ पच प्रकारो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७९॥

सामायिक-बिधि आदरो, थल एकात विचारो जी ॥

उर धरिये सुभ भावना, आरत रौद्र निचारो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१८०॥

पोषह^६ व्रत आराधिये, चारौ-परब-^६-मभारो जी ॥

चहुबिध भोजन परिहरो, घरआरभ सब छारो जी ॥

बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१८१॥

भोजन पान तंबोल^७ तिय^८, पटभूषण बहु एमो जी ॥

१ वृष्णा २ नगर ३ नदी ४ उपजना ५ प्रोपवोपवास ६ चार पर्व
(दो अष्टमी दो चतुर्दशी) ७ पान ८ स्त्री ।

भोग तथा उपभोग है, करि हनकी जम नेमो जी ॥

बारहपत विध बरनऊं ॥१८२॥

उत्तम प्रतिपिनकों सदा, बीजं चौविध वानो जी ॥

मान बडाई त्यागकं, हिन्दे सरधा खानो जी ॥

बारहपत विध बरनऊं ॥१८३॥

प्रंत समय मनेगना, फोजं सकति संभालो जी ॥

जासो यत संजम मदे, ये फल देहि विसालो जी ॥

बारहपत विध बरनऊं ॥१८४॥

पौनर्द ।

तीनशाल सामायिक करे । पाचौं श्रतीचार परिहरै ॥

मनु मिय जानै हक नार । सो नर तीजो प्रतिमाधार ॥१८५॥

परब चतुष्टय तनि प्रारभ । पोषह व्रत मांडै मनबभे ।

सोलह पहर धरै सुभ ध्यान । सोई चौथी प्रतिमावान ॥१८६॥

त्याग हरीजात जावत । दलं फल कद बीज बहु भत ॥

प्रासुक जल पीचै तजि राग । सो सवित्तत्यागी बडभाग १८७॥

जो दिनमें मंथुन^१ परिहरै । मनबचकाय सोल दिठ धरै ॥

षष्ठमप्रतिमाधारी श्रीर । यह जघन्य श्रावक वर वीर ॥१८८॥

जो मव नारि सर्वथा तजे । नौ विध सदा सोल व्रत भजे ॥

कामकथारत कवहि न होय । सप्तमप्रतिमाधारी सोय ॥१८९॥

जिन मव तजे विनज व्योहार । निरारभ वरतें मव छार ॥

अह्निसि^२ हिंसासो भयभीत । अष्टमप्रतिमावत पुनीत ॥१९०॥

१. मन का वम म कर्के २ पते ३ पाग प्रीडा ४. रात विन ।

जो समस्त परिग्रह परित्याग । उचित वसन राखँ विनराग
 सो नौमी प्रतिमा निरग्रथ^१ । यह मध्यम श्रावककी पथ ॥१६१॥
 जो गृहस्थकारज अघमूल । तिनकी अनुमति^२ देय न भूल ॥
 भोजनसमय बुलायो जाय । सो दसमी प्रतिमा सुखदाय ॥१६२॥
 दोहा ।

अब एकादसमी मुनो, उत्तम प्रतिमा सोय ।

ताके भेद सिधातमै, छुल्लक ऐलक दोय ॥१६३॥

चौपई ।

जो गुरुनिकट जाय व्रत गहै । घर तजि मठ-मडपमै रहै ॥
 एकवसन तन पीछी साथ । कटि कोपीन^३ कमडल हाथ ॥१६४॥
 भिच्छा-भाजन राखँ पास । चारों परब करै उपवास ॥
 ले उदडभोजन^४ निर्दोष । लाभ अलाभ राग ना रोष ॥१६५॥
 उचित काल उतरावै केस । डाढो मूछ न राखँ लेस ॥
 तपविधान आगम अभ्यास । सक्तिसमान करै गुरुपास ॥१६६॥
 यह छुल्लक श्रावककी रीत । दूजो ऐलक अधिक पुनीत ॥
 जाके एक कमर कोपीन । हाथ कमडल पीछी लीन ॥१६७॥
 बिधिसौं बैठि लेहि आहार । पानिपात्र आगम अनुसार ॥
 करै केसलुं चन अति धीर । सीत घाम सब सहै सरीर ॥१६८॥
 सोरठा ।

पानिपात्र^५ आहार, करै जलाजुलि जोडि मुनि ।

खडो रहै तिहि बार, शक्ति-हीन भोजन तजै ॥१६९॥

१ परिग्रह त्याग २ अनुमोदना ३ लंगोठी ४ अनुद्विष्ट भोजन ५ हाथ में भोजन करना ।

दोहा ।

एक हाथपे घास धरि, एक हाथसौं लेय ।
 श्रावकके घर आयके, ऐलक असन^१ करेय ॥२००॥
 यह ग्यारह प्रतिमा कथन, लिख्यौ सिधात निहार ।
 और प्रश्न बाकी रहे, अब तिनकौ अधिकार ॥२०१॥
 चौपई ।

जे जगमै पापी परधान । सात व्यसनसेवक अग्र्यान ॥
 रुद्रध्यान^२ धारं अघमई । अति ही कूरकर्म निर्दई ॥२०२॥
 भूठवचन बोलै सत छोर । परधन परवनिताके चोर ॥
 बहु आरभी बहुपरिग्रही । मिथ्यामतकौ पोषे सही ॥२०३॥
 चड^३ कषायी अधिक सराग । जिनप्रतिमानिंदक निर्भाग^४ ॥
 मुनिवर निदि पाप सिर लेहि । जैनधर्मको दूषन देहि ॥२०४॥
 नीचदेवसेवारसरचे । धरं कृस्नलेस्या मद-मचे^५ ॥
 इत्यादिक करनी-रत रहैं । ऐसे नीच नरकगति लहै ॥२०५॥

छप्पय

सप्तमसौं पसु होय, देस-संयम^६ न संभालै ।
 छठे नरकसौं मनुष, होय व्रत नाहीं पालै ॥
 पचमसौं व्रत धरं, मोखगतिकों नहिं साथै ।
 चौथेसौं सिव जाय, नहीं तीरथपद^७ लाधं ॥
 सब सुभ्रवाससौं^८ आयकं, वासुदेव^९ भव नहिं धरं ॥
 प्रति^{१०}-वासुदेव बलदेव पुनि, चक्रवर्ति नहिं अवतरै ॥२०६॥

१ भोजन २ रौद्र ध्यान ३ प्रचड ४ अमागा ५ घमण्ड में चूर ६ एक
 देश समय ७ तीर्थकर पद ८. नरकवास ९. नारायण १०. प्रतिनारायण ।

चीपई ।

मायाचारी जे दुठ जीव । परपचनमै^१ निपुन अतीव ॥
 भूठ लिखे अरु चुगली खाहिं । भूठी साखि^२ भरत भय नाहिं
 सील न पाले मोहउदोत । लेस्या जिनके नील कपोत ॥
 आरतध्यानी धर्मविहीन । पसुपर्याय लहै अकुलीन ॥२०८॥
 आरतरौद्ररहित नोराग । धर्म-सुकल-ध्यानी बड़भाग ॥
 जिनसेवक पाले व्रत सील । कसे करन^३ मदमाते कीला २०९॥
 जिनप्रतिमा जिनमन्दिर ठवे । सातखेत उत्तम धन ववे^४ ॥
 सदाचार सुन त्नावक होय । जथाजोग पावे सुर लोय ॥२१०॥
 सहज सरल-परनामी जीव । भद्रभाव^५ उर धरे सदीव ॥
 मद मोह जिनके देखिये । मंदकषायप्रकृति पेखिये ॥२११॥
 अलपारंभ अलप धन चहै । उर कपोतलेस्या निर्बहै ॥
 पुण्यपाप नाहिं बरते दोय । मित्रभावसौं मानुष होय ॥२१२॥
 परके दोष सुने मन लाय । विकथा-ज्ञानी बहुत सुहाय ॥
 कुकविकाव्य सुन हरषे जोय । ते बहरे उपजे परलोय ॥२१३॥
 पढ़े सुछन्द विवेक न करे । मृषापाठ विकथा विस्तरै ॥
 परनिदा भावे बहुभाय । निजपरससा करे बढ़ाय ॥२१४॥
 मलमूत्रादिक-भोजन-काल । मौन छांडि बोले वाचाल ॥
 भूठ कहत कछु सके नाहिं । ते गूंगे जनमै जगमाहिं ॥२१५॥
 परतियमुख देखे करि नेह । निरखे सब योनादिक देह ॥

१ इषर उषर की लगाने वाले २ गवाह ३ इन्द्रिय ४ खच करे
 ५ उत्तम परिणामी ।

बधबधन याचं^xधरि राग । ते मरि आधे होहिं अभाव ॥२१६॥
 जे नर करं कुतारथ-गौन^१ । बहुत बोझ लादं बिममौन ॥
 वृथाविहारी^२ देख न चलै । होय पगु ते पातक फलें ॥२१७॥
 नीति-बमिज करि लछमी लेहि । अधिका लेहिं न ओझा^३देहि
 अलप वित्त दानादिक करे । ते नर दबधनी अवतरै ॥२१८॥
 जे घन पाय धरे अभिमान । समरथ होकर देहिं न दान ॥
 धनकारन छलछिद्र कराहि । बढत परिग्रह धापे नाहिं ॥२१९॥
 लछमीवत कृपन जन जेह । परभव होहिं दरिद्री तेह ॥
 मदकषायी सरलसुभाव । अहनिसि बरते पूजाभाव ॥२२०॥
 निजवनिता-सतोपी सदा । मदराग दीखे सर्वदा ॥
 दुराचार जिनके नाहिं होय । पुरुषवेद पावे सुरलोय ॥२२१॥
 जे अतिकामी^४ कुटिल अतीव । महा सरागी मोहित जीव ।
 परवनितारत सोकसंजुक्त । ते कामिनी-तन लहै निरुक्त ॥२२२॥
 रागअध अति जे जगमाहिं । कामभोगसौं तृपते नाहिं ॥
 वेस्यादासीरक्त कुसील । ते नर लहै नपुंसकडोल^५ ॥२२३॥
 मनवचकाय महानिर्दई । बध बंधन ठाने अधमई ॥
 परकों पीड़ा बहुविध करे । ते जिय अलप आयु धरि मरे ॥
 कृपावत कोमल परिनाम । देखि विचारि करे सब काम ॥
 जोवदयामै तत्पर सदा । परकों पीड़ा देहिं न कदा ॥२२४॥
 सबही जीवनसौं हितभाव । धरे पुरुष ते दीरघ आव ॥

^x पाठ भेद=जोवे (देखें) १ छोटे तीर्थ को गमन २ विना काम समण करने वाले ३ कम ४ कामकषायी ५ शरीर ।

जे जिनजग्यपरायन^१ नित्त । पात्रदानरत सीत्तपवित्त ॥२२६॥
 इन्द्रीजीत हिये सतोष । ते नर भोग लहैं व्रत-पोष ॥
 पूजादानविमुख मदलीन । इन्द्रीलुब्ध दयागुनहीन ॥२२७॥
 दुराचार दुरध्यानी लोग । इनकों प्रापत हौंहि न भोग ॥
 समय विचारि पढ़े जिनग्रंथ । पढ़े पढ़ावे जे सुभपंथ ॥२२८॥
 हितसौ धर्मदेसना^२ कहैं । ते परभव पडितपद लहैं ॥
 ग्यानगरब हिरदं धर लेहि । जिनसिधांतकों दूषन देहि ॥२२९॥
 इच्छाचारी पढ़े असुद्ध । ग्यानविनयवरजित जडबुद्ध ॥
 पढनेजोग पढावै नाहि । ऐसे मरि मूरख उपजाहि ॥२३०॥
 अनाचाररत आरंभवान । परकों पीड़न करे अयान ॥
 पापकर्मरत धर्म न गहै । ते परभवमै रोगी रहै ॥२३१॥
 परदुख देखि हरख उर धरै । परवनिता परधन जो हरै ॥
 नरपसुजीव बिछोहैं जोय । सो पुत्राविवियोगी होय ॥२३२॥
 नीचकर्मरत कहना^३ नाहि । हाथ पांव छेदैं छिनमाहि ॥
 जे परको उपजावै पीर^४ । ते नर पावैं विकल सरीर ॥२३३॥
 जो मिथ्यामत मदिरा पियै । पापसूत्रकी सरधा हियै ॥
 धर्मनिमित्त जीववध करे । महाकषायकलुषता धरै ॥२३४॥
 नास्तिकमती पाप-मग गहैं । ते अनतससारी रहै ।
 रतनत्रयधारी मुनिराज । आगमध्यानी धर्मजहाज ॥२३५॥
 इच्छारहित घोर तप करै । कर्म नास करि भवजल तिरै ॥

१ जिन पूजा में लीन २. धर्मोपदेश ३ दया ४. दु. दु. ख ।

उत्तम देव नमै सिरनाय । पूजै परम साधुके पाय ॥२३६॥
 साधरमी-वत्सल मुनिप्रीत । उत्तम गोत बधे इहि रीत ॥
 जे जिन जती जिनागम जान । नमै नही सठ करि अभिमान ।
 मानै नीच देव गुरु धर्म । ये सब नीच गोतके कर्म ॥
 जिनके हिये रमै^१ बैराग । धारै संजम तिसना त्याग ॥२३८॥
 अतिनिर्मल चारितभडार । ग्यानध्यानतत्पर अविकार ॥
 ख्याति लाभ पूजा नहि चहै । ते अर्हमिद-सपदा गहै ॥२३९॥
 पञ्च-करन^२ बंरी बस आन । चारित पाले अति अमलान ॥
 दुद्धर तप कर सोखे काय । चक्री होय देवपद पाय ॥२४०॥
 जे सम्यकदृष्टी गुनग्रही । सोलहकारन भावे सही ॥
 ते तीर्थकर त्रिभुवनधनी । होहि तीन-जगजूडामनी^३ ॥२४१॥
 दोहा ।

इहिबिध पूछनहारकौ, समाधान जिनराज ।
 कीनौ गनधरदेवप्रति, जगतजीवहितकाज ॥२४२॥
 बानी सुन बारह सभा, भयो सबन आनन्द ।
 जैसे सूरजके उदय, विकसै वारिजवृन्द^४ ॥२४३॥
 वचनकिरनसौं मोहतम, मिट्यौ महा दुखदाय ।
 वैरागे जगजीव बहु, काललब्धिबल पाय ॥२४४॥
 चौपई ।

केई मुक्तिजोग बड़भाग । भये दिगम्बर परिग्रह त्याग ॥
 किनही श्रावक-व्रत आवरे । पसुपर्याय अनुव्रत धरे ॥२४५॥

१. व्याप्त=धारण करे २ पच इन्द्रिय ३. श्रेष्ठ ४. कमलों का समूह ।

केई नारि अजिका भई । भतकि^१ संग बनकों गई ॥
 केई नर पसु देवी देव । सम्यकरत्न लह्यौ तहां एव ॥२४६॥
 केई सक्तिहीन संसारि । व्रत भावना करी सुखकारि ॥
 पूजादानभाव परिनये । जथाजोग सब सेवक भये ॥२४७॥

दोहा ।

कमठ जीव सुरजोतिषी, करि वचनामृतपान ।
 बस्यौ^२ वर मिथ्यात्व विष, नस्यौ चरन जुग आन ॥२४८॥
 सम्यकदरसन आदरधौ, मुक्तितरोवरमूल ।
 सकादिक मल परिहरे, गई जनमकी सूल^३ ॥२४९॥
 तहां सातसे तापसी, करत कष्ट अग्यान ।
 देखि जिनेसुरसंपदा, जग्यौ जयारथ ग्यान ॥२५०॥
 दई तीन परदच्छिना, प्रनसे पारसदेव ।
 स्वामि-चरन संयम धरचौ, निदी पूरव टेव ॥२५१॥
 घन्य जिनेसुरके वचन, महामंत्र दुखहत ॥
 मिथ्यामत-विषघर^४-डसे^५, निविष^६ होहि तुरत ॥२५१॥
 कहाँ कमठसे पातकी, पायौ दरसन सार ॥
 कहाँ पाप-तप-तापसी, धरचौ महाव्रत-भार ॥२५३॥
 जिनके वचनजहाज चढ़ि, उतरे भवजलपार ॥
 ते प्रतच्छ्र आये सरन, क्यों न होय उद्धार ॥२५४॥
 अथ श्रीगनधरदेव तह, चार ग्यान परबीन ॥

१ पति २ वसन क्रिया ३ डूल ('मूल' की पाठ है) ४ साप ५ फटे
 ६ दिव गहिन ।

जिन-समुद्रतै अर्थजल, मतिभाजन' भर लीन ॥२५५॥

नाम स्वयंभू दयानिधि, विविघरिद्विगुनखेत ।

द्वादसांग रचना करी, जगतजीवहितहेत ॥२५६॥

परमागम' अमृतजलधि, अवगाहै^१ मुनिराय ।

जन्मजरामृतदाह^२ हरि, होंय सुखी सिव पाय ॥२५७॥

चौपई ।

प्रथम एकसौ बारह कोड़ । लाख तिरानवै ऊपर जोड़ ॥

बावन सहस पांच पद सही । द्वादसागकी परमित^३ कही २५८
पढ़डी ।

इक्यावन कोड़ी आठ लाख । चौरासो सहस सिलोक भाख ॥

छत्स सौ इक्कीस जान । यह एक महापदको प्रमान ॥२५९॥

दोहा ।

इहि बिध सभासमूह सब, निवसै आनन्दरूप ।

मानों अमृत नीरसों, सिंचत देह अन्नप ॥२६०॥

चौपई ।

तब सुरेस^४ उठि बिनती करी । हाथ जोर सिर अजुलि धरी ।

भो जगनायक जगआधार । तीन भवनजनतारनहार ॥२६१॥

यह विहारअवसर भगवान । करिये देव दया उर आन ॥

भविकजीवखेती कुम्हलाय । मिथ्यातपसों सुखी जाय ॥२६२॥

भो परमेस^५ अनुग्रह करो । बानीबरसासों तप हरो ॥

मोखमहापुरके परधान^६ । तुम बिनजारे दयानिधान ॥२६३॥

१ बुद्धि रूपी पात्र २ निमग्न हुए ३ जनन ४ प्रमाण ५ इन्द्र ६ परमेश्वर
७ प्रधान ।

प्रभुमहाय भवि मुत्तपद नेहि । आयागमन ज्जातुनि देहि ॥
 उहिदिष उन्ध प्रायेना कर्णे । मरुतनाम करि मुनि विम्बने २६४
 भयो अनिच्छागमनं जिनेम । भविजीवनरे भावविनेम ॥
 नरुनमुरामुर ज्य ज्य मियो । जिनविहारघ्नन्नरुन पिरी २६५
 गमनममय घोरि दिघ भई । मनोमरुनरचना निर गई ॥
 घने मग नुर चतुरनिकाय^१ । चडादिघ मकन चने मुरराय २६६
 मुरदुन्दभि वाजे सुयकार । जिनमगल गावं मुन्नार ॥
 हाय धुजाजुत देवदुमार । चने जाहि नमर्मे उदि मार २६७
 चहृदिमि चार चारनी कोम । होय मुभिच्छ^२ नदा निदोम ।
 नमविहार जिनवरकं होय । जीवधान तहां करं न कोय २६८
 मत्र उपमगंरहित भगवत । निरआहार आयुपण्जंत ॥
 चतुरानन^३ देवं ममार । मत्रविद्यापनि परमउदार ॥ २६९ ॥
 प्रभुके तनकी परं न छाहि । पलक^४ पलकनी लागं नाहि ॥
 नख अरु केम बटं नहि जाम । ये दम केवल-अतिमय भास २७०
 भाषा नकल अर्थमागधी । विरं सकल-ममयहर सघी ॥
 नरपमु जातिविरोधी जीव । सत्र उर मंत्रो धरं मदीव ॥ २७१ ॥
 नानाजाति विरछ दुख दले । मत्र रितुके फल फूननि फलं ।
 प्रभुमचारभूमि मनिमई । दपंनचत आगम वरनई ॥ २७२ ॥
 मुरभि^५ पवन पीछं अनुमरं । वायुकुमारजनित सुख करं ॥
 मुरनरपमू मभागत जेह । परमानदमहित नव तेह ॥ २७३ ॥

१ इच्छा-हित २ चार प्रका के ३ मुनिज्ञ (मुन्नार) ४ चार दुख
 ५ टिमकार रहित घात्रे ६ मृगन्वित ।

मारुतसुर^१ जोजनमित मही । करै धूलितृनवर्जित सही ॥
 मेघकुमार^२ करै मन लाय । गंधोदकबरसा सुखदाय ॥२७४॥
 धरनकमल जिन धारै जहां । कचन कमल रचै सुर तहां ॥
 सातकमलतं आगे ठान । पीछे सात एक मधि जान ॥२७५॥
 यों पंकजकी पंद्रह पांति । सवा दोइ सै सब इहिभांति ॥
 सुकलग्यान उपजे बहुभाय । निर्मलदिसि निर्मल नभ थाय २७६
 मुदित बुलावै देवसमाज । भविजनकों जिन-पूजनकाज ॥
 धर्मचक्र आगे संचरै । सूरजमंडलकी छबि हरै ॥२७७॥
 मगलदर्व आठ भलकाहि । जथाजोग सुर लीये जाहि ॥
 ये चौदह देवनकृत जान । वरअतिसयमंडितभगवान ॥२७८॥
 करै विहार परमसुख होत । भविजोवनके भाग उदोत ॥
 स्वर्गमोखमारग प्रभु सार । प्रगट कियौ अमतिमर निवार २७९
 कहीं कुलिगो^३ दीखै नाहि । भानु उदय ज्यों चोर पलाहि ॥
 सब निज निज वाछा अनुसार । पूरनआस भये तनधार २८०
 कासी कौसलपुर पचाल । मरहठ^४ मारुदेस^५ विसाल ॥
 मगध अवंती मालवठाम । अगबग इत्यादिक नाम ॥२८१॥
 कीनौ आरजखड विहार । मेटी जगमिथ्याअंधियार ॥
 अब सब गणकी गणना सुनो । जथापुरानकथित बिध सुनो ।
 प्रथम स्वयम्भूप्रमुख प्रधान । दस गनधर सर्वागमजान ॥
 पूरवधारी परमउदास । सर्व तीन सै अरु पंचास ॥२८३॥

१ बायु कुमार के देव २. मेघकुमार देव ३ छोटे भेषी ४ मराठो का देश ५ मारवाड ।

सिष्य मुनीसुर कहे पुरान । दमहजार नी सँ परवान ॥
 श्रवधिवत चौदह सँ मार । केवलजानी एकहजार ॥२८४॥
 विविध विक्रियारिद्विवलिष्ट । एकसहस्र जानो उत्कृष्ट ॥
 मनपरजयग्यानी गुनवत । मातसतक पचाम महत ॥२८५॥
 छसँ वादविजयो^१ मुनिराज । सब मुनि मोलहमहन ममाज ।
 सहस्र छत्रीस श्रजिका गनी । एकलाख स्रावक व्रतधनी ॥२८६॥
 तीनलाख स्रावकनी^२ जान । वरनी सदया मूल पुरान ॥
 देवीदेव असख्य अपार । पसुगन मरुघाते निरधार ॥२८७॥
 इहबिध वारह सभासमेत । रतनत्रयमारगविध देत ॥
 विहरमान^३ दरसावत वाट^४ । सत्तर वरस भये कछु घाट२८८
 सम्मेदाचल सिलर जिनेस । आये श्रीगारसपरमेस ॥
 एक मास जिन जोग निरोध । मनवचकाय क्रिया सब रोष२८९
 सूच्छम कायजोगथिति ठान । त्रितियमुकलसजुत तिहि ठान ।
 तजि सयोगिथानक स्वयमेव । आये फिर अयोगिपद देवा ॥२९०॥
 पच-लघुच्छर^५ है थिति जहा । चतुरथ^६ मुकलध्यानबल तथा
 दोयचरम^७ सनये जिन भनी । प्रकृति बहत्तर तेरह हनी ॥२९१॥
 इहिविध कर्म जीत भगवान । एक समय पहुँचे निर्वान ॥
 औ छत्तीस मुनीसुर साथ । लोकसिखर निवसे जिननाथ ॥२९२॥
 सावन सुदि सातें सुभ वार । विमल विसाखा नखतमभार ।
 तजि ससार मोखमै गये । परमसिद्ध परमात्म भये ॥२९३॥

१ वाद विवाद मे जीतने वाले २ श्राविकार्ये ३ विहार करते हुए ४
 रास्ता ५ अ इ, उ ऋ, लृ ६ चतुर्थ ७ दो अन्तिम समय ।

पूरव चरम देहतें लेस । भये हीन आतम परदेस ॥
 अष्टगुनातममय व्यवहार । निहचै गुन अनंतभंडार ॥२६४॥
 सादि अनंतदसा परिनये । सिद्धभाव वसुगुनजुत थये ॥
 परमसुखालय^३ वासो लियो । आवागमन जलांजलि दियो^{२६५}
 दोहा ।

पच कल्याणक पाय सुख, जगतजीव उद्धार ।
 भये पूज्य परमातमा, जय जय पासकुमार ॥२६६॥
 जिनके सुखको ग्यानको, नहिं उपमा जगमाहि ।
 जोतिरूप सुखपिंड थिर, इन्त्रीगोचर नाहि ॥२६७॥
 अब तिनको आकार कछु, एकदेस अवधार ।
 लिखौं एक दृष्टात करि, जिनसासन अनुसार ॥२६८॥
 चोपई ।

मोममई^३ इक पुतला^४ ठान । नखसिख समचतुरस्रसंठान ॥
 सब तन सुन्दर पुरुषाकार । नराकार इसही विष सार ॥२६९॥
 माटीसों ईमि लेपहु^५ सोय । जैसे त्वचा^६ देहपर होय ॥
 कहीं अग खाली नहि रहै । सब उपचारकल्पना^७ यहै ॥३००॥
 पुनि सो लीजै अग्नि तपाय । सांचा रहै भोम गल जाय ॥
 अब ता भीतर करो विचार । कहा रह्यौ बुध ताहि निहार ३०१
 अतर सूस^८ योल है जहाँ । पुरुषाकार रह्यौ नभ^९ तथा ॥
 याही अंबरके उनहार^{१०} । ब्रह्मस्वरूप जान निरधार ॥३०२॥

१ अन्तिम २ परम सुख का स्थान ३ मोम का ४ शरीर ५ लपेटना
 ६ चमड़ा ७ व्यवहार कल्पना ८ मिट्टी का खोल ९ आकाश १० समान ।

यह आकाम मून्य जडरूप । वह पूरन चेतन चिद्रूप ॥
 यही फेर है या वा नाहि । आकृतिमें कष्ट अतर नाहि ॥३०३॥
 या विष परब्रह्मकी रूप । निराकार माकाग्ररूप ॥
 यह दृष्टात हिये निज धरो । भवि जिय अनुभवगोचर करो ।
 दोहा ।

वने निद्र निवसेतमें, ज्यो दर्पनमें छाहि ।

ग्यान-नैननों प्रगट हैं, चम-नैननों नाहि ॥३०५॥

चांपई ।

तव इन्द्रादिक सुरममुदाय । मोख गये जाने जिनराय ॥
 श्रोनिर्वानकल्याणक काज । आये निज निज वाहन साज ।
 परमपवित्त जानि जिनदेह । मनि-मिविकापर^२ थापी तेह ॥
 करी महापूजा तिहि वार । लिये अगर चन्दन घनसार^३ ॥३०७॥
 और मुगन्धदरव सुचि लाय । नमे सुरासुर सीस नमाय ॥
 अगनिकुमार इन्द्रतें ताम । मुकटानल^४ प्रगटी अभिरामा ॥३०८॥
 ततखिन भस्म भई जिनकाय । परम सुगंध दस्तों दिसि थाय ।
 सो तन भस्म सुरासुर लई । कठ हिये कर मस्तक ठई ॥३०९॥
 भक्ति भरे सुर चतुरनिकाय । इहविष महा पुन्य उपजाय ॥
 कर आनन्द निरत^५ बहुभेव । निज निज थान गये सब देव ॥
 दोहा ।

पंचकल्याणकपूज्य प्रभु, सिवसिरिकंत^६ जिनेस ॥

सब जग सुख संपति करो, श्रीपारसपरमेस ॥३११॥

१ शिवालय २ पालकी ३. कपूर ४ मुकुटों की अग्नि ५ नृत्य ६ मुक्तिरूपी
 श्री (लक्ष्मी) के पति ।

पद्मटी ।

पहले भव वामन कुलपवित्त । मरुभूत उपन्नो^१ सरलचित्त ॥
 दूजे वनहस्ती वज्रघोष । जिन पाले वारहस्रत श्रदोष ॥३१२
 तीजे भव द्वादस स्वर्गवास । सहस्रार नाम तव सुखनिवास ॥
 चौथे भव विद्याधरकुमार । लघु वंस लियो चारित्रभार ॥३१३
 पचम भव श्रच्युत सुरगथान । वार्द्धस जलधि जहं थिति प्रमान
 छट्टे भवमे चक्रीनरेस । जिन साधे सहस वतीस देस ॥३१४
 सातवें जनम अर्हमिद्र होय । सुख कीर्ने चिर उपमा न कोय ॥
 आठम भव श्रीश्रानदराय । तजि राजरिद्धि बन वसे जाय ३१५
 सोलहकारन भाये मुनिद्र । पुनि भये वारमे स्वर्ग इन्द्र ॥
 इहि विध उत्तम नौ जनम पाय । वामाजननी उर वसे श्राय ॥
 गरभ जनम तप ग्यान काल । निर्वानपूज्य कोरतिविसाल ॥
 सुर नर मुनि जाकी करे सेव । सो जयी पास देवाधिदेव ॥३१७

दोहा

नाम लेत पातक^२ भजे, सुमरत सकट जाहि ।
 तेईमम अवतार मुक्त, वसो सदा हियमाहि ॥३१८॥

छप्पय ।

कमठ जीव तन छोरि, दुतिथ कुरकट श्रहि^३ जायो ॥
 नरक पचमे जाय, श्राय अजगर तन पायो ॥
 धूमप्रभामे उपजि, भील श्रति भयो भयानक ।
 चरम^४ नरक पुनि सिध, फेर पचमभू-थानक ॥

१ पैदा हुषा २ पाप ३ माप ४ सप्तम नरक ।

पमुनीनि भुंति नहिपाल नृप, वेद जोतिषी अक्षरधौ ।
इहि विष अनेक भवकुल भरे, वैरभाव-विषतर् ऊर्जा ॥
वेद ।

दिनाभाव फल पासनि, जन्त वैर फल जान ।
दोनों विद्या विलोचकै, जो हित सो उर आन ॥३२०॥
वेद ।

नीच जाति जावत, सबसौ सैजीभाव करि ।
जार्जो गृह सिद्धंत, वैरविरोध न कीजियेऊ । ३२१॥
वेद ।

जो भगवान बलान करी बुनि, सो गुरु गौतमने उर आनि ।
जानर आइ उई रचना कहु हाइस अंग सुधारस जानी ॥
जा अनुपार अचारसंघ मुषीकलसौ बहू नाव्य बलानी ।
जो लिनग्रंथ जयारथ है अजयारथ है सब और कहानी ॥
वेद ।

जितने सैनसिद्धांत जग, ते सब सत्यसखन ।
धर्मभावना हेत सब, हिनमित सिद्धाख्य ॥३२३॥
जलपित क्या मुहावनी, सुनते जौन अरस्थ ।
लाह दाम किस कानके, लेखन लिहे अजस्थ ॥३२४॥

सोरठा ।

सुन श्रीपार्सपुरान, जान सुभासुभ कर्मफल ।
सुहित हेत उर आन, जगत जीव उद्यम करो ॥ ३२५ ॥

दोहा ।

प्रभुचरित्र मिस^१ किमपि यह, कीनौ प्रभु-गुनगान ।
श्रीपारस परमेसको, पूरन भयौ पुरान ॥ ३२६ ॥
पूरव चरित विलोकिकै, भूधर बुद्धिप्रमान ।
भाषाबंध प्रबंध^२ यह, कियौ आगरे थान ॥ ३२७ ॥

छप्पय ।

अमरकोष नहि पढ्यौ, मै न कहि पिंगल^३ पेख्यौ ।
काव्य कंठ नहि करी, सारसुत^४ सो नहि सीख्यौ ॥
अच्छर-संधि-समास-ग्यानवर्जित बुधि हीनी ।
धर्मभावना हेत, किमपि भाषा यह कीनी ॥
जो अर्थ छंद अनमिल कहीं, सो बुध फेर सवारियौ^५ ॥
सामान्यबुद्धि कविकी निरखि, छिमाभाव उर धारियौ ।

दोहा ।

जिनसासन अनुसार सब, कथन कियौ अवसान^६ ॥
निज कपोलकल्पित^७ कहीं, मति समभो मतिवान ३२६
छयउपसमकी^८ ओछसौं,^९ कै प्रमादवस कोय ॥
इहिबिध भूल्यौ पाठ मै, फेर सवांरो सोय ॥ ३३० ॥

१ बहाना २ प्रबन्ध काव्य ३ छंद शास्त्र ४ सारस्वतव्याकरण ५
सुधार लेना ६ अन्त ७ मिथ्या कल्पना ८ क्षयोपशम ९ लाघव ।

पच व्रम कछु सरससे, लागे करतन वेर ॥
 बुधि थोरी थिरता अलप, तार्त लगी अवेर' ॥३३१॥
 सुलभ^१ काज गरुवो^२ गनै, अलपबुद्धिकी^३ रीत^४ ॥
 यौं कीडी कन ले चलै, किधौं चली गठ जीत ॥३३२॥
 विघनहरन निरभयकरन, अरुन वरन अभिराम ॥
 पामचरन सकटहरन, नमो नमो गुनधाम ॥३३३॥

उत्तर ।

नमो देव अरहत, सकुन तत्त्ववारथभाषी ॥
 नमो सिद्ध भगवान, ग्यानमूर्ति अविनाशा ॥
 नमो माघ निरग्रथ, बुद्धि परिग्रहपरित्यागी ॥
 जयाजान जिननिग धारि, वन वसे विरागी ॥
 वदी तिनैमभाषित धरम, देय मउं गुण मस्पदा ॥
 ये मार नार तिहुंनोरुम, करो छेम मगल मदा ॥३३४॥
 नउत मनरु सं समथ, श्रीर नउामी लीथ ।
 मुनि अयाट निधि पनमो, प्रथ ममापन कीय ॥३३५॥



